१५५३

श्री

वैराग्योपदेशक विविध पद संग्रह.

पंडित श्री यशोविजय, विनयविजय
तथा ज्ञानसारजी विरचित.

तेने

यथामति संशोधन करीने

श्री [illegible] जापुरी मध्यें

जगदीश्वर [illegible] छापी प्रगट कर्यो छे.

संवत् १९३८ सने १८८१.

२५९३

अथ

॥श्रीब्रह्मविलास प्रारंभः॥

॥पद पेहलुं॥

॥राग धन्याश्री॥ चेतन ज्ञानकी दृष्टि निहा
लो चेतन०॥टेक॥ मोह दृष्टि है जैसो आंधेरो, हो
त महा मतवालो॥ चेतन०॥१॥ मोह दृष्टि अति
चपल करत है, भव वन वानर चालो॥ योग वियो
ग दावानल लागत, पावत नांहि वियालो॥ चेत
न०॥२॥ मोह दृष्टि कायर नर डरपे, करे अकारन टा
लो॥ रन मेदान लरे नहीं अरिसुं, सूर लरे ज्युं पालो
॥ चेतन०॥३॥ मोह दृष्टि जन जनके परवश, दीन
अनाथ दुखालो॥ मागे भीख फिरे घर घरसुं, कहे
मुझकुं कोई पालो॥ चेतन०॥४॥ मोह दृष्टि मद
मदिरा माती, ताको होत उछालो॥ पर अवगु

नराचैसो अहनिस, काग असुचि ज्यौं कालो॥
चेतन०॥५॥ ज्ञान दृष्टि मां दोषन एते, करे ज्ञा
न अजुआलो॥ चिदानंद घन सुजस वचनरस,
सज्जन हृदय पखालो॥ चेतन०॥६॥ इति॥

॥पद बीजुं॥

॥राग सारंग॥ कंत बिनु कहो कौन गति ना
री॥टेक॥ सुमति सखी जई वेगी मनावो, कहे चे
तन सुन प्यारी॥ कंत०॥१॥ धन कन कंचन मह
ल मालिये, पिउ बिन सबहि उजारी॥ नि
द्रा जोग लहुं सुख नांही, पियु वियोग तनु ज्वा
री॥ कंत०॥२॥ तोरे प्रीत पराई सुरिजन, अछते
दोष पुकारी॥ घर जंजन कउ कहन न दीजे, दीजे
दान बिचारी॥ कंत०॥३॥ विभ्रम मोह महा मद
विजुरी, माया रैन अंधारी॥ गर्जित अरति
लवे रति दादुर, काम की भई असवारी॥ कंत०

॥४॥ पिउ मिलवेकुं मुज मन तलफे, मे पिउ पि
ज मत गारी॥ लुरकी देई गये पिउ मुजकुं, नल
हे पीर पीयारी॥कंत०॥ संदेश सुनी आये पि
उ उतम, लई अद्भुत मनुहारी॥ चिदानंद घन
सुजस विनोदें, रमे रंग अनुसारी॥कंत०॥५॥

॥पद त्रीजुं॥

॥राग धन्याश्री॥ परम गुरु जैन कहो क्यों होवे,
गुरु उपदेश विना जन मूढा, दर्शन जैन विगोवे
॥परमगुरु जैन कहो क्यों होवे॥टेक॥१॥ कहत कृ
पानिधि समजल झीले, कर्म मयल जे धोवे॥ब
हुल पाप मल अंग न धारे, शुद्ध रूप निज जोवे॥
परम०॥२॥ स्याद्वाद पूरन जे जाने, नयगर्भि
त जस वाचा॥ गुन पर्याय द्रव्य जे बूझे, सोई
जैन हे साचा॥परम०॥३॥ क्रिया मूढ मति जे
अज्ञानी, चालत चाल अपूठी॥ जैन दशा उन

मेंही नाही, कहेसो सब ही झूठी॥ परम०॥४॥ पर परनति अपनी कर माने, किरिया गर्वै घेहेलो॥ उनकुं बैन कहो क्युं कहिये, सो मूरख में पहिलो॥परम०॥५॥ ज्ञान भाव ज्ञान सब मांही, शिवसाधन सर्दहिये॥ नाम भेषसें काम न सीझे, भाव उदासे रहिये॥परम०॥६॥ ज्ञान सकल नय साधन साधो, क्रिया ज्ञान की दासी॥ क्रिया करत धरतु है ममता, याहि गलेमें फांसी॥परम०॥७॥ क्रिया बिना ज्ञान नहि कबहुं, क्रिया ज्ञान बिनु नांही॥ क्रिया ज्ञान दोउ मिलत रहतु है, ज्यों जलरस जल मांही॥परम०॥८॥ क्रिया मगनता बाहिर दीसत, ज्ञान शक्ति जस भांजे॥ सदगुरु शीख सुने नहीं कबहुं, सो जन जनतें लाजे॥परम०॥९॥ तत्व बुद्धि जिनकी परनति है, स

कुलसूरकी कूंची ॥ जग जस वाद वदे उनहींको,
जैनदशा जस ऊंची ॥ परम० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग कल्याण ॥ परम प्रभु सब जन शब्दें
ध्यावे ॥ जब लग अंतर भरम न भांजे, तब ल
ग कोउ न पावे ॥ परम प्रभु० ॥ १ ॥ सकल
अंस देखे जग जोगी, जो बिनु समता आवे ॥
ममता अंध न देखे याको, चित्त चिहुं ओरे ध्या
वे ॥ परम प्रभु० ॥ २ ॥ सहज शक्ति अरु भ
क्ति सुगुरुकी, जो चित्त जोग जगावे ॥ गुन प
र्याय द्रव्य सुं अपने, तो लय कोउ लगावे ॥ प
रम प्रभु० ॥ ३ ॥ पढत पूरान वेद अरु गीता, मू
रख अर्थ न भावे ॥ इत उत फिरत ग्रहत रस ना
ही, ज्यौं पशु चर्वित चावे ॥ परम प्रभु० ॥ ४ ॥
पुद्गलसें न्यारो प्रभु मेरो, पुद्गल आप छिपा

वो॥ ऊनसें अंतर नहीं हमारे, अब कहां भागो
जावो॥ परमप्रभु०॥ ५॥ अकल अलख अज
अमर निरंजन, सो प्रभु सहज सुहावो॥ अंतरजा
मी पूरन प्रगट्यो, सेवक जस गुन गावो॥ परमप्र
भु०॥ ६॥ इति॥

॥ पद पांचमुं॥

॥ राग ऊपर प्रमाणे॥ चेतन जो तुं ज्ञान अ
भ्यासी॥ आपहि बांधे आपहि छोडे, निज म
ति शक्ति विकासी॥ चेतन०॥ टेक॥ जो तु आ
प स्वभावें खेले, आसा छोरी उदासी॥ सुरनर
किन्नर नायक संपति, तो तुज घरकी दासी॥ चे
तन०॥ १॥ मोह चोर जन गुन धन लूसे, देत आ
स गल फांसी॥ आसा छोर उदास रहे जो, सो
उत्तम संन्यासी॥ चेतन०॥ २॥ जोग लई पर
आस धरत है, याही जगमें हांसी॥ तु जाने मे

गुनकुं संयुं,गुनतो भवे नासीा। चेतनना॥४॥
पुद्गलकीतुं आसधरत हे, सोतो सजहि जिन
सीा।तुतो भिन्न रूप हे उनतें,चिदानंद अ
विनासीाचेतनना॥५॥धनजरचे नर जहु
तगुभाने,करवत लेवे कासी॥ तो भी दुःखको
अंतन आवे,भे आसा नहिं दासी॥चेत
नना॥६॥सुखजस विषम विषय मृग तृष्णा,
होत मूढ मति प्यासीा।विभ्रम भूमि भई
पर आसी,तुंतो सहज विलासी॥चेत
नना॥७॥याके पिता मोह दुःखभ्राता,हो
तविषय रति मासी॥भव सुत भरता अ
विरति प्रानी,मिथ्या मतिहे हासी॥चेतन०
॥८॥आसा छोर रहे भे भेगी, सो होवे सि
ववासी॥उनको सुजस जखाने ज्ञाता,अं
तर दृष्टि प्रकासी॥चेतन०॥१०॥ इति॥

॥पदछंद॥

॥राग कनडो॥ अब जगति चिदानंद घनकी॥टेक॥ आतम अनंत शक्तिसुं होवे, ऊजर पुलटनिनकी॥ अब ज०॥१॥ लेही परनति समदित पायो, कर्मबंध घनकी॥ ऐसी सबल कठिनता दीसे, कोमलता मनकी॥ अब ज०॥२॥ भारी भूमि भयंकर चूरी, मोहरायरनकी॥ सुहुब अखंड चंडता याकी, छमा विमल गुनकी॥ अब ज०॥३॥ पापबेली सब ज्ञान दहनसे, भसी भवबनकी॥ शीतलता प्रगटी घट अंतर, उत्तम लछनकी॥ अब ज०॥४॥ ठकुराई बगबनते अधिकी, चरन करन घनकी॥ रिद्धि वृद्धि प्रगटे निज नामे, ख्याति अकिंचनकी॥ अब ज०॥५॥ अनुभव जिनु गति कोऊ न भने, अलख निरंजनकी॥ ब्रह्म गुन गावत

प्रीती निबाहो, उनके समरन कीं ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ ज्ञान जाग रह्यो परभावमें, टेक ॥

सहज स्वभाव लखे नहिं अपनो, परियो मोह जंजाल
में ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ बांछे मोक्ष करे नहिं करनी, डोलत म
मता वाणीमें ॥ यह अंध ज्युं जललिवि तरवो, जेहो कां
ए नाणीमें ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ अरति पिशाची परवश रहते
जिनहु न समस्यो आणीमें ॥ आप अयाय सकल नहिं
सूरज, घोरविषयके घाणीमें ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ पूर्व पुण्य
धन सब नहिं ग्रसतहे, रहत न मूल जदाणीमें ॥ तामें
तुम कैसे बनी आवे, नयव्यवहारके दाणीमें ॥ ज्ञा०
॥ ४ ॥ जस कहे अब मेरो मन लीनो, श्री जिन
वरके पाणीमें ॥ याहि कल्यान सिद्धिको कारन, ज्युं
वेधकरस आणीमें ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥राग जिंजोटी॥ मेरे साहिब तुम हि हो, श्री पास जिणंद॥ खिजमतगार गरीब हुं, मैं तेरा बंदा॥ मेरे०॥१॥ मैं चकोर करुं चाकरी, जब तुम हि चंद॥ चक्रवाक मैं हुइ रह्यो, जब तुमहि दिणंद॥ मेरे०॥२॥ मधुकर परे मैं रन झनुं, जब तुम अरविंद॥ भक्ति करो खग पति परे, जब तुम हि गोविंद॥ मेरे०॥३॥ तुम जब गाजत घन भये, तब मैं शिखि नंद॥ तुम सायर जब मैं तदा, सुरसरिता अमंद॥ मेरे०॥४॥ दूर करो दादा पास जी भव दुःख फंद॥ वाचक जश कहे दास कुं, दियो परमानंद॥ मेरे०॥५॥ इति॥

॥पद नवमुं॥

॥राग सामेरी॥ मेरे प्रभु सुं प्रगट्यो पूरन राग॥टेक॥ जिन गुन चंद किरन सुं उमग्यो, सहज समुद्र अथाग॥ मेरे०॥१॥ ध्याता ध्येय भये दोउ एकु,

मिथ्यो नेहको भागा कुल बिहारी छते जब सरि
ता, तब नहिं रहत तडागा॥ मेरे०॥२॥ पूरन मन
सब पूरन दीसे, नहिं दुबिधाको लागा॥ पाउं चल
त पनहीं जे पहिरे, नहिं तस कंटक लागा॥ मेरे०॥
३॥ भयो प्रेम लोकोत्तर झूठो, लोकबंधको तागा॥
कहो कोउ कछु हमतो न रूचे, छुरि एक वीतरागा॥
मेरे०॥४॥ वासत है जिन गुन मुझ दिलकुं, जैसो
सुरतरु बागा॥ ओर वासना लगे न तातें, जस कहे
तुं बड भागा॥ मेरे०॥५॥ इति॥

॥पद दशमुं॥

॥राग गोडसारंग तथा पूर्वी॥ पसारी कर लीजे,
इक्षुरस भगवान॥ चढत सिखा श्रेयंस कुमरकी,
मानुं निरमल ध्यान॥ पसारी०॥ धारे ढुरा मे पुरुषो
त्तम करकी गंगा, तुं तो चरन निदान॥ इत गंगा
अंबर तर जनकुं, मानुं चली असमान॥ पसारीव

॥२॥ किधो विधु बिंब सुधासूं चाहत, आप मधुर
ता भान॥ किधो दायक की पुण्य परंपर, दाजत सुर
गण विमान॥ पसारी॥०॥३॥ मधुकर ए सुरस हेजी कु
रत है, जैसी उपमा भना॥ ज्ञा कहे चित चित पा
त्र मिलावें, युं भवि कुं जिन भास॥ पसारी॥४॥ इति

॥पद अगीयारमुं॥

॥राग अडाणो॥ शीतल जिन मोहि प्यारा॥
टेक॥ भुवन विरोचन पंकज लोचन, जिउके जिउ
हमारा॥ शीतल०॥१॥ ज्योति शुं ज्योत मिलत
जब ध्यावें, होवत नहि तब न्यारा॥ बांधी मूठी
खुले भव माया, मिटे महाभ्रम भारा॥ शीतल०॥
२॥ तुम न्यारे तब सबहि न्यारा, अंतर कुटुंब उदा
रा॥ तुमहीं नजिक नजिक है सबहीं, ऋद्धि अनंत
अपारा॥ शीतल०॥३॥ विषय लगन की अगनि बू
झवत, तुम गुन अनुभव धारा॥ भई मगनता

तुमगुनरसकी, कुन करन कुनधारा॥ शीतल०॥२॥शीतलता गुनहोर करत तुम, चंदन काहु बि चारा॥ नामेही तुम ताप हरतहे, वाकुं घसत घसारा॥ शीतल०॥३॥ करहु कष्ट जन जहुत हमारे, नाम तिहारो आधारा॥ जस कहे जनम मरण भय भागो, तुम नामे भवपारा॥ शीतल०॥४॥ इति॥

॥पद ग्यारमुं॥

॥राग वेलावल॥ प्रभु तेरो वचन सुन्यो जब हीथें सुविहान॥ टेक॥ तबहीथें तत्व दाज्यो, साज्यो रस ध्यान॥१॥ लागना सीके लगी, मानुं कीधो सु धापान॥ प्रभु तेरो०॥२॥ श्रुत चिंता ज्ञान होतो, खीरनीर ज्यान॥ विषय तृष्णा बुझावे, सोहि सा चो ज्ञान॥ प्रभु तेरो०॥३॥ गायन करत ताते, ना हे घरे आन॥ तेसेंहिं करत मोहि, संत गुन ध्यान॥ प्रभु तेरो०॥४॥ प्रानतें अधिक सांई, ऐसे कहुं

प्रानाप्रानथी अभिन्न दाख्यो, प्रत्यक्ष प्रमाना
प्रभुतेरो गाश भिन्नने अभिन्न कछु, स्याद्वा
देवानाम कहे तुहे तुहे, तुहे भिनलानाप्रना

॥पद तेरमुं॥

॥राग परजा॥ चेतन राह चले उलटेरा॥ टे॥ श्रान
प शिवलो अंघन मां जेहे, कुगुरु वचन गुलटेरा
चेतनराश विषय विपाक भोग सुख कारन,
छिनमें तुम पल टारा॥ चा॥ छोर सुधारस रू
मता, भवजल विषय घटेरा॥ चेतनराश भयो
दधि स्थिर रहे तुम जैसे, आवन नाहिं नटेरा॥
हां तिमिंगल घोर रहतु हे, चार कषाय करेरा॥ चेत
नराउ॥ वरविलासवनिता नयनकेपडे पासपल
टेरा॥ अज परवश भागे किहा भजोगे, आले
मोह भरेरा॥ चेतनराश मन मेले भे किरिया
कीनी, ठगे लोक कपटेरा॥ ठीनकु फूलजिनु भेग

मिटेंगो, तुमकुं नांहि रटेरा चेतन०॥५॥ सीख
सुनी अब रहो सुगुरुके, चरण कमल निकटेरा॥
चुकरते तुम सुजस लहोगे, तत्व ज्ञान प्रगटेरा॥
चेतन०॥६॥ इति॥

॥पद चौदमुं॥

॥राग नायकी कानडो॥ चेतन ममता छांडप
रीरी दूर परीरी॥ चेतन०॥ टेक॥ पर रमनीसुं
प्रेम न कीने, आदरी समता आप वरीरी॥
चेतन०॥१॥ ममता मोह चंडालकी बेटी, स
मता संयम नृप कुमरीरी॥ ममता मुख दुर्गं
ध असत्यें, समता सत्य सुगंध भरीरी॥ चे
तन०॥२॥ ममतासें लरते दिन जावे, समता
नहिं कोउसाथ लरीरी, ममता हेतु बहुत है दुश्म
न, समताके कोउ नाहिं अरीरी॥ चेतन०॥३॥
ममताकी दुर्मति है आली, डाकिनी जगत अनर्थ

डरीरी॥ समता की शुद्ध मति है आली, पर उपगार गुणे समरीरी॥ चेतन०॥३॥ ममता पुत्त भये दुख जंपन, सोक बियोग महा मत्सरीरी॥ समता सुत होवेंगे केवल, रहे दिव्य निशान घुरीरी॥ चेतन०॥ ४॥ समता मग्न रहे भये चेतन, ज्ञान घारे शी बजरीरी॥ सुज्ञान विलास लहेगो तोतुं, चिदानंद घन पद विचरीरी॥ चेतन०॥५॥ इति॥

॥ पद पन्नरमुं ॥

॥ राग नायकी कानडो॥ याग ति कौन हे सजी तोरी कोन हे सखी तोरी॥ टेर॥ इत उत युंही फिरत हे घहेली, कंत गयो चित चोरी॥ यागति०॥१॥ चितवत हे बिरहानल जुअवत, सिंचनयन जल जोरी॥ जनत हे डोहांहे बडवानल, जाण जल्यो चिहुं ओरी॥ यागति०॥२॥ चल गिरनार पिया दिखलावुं, नेह निवाहन घोरी॥ ह दिमि

लि सुगति सो हो तबें जेजे, प्रभुमे ज्ञसया भेरी॥
चागति॥३॥इति॥

॥पद१६शोलमुं॥

॥राग सारंग॥ हम मगन भये प्रभु ध्यानमें,
टेक॥ बिसर गई दुविधा तन मनकी, अचिरा सुत
गुन ज्ञानमें॥ हम०॥१॥ हरिहर ब्रह्म पुरंदरकी ऋद्धि
आवत नांहि कोउ मानमें॥ चिदानंदकी मोज म
चीहे, समतारसके पानमें॥ हम०॥२॥ इतने
दिनतुं नांहि पिछान्यो मेरो, जन्म गमायो अ
जानमें॥ अब तो अधिकारी होई बेठे, प्रभु
गुन अखय खजानमें॥ हम०॥३॥ गई दीनता
सबही हमारी, प्रभु तुझ समकित दानमें॥ प्र
भुगुन अनुभवके रस आगें, आवत नहि कोउ
ध्यानमें॥ हम०॥४॥ जिनहि पाया तिनहि छि
पाया, न कहे कोउके कानमें॥ ताली लागी जब

अनुभवकी, तज और कोटी शानमें॥ कृ०॥४॥ प्रभुगुन अनुभव यह रस्य ज्यों, सोतो न रहे म्यानमें॥ बूधर कहे मोह महा अरि, जीत लीयो है मैदान में॥ कृ०॥५॥ इति॥

॥ पद सत्तरमुं॥

॥राग काफी॥ देखत ही चित्त चोर लीयो है, देखतही चित्त चोर लीयो॥ सामको नाम ईये मोहि अह निस, साम जिना कहा काम भयो॥ देखतही॰॥ पाटेका॥ सिध्धवधूके लीजे मुज छोरी, पशु जनके सिर दोष दीयो॥ परकी पीर अने तासों, वैर वसायो जे नेह कीयो॥ देखतही॰॥२॥ प्रान घडीमें प्रान पियाजिन, वज्र हृथे मो हि कठिन हियो॥ जसप्रभु नेमि मिले दुःख डारयो, राजुल शिव सुख अमृत पियो॥ देखतही॰॥३॥ इति॥

॥पद अढारमुं॥

॥राग कल्याण॥ सुनो प्रभु मेरे, अंतरीक प्रभु मेरे॥ सु०॥टेक॥ जगत वछछल हित दाई, सु०॥ मोह चोर जब जोर किरावत, तब सम रयो प्रभु मेरे॥सु०॥१॥ ओर सुघाई चार दिवस के साथ सजा प्रभु जेहें॥ इतनो आप विवेक विचारो, माया में मत लेरे॥सु०॥२॥ लाभ एडे तो भूजन लागे, जिनुं लोजन गजे पेटा॥ भगवंत भक्ति बिना सवि निष्फल, जस कहे भक्ति में लेरे॥सु०॥३॥ इति॥

॥पद ओगणीसमुं॥

॥राग धन्याश्री॥ जिन चरन सरन ग्रहुं॥टेक॥ हृदय कमल में ध्यान धरतु हुं, सिर तुज आण वहुं॥जि०॥१॥ तुज सम खोल्यो देव खलक में, पैख्यें नांहि कहुं॥ तेरे गुन की जपुं जप माला, अ

हनिसि पाप हरुं ॥ जिन०॥२॥ मेरे मनकी तु
म सब जानो, क्या मुज अकुत कहुं, केहे जस बि
नय करो तुम साहिब॥ ज्युं जग दुःख न सहुं॥
जिन०॥३॥ इति॥

॥पद वीशमुं॥

॥राग जयजयवंती॥ अजब बनी है जो
री, अर्धंग धरी है गोरी॥ शंकर शंकहि छोरी,
गंग सिर धरी है॥ अ०॥१॥ प्रेमके पीवत प्याले, होत
महा मतवाले, न चलत तिहूं पाले, असवा
री जरी है॥ अ०॥२॥ ज्ञानीको ऐसो उ
त्साह, समताके गले बांह, सिरपर जगनाह,
आण सुर सरी है॥ अ०॥३॥ लोकके प्रवाह नां
हि, सुजस विलास मांहि, चिदानंद घन छां
हि, रति अनुसरी है॥ अ०॥४॥ इति॥

॥पद अेकवीशमुं॥

॥राग ऊपर प्रमाणे॥ धर्मके विलास वास, ज्ञानके महा प्रकास, दास भगवंतके ऊदास भा
वसगे हैं॥ समता नदीतरंग, अंगही ऊपंग यं
ग, मज्जन प्रसंग रंग, अंग भग मगे हैं॥ धर्मे०॥
१॥ कर्मके संग्राम घोर, लरे महा मोह चोर, भे
रता को तोरवेकुं, सावधान भगे हैं॥ शीलको घ
री सनाह, धनुष महा ऊत्साह, ज्ञान बान के प्र
वाह, सब वेरी भगे हैं॥ धर्मे०॥२॥ आयो है प्रथ
मसेन, कामको गयो है रेन, हरि हर ब्रह्म भेणे,
अेकसेन ठगे हैं, क्रोध मान माया लोभ, सुभट
महा अछोभ, हारे सोय छोड थोभ, मुख दई भ
गे हैं॥ धर्मे०॥३॥ नो कषाय भये षीन, पापको
प्रताप हीन, और भट भये दीन, ताके पग
गे हैं॥ कोऊ नहीं रहे ठाढे, कर्म भेमिले तेगा
ढे, चरनके निहा काढे, करवास नगे हैं॥ धर्मे०॥

ज्ञान जगत्रय भयो प्रताप, तपत अधिक ताप, ता
तें नाहिं रही पाप, जरी तग तगे हैं॥ सुजस निसा
नसाज, विजय वधार्थ साज, ऐसे मुनिराज, ताकुं
हम पाय लगे हैं॥ धर्म०॥५॥ इति॥

॥ पद छवीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ ऋषभ देव हितकारी, जग
तगुरु ऋषभ देव हितकारी॥ टेक॥ प्रथम तीर्थंकर
प्रथम नरेसर, प्रथम यति व्रत धारी॥ ऋषभ
देव०॥१॥ वरसी दान देई तुम जगमें, ईलति ई
ति निवारी॥ तैसी काही करतुं नांही करुनासा
हिब बेर हमारी॥ ऋषभ०॥२॥ मांगत नहिं हम
हाथी घोरे, धन कन कंचन नारी॥ दियो मोहि च
रन कमलकी सेवा, याहि लगत मोहि प्यारी॥ ऋष
भ०॥३॥ भवलीला वासित सुर डारे, तुंपर सज
हिवियारी॥ मैं मेरो मन निश्चल कीनो, तुम आ

ण॥ सिर धारी॥ ऋषभ०॥ ४॥ ऐसो साहिब
नहिं कोऊ जगमें, यासुं होय दिल धारी॥ दि
लहि दिलास प्रेमके जिये, तिहां हठ जैये गमारी
॥ ऋषभ०॥ ५॥ तुम साहिब मेंकुं बंदा, या
मत देउ विसारी॥ श्री जय जिनन्दय विबुध से
वकके, तुम हो परम उपकारी॥ ऋषभ०॥ ६॥

॥ पद त्रेवीशमुं॥

॥ राग वेलावल॥ गौतम गणधर नमि
यें हो अहनिसि, गौतम गणधर नमियें हो॥
टेक॥ नाम जपत नवही निधि पईये, मनवं
छित सुख लहिये हो॥ अह०॥ १॥ घर अंगन
जे सुरतरु फलियो, कहा कुं जन भमियें॥
सरस सुरभि घृत जे हुवे घरमें, तो क्यों ते
ले नमियें हो॥ अह०॥ २॥ तैसी श्री गौतम
गुरु सेवा, और ठोर क्युं रमियें॥ गौतम ना

में जय जस तरिये, कहा अकृत तनु दमिये॥ज
ह०॥३॥गुन अनंत गौतमके समरन, मिथ्या
मति विष गमिये॥ जस कहे गौतम गुनरस आ
गें, ईंधतन हें हम अमियें॥अह०॥४॥इति॥

॥पद चोवीशमुं॥

॥रागनट॥ सुजदाई रे सुजदाई, दादोपास
जसुजदाई॥ ऐसो साहिब नहिं कोउ जग
में, सेवा कीजें दील लाई॥ सुज०॥१॥ सब
सुखदाई अहनि नायक, जेहि सायक सुरछा
ई॥ सिदिकरंकुं करे शंकर सरिसो, आपे अपनी
ठकुराई॥सुज०॥२॥ मंगलरंग वधे प्रभु ध्या
नें, पाप बेली जे कराई॥ सीतलता प्रग
टे घट अंतर, मिटे मोहकी गरमाई॥सुज०
॥३॥ कहा कई सुरतरु चिंतामनिकुं, जो में प्रभु
सेवा पाई॥ श्रीनयविजय कहे दरिशन देज्यो,

घर अंगन नवनिधि आवेगा सुजना॥४॥इति

॥पदपचीसमुं॥

॥राग देशाष॥ अजमें सांयो साहिब पायो, टेक॥ याकी सेव करतहुं याकुं, मुझ मन प्रेम सुहायो॥ अजना॥१॥ ठाकुर और न होवे अपनो, जे दीले घर आयो॥ संपति अपनी खिनहुंमें देवे, वेतो दिलमे ध्यायो॥ अजना॥२॥ ओरनकी सेवन करत चाकरी, दूरदेश पाय घासे॥ अंतर यामी ध्याने दीशे, वेतो अपने पासें॥ अजना॥३॥ और कुल कुं कोउ कारन कोप्यो, बहुत उपायन तूसे॥ चिदानंदमें मगन रहतु हे, वेतो कबहुं न रूसे॥ अजना॥४॥ ओरनकी चिंता चिंतीन मिटे, सब दिन धंधे लवे॥ थिरता गुन पूरन सुख खेले, वेतो अपने भावे॥ अजना॥५॥ पर पराधीन है लो।

ग भोरको, भ्रमतें होत वियोगी॥सदा सिद्ध स
मतार्ई विलासी, येतो निज गुन भोगी॥ भ
जन॥ज्यौं भनोत्यौं दुरगति न भनो, मेतो
सेवक तिनको॥पक्ष पातसों परसु होवे, राग
धरत कुगुनको॥भजन॥ आव भैया सज
ज्ञानीको, मूरख लेहन मावे॥ अपनो साहि
ब जे पहियाने, सो ब्रह्मलीला पावे॥ भजन२८

॥पद छवीशमुं॥

॥राग रूप कल्याण॥ सयनकी नयनकी
चयनकी छवी नीकी॥मयनकी गौरी तकी लगी सोहि
जवियां॥ मनकी लगन भर अंगनीय न्या
गे भली, डुलन परस कछु कहा कहुं बतीयां॥
सयनकी॥ श्री मोहन मनाकी मानी, कहाज
नी रति छानी, शिवा देवी के नंदन मानें
बिनतियां॥ गुन गहो बस जहो धर रहो सुम

सहो,कुःजगमोमुझसमोरंगरमोरतियां॥ सयनदीवारा॥२॥ति॥

॥पदसत्तावीशमुं॥

॥रागकाफीकुशेनी॥ साहिब ध्यायाम न मोहना, अतिसोहना जविजोहना॥ साहिब॥ टेक॥ आजतेंदिन सफल भेरे, मानुं चिंतामनी पाया॥ साहिब॥१॥ यो स्त्र छंद्रि मिलिय पूज्यो, छंद्रानी गुन गाया॥ साहिब॥२॥ जनम महोछव करे देव, मेरु शिखर ले आया॥ हरिको मनसंदेह जा नी, चरनन मेरु चलाया॥ साहिब॥३॥ अहि वैताल रूप देवी, देवें न वीर बोला या॥ अगर जये पाय लागी, वीर ना म जुलाया॥ साहिब॥४॥ छंद्र पूछे वीर कहे, व्याकरनपाया॥ मो हिथी निशा

जधरन, युंहि वीर पठायाा साहिजणाप।
वरसीदान देईधीर, लेईव्रत सुहायाा सा
लतले ध्यान ध्याता, घाती घन जपायाा
साहिज०।३।।लहि अनंत ज्ञान आप, रू
पजग मगायाा जस कहे हम सोईवीर,
ज्योति सुं ज्योति मिलायाा साहिजणा४

।।पद अठ्ठावीशमुं।।

।।राग केदारो दरबारी।। आवे हाथी हलसा
जगाजते, नेमज घर आवे, ओ देशीा प्रभुज
लदेखी सुरराज, लाजतो ईम जो लाा देखो
जाल भांग्यो भ्रम सेरो, झोनहि जगतुमतोले
।।प्रभु०।।१।।टेक।। चरन अगुठे चंपित सुरगि
रि, मानुं नाचत डोलो ईन मिसि प्रभु मोहि
ऊपर तूठे, हरख हियाओ बोले ।।प्रभु०।।
२।।उरत शेष धरहरत महि दधि, जयजयं गु

रभूगोले॥हिरिसि कुंअर हिमूढ भजे तज, सजहिं भिजत जे कुशेले॥प्रभु०॥३॥ लीला जास अजाल पराक्रम, तीन भुवन थंथोले॥ जस प्रभु वीर महेर अजकीलें, जहुरि हुन परिहु भोले॥प्रभु०॥४॥इति

॥पद ओगणत्रीशमुं॥

॥राग ऊपर प्रमाणे॥ प्रभु धरी पीठ वेताल जाल, सात ताल लों बाधे॥ काल रूप विकराल भयंकर, लगत अंजर आधे॥प्रभु०॥१॥टेक॥ जास कहे को वीर ले गयो, परिभन देव आराधे॥ तिस त्रिभाग चित्त वीर न डोल्यो, जस अनंत कुन जाधे॥प्रभु०॥२॥ वढतरेह नांहि सुर भिषण, भनु मोहि विराधे॥ कुलिश कठिन दृढ मुष्टि मार्यो, संकु चित्त तनु मन छाधे॥प्रभु०॥३॥ सुर कहे परतज मोहि नयो है, पानी रस विण जाधे॥ भस कहे ईंद्र प्रसंस्यो तैसो, तुंही वीर शिव साधे॥ प्रभु०॥४॥इति॥

॥पद छत्रीशमुं॥

॥राग श्रीराग॥ अब मोहि ऐसी आय ब
नी ॥टेक॥ श्री संखेस्वर पास जिनेसर, मेरे तुं
एक धनी॥ अब०॥ १॥ तुं बिनु कोउ चित्त न सुहा
वे, आवे कोडि गुनी॥ मेरो मन तुज उपर रसिओ,
अलि जिम कमल भनी॥ अब०॥ २॥ तुज नामे स
वि संकट चूरे, नागराज धरनी॥ नाम जपौं निसि
वासर तेरो, या सुभ मुज करनी॥ अब०॥ ३॥ को
पानल उपजयत दुर्जन, मथन वचन अरनी॥ ना
म जपुं जलधार तिहां तुज, धाइं दुःख हरनी॥ अब०
॥ ४॥ मिथ्यामति बहु जन है जगमां॥ पद न धरे ध
रनी, उनतें हम तुज भक्ति प्रभावे, भय नहि ए
क कनी॥ अब०॥ ५॥ सज्जन नयन सुधारस अंज
न, दुरजन रवि भरनी॥ तुज मूरत निरखे सो पा
वे, सुख जस लील घनी॥ अब०॥ ६॥ इति॥

॥पद ओकत्रीशमुं॥

॥राग मल्हार॥ विमलाचल नित वंदिये, कीजे
ओहनी सेवा॥ मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल ले
वा॥ विमलाचल॥१॥ उज्जवल जिन गृह मं
डली, तिहां दीपे उत्तंगा॥ मानुं हिमगिरि विभ्रमे,
आई अंबर गंगा॥ विमलाचल॥२॥ कोई अने
रुं जग नहीं, तीरथ एतोलें॥ एम श्रीमुख आग
लें, श्री सीमंधर बोलें॥ विमलाचल॥३॥ जे स
घलां तीरथ करे, यात्रा फल लहियें॥ तेहथी ए गि
रि भेटतां, शत गुणुं फल लहियें॥ विमलाचल॥
४॥ जन्म सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे॥
सुजस विजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे॥ वि
मलाचल॥५॥ इति॥

॥पद बत्रीशमुं॥

॥राग देवगंधार॥ देखो माई अजब रूप जि

जलको॥२॥आठका उनके आगें और सजनको,
रूपलगे मोहि फीको॥२॥ओ॥३॥जो घन कहता
अमृत कपोले, मुख सोहे अति नीको॥कपि
जस विनय कहे यों साहिब, नेमजि त्रिभुव
नटीको॥२॥ओ॥४॥इति॥

॥पद तेत्रीशमुं॥

॥राग गुर्जरी पूर्वी॥आली रूप शाला ग
से माला सोहे मोतनकी, करे नृत्य थाला गोरी
टोरी मिलि लोरी सी॥देवरकु रहि घेरी, सेना
मानु काम केरी, गुन गाती आवे तेरी, करे चित
चोरि सी॥विवाह मनावे आली, पहिरी दर्प
णझाली, याकुं निहाले आली, छोडी लाल होरी
सी॥तोली नेमि स्वामि, गजगामी जस का
मी, जस धामी, रहे यहि मौन ध्यान धारा च
ढ धोरी सी॥४॥इति॥

॥पद चोत्रीशमुं॥

॥राग धन्याश्री॥ जब लग आवे नहि मन
ठाम॥टेक॥ तब लग कष्ट क्रिया सवि निष्फल, ज्यों
गगने चित्राम॥ जब०॥१॥ करनी बिनतुं
करे मोटाई, ब्रह्मव्रति तुझ नाम॥ आखर फ़
ल न लहेगो ज्यौं जग, व्यापारी बिनु दाम॥
जब०॥२॥ मुंड मुडावत सबहि गडरिया, ह
रिण रोझ बन धाम॥ जटाधार वट भस्म लगा
वत, रासभ सहतुहे घाम॥ जब०॥३॥ ए
ते पर नहीं योगकी रचना, जो नहि मन विश्राम
॥ चित अंतर पट छलवेकुं चिंतवत, कहा जपत मु
ख राम॥ जब०॥४॥ बचन काय गोपे दृढ न
धरे, चित्त तुरंग लगाम॥ तामे तुं न लहे शिव सा
धन, जिउ कण सुने गाम॥ जब०॥५॥ प
ढो ज्ञान धरो संजम किरिया, न फिरावो मन

॥ ५ ॥ चिदानंद घन सुजस विलासी, प्रगटे आ-
तमरामा ॥ जग० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद पात्रीशमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ चतुर नर सामायक नय धा-
रो ॥ टेक ॥ लोक प्रवाह छांडकर अपनी, परिण-
ति शुद्ध विचारो ॥ चतुर नर० ॥ १ ॥ द्रव्यत अक्षय
अभंग आतमा, सामायक निज जातें ॥ शुद्ध
रूप समता मय कहीयें, संग्रह नयकी वातें ॥
चतुर नर० ॥ २ ॥ अब व्यवहार कहे युं सज्जन,
सामायक हुइ जावे ॥ ताते आचरना सो माने
ऐसा नैगम गावे ॥ चतुर नर० ॥ ३ ॥ आचर-
ना रिजु सूत्र सिथलकी, बिनु उपयोग न मा-
ने ॥ आचारी उपयोगी आतम, सो सामाय-
क जाने ॥ चतुर नर० ॥ ४ ॥ शब्द कहे संजत ले
ऐसो, सो सामायक कहिये ॥ चोथे गुणठाने

आचरना, उपयोगें लिजलहियें॥ चतुरन रु०॥ ५॥ अप्रमत्तठाणें ईर्याकी, समलि रूढ नय साजी॥ केवल ज्ञान दशा थिति उनकी, एवंभूते भाजी॥ चतुरनरु०॥ ६॥ सामाय क नय जे कुन जने, सोक कहे सो माने॥ ज्ञान वंतकी संगति नाहीं, रहियो प्रथम गुनठा ने॥ चतुरु०॥ ७॥ सामायक नर अंतर द्ष्टे, जे दिनदिन अत्यासें॥ जश कहे सवाहत लहे सो जैहो, ज्ञानवंतके पासें॥ चतुरनरु०॥ ८॥

॥ पद छत्रीशमुं॥

॥ राग बिहागडो॥ सजलया छाड मोह मदिराकी॥ टेक॥ मिथ्या मतिके जेरे गुरुकी, वयन शक्ति जिहां पाकी॥ सजलना॥ १॥ नि टदशा छोड जड उंची, दृष्टि देतहे ताकी॥ न करे किरिया जनकु लाजे, नाहि भवथिति पाकी

॥सबलणा॥२॥ ज्यों जन गत ज्यों जनको छांडी,
हसत्तर बिउं होरे॥ गहत ज्ञानकुं किरियात्या-
गी, होत औरकी औरे॥ सबलणा॥३॥ ज्ञा-
न बात जिसुनी सिर धूने, लागे जिन मति
मीठी॥ जे कोउ बोल कहे किरियाको, तो भा-
ने नृप चीठी॥ सबलणा॥४॥ ज्युं कोउ ताई ज-
लमें पेसी, हाथ पाउ न हलावे॥ ज्ञानसेती
किरिया सब त्यागी, युं अपनो मत गावे॥
सबलणा॥५॥ जैसे पाग कोउ सिर बांधे, पहि-
रन नहिं लंगोटी॥ सद्गुरु पास क्रिया बिनु
सीखे आगम बात त्युं खोटी॥ सबलणा॥६॥
जैसे गज अपने सिर ऊपर, छार आपही डा-
रे॥ ज्ञान ग्रहत क्रिया तुच्छ छारत, अल्प बु-
द्धि इम हारे॥ सबलणा॥७॥ ज्ञान क्रिया दोउ
शुद्ध धरेंगे, शुद्ध कहे निरधारी॥ जस प्रताप

गुननिधि की भगति, तीनकी मैं बलिहारी॥
सवस॰॥८॥इति॥

॥पदसडबीशामुं॥

॥राग काफी जंगलो॥ चेतन अब मोहि
दर्शन दीजे॥टेक॥ तुम दर्शन शिव सुख पा
मीजे, तुम दर्शन भव छीजे॥ चेतन॰॥१॥
तुम कारन तप संयम किरिया, कहो कहांलों
कीजे॥ तुम दर्शन बिनु सब या झूठी, अंतर
चित्त न भीजे॥ चेतन॰॥२॥ क्रिया मूढमति
कहे जन केई, ज्ञान और कुं प्यारो॥ मिलत
भावरस दोउन चाखे, तुं दोनुते न्यारो॥
चेतन॰॥३॥ सबमें हे और सबमें नांही,
पूरन रूप अकेलो॥ आप स्वभावे वे किम
रमतो, तुं गुरु अरु तुं चेलो॥ चेतन॰॥४॥
अकल अलख प्रभु तुं सब रूपी, तुं अपनी

गति जनो॥ अगम रूप आगम अनुसारे, सेवक सुजस जपानो चेतन॥५॥ इति॥

॥ पद अडत्रीश मुं॥

॥ राग भीमपलासी॥ राम चिरीया चेहरी हो॥ जेहेशी॥ मन कितहुं न लागे हेजेरा मन०॥ टेक॥ पूरन आस भई अली मेरी, अविनासी की सेजेरा मन०॥१॥ अंग अंग सुलि पिउ गुन हरजे, लागो रंग करेजेरा॥ जैसो छिटा यजो नवि छूटे, करहु जेर जेरे जेरा मन०॥२॥ योग अनालंजन नाहिं निष्फल, तीर लगो ज्युं चेजेरा॥ जसतो नेह तिमिर मोहि भागो, पूरन ब्रह्म की सेजेरा॥ सुजस ब्रह्म के तेजेरा मन०॥३॥ इति॥

॥ पद ओगण चालीश मुं॥

॥राग सोरठी॥ चिदानंद अविनासी हो, मे
रो चिदानंद अविनासी हो॥टेक॥ कोर मरोर कर
मकी मेटे, सहज स्वभाव विलासी हो॥ चिदानंद०
॥१॥ पुद्गल खेल मेलन्ने जगको, सो तो सबहि वि
नासी हो॥ पूरन गुन अध्यातम प्रगटे, भगे भे
ग उदासी हो॥ चिदानंद०॥२॥ नाम भेख किरिया
कुं सबही, देखे लोक तमासी हो॥ चिन मूरत चेतन
गुन चीन्हे, सांचो सोही सन्यासी हो॥ चिदानंद०
॥३॥ दोरी देयारकी किति दोरे, मति व्यवहार प्र
कासी हो॥ अगम अगोचर निश्चय नयकी, दो
री अनंत अगासी हो॥ चिदानंद०॥४॥ नाना घ
टमें एक पिछाने, आतम राम उपासी हो॥ भे
दकल्पना में जड भूल्यो, लुब्ध्या तृषणा दासी हो॥
चिदानंद०॥५॥ धर्म सिद्धि नवनिधि
है घरमें, कहा ढूंढत अब कासी हो॥ जस कहे शां

त सुधारस चाख्यो, पूरनब्रह्म जान्यो सोही होत विहाल ॥

॥ पद चालीशमुं ॥

॥ राग होरी ॥ हरी नारी टोले मिलि रंग
हो होरी ॥ टेक ॥ १ ॥ गगर में तब लाल रंग हो होरी
देवरकुं घेर रही ॥ रंग हो ॥ ० ॥ व्याह मनावत कुल
लाला ॥ रंग ॥ ० ॥ १ ॥ ताल कंसाल मृदंग सुं ॥ रं
ग ॥ ० ॥ मधुर बजावत चंग लाला ॥ रंग ॥ ० ॥ गाय
ब गुलाल नयन भरे ॥ रंग ॥ ० ॥ अर्छन बनावे
अनंग लाला ॥ रंग ॥ ० ॥ २ ॥ पिय डारी छोरे पी
या ॥ रंग ॥ ० ॥ भरी भरी केसर नीर लाला ॥ रंग ॥
॥ भाजुं महल करती छटा ॥ रंग ॥ ० ॥ अलबेली गाये अ
बीर लाला ॥ रंग ॥ ० ॥ ३ ॥ योवन मद मदिरा छा
की ॥ रंग ॥ ० ॥ गावत प्रेम धमाली लाला ॥ रं
ग ॥ ० ॥ राचत माचत नाचती ॥ रंग ॥ ० ॥ कौ
तुक सुंदर आली लाला ॥ रंग ॥ ० ॥ ४ ॥ सोहे मुख तं

जोलसुं॥रंगणा॥भानु संध्या युत चंदलाला॥रंगणा॥
पूरित केसर कुंजेलसुं॥रंगणा॥ अरुन मेरु ज्युं कुंदला
ला॥रंगणा॥पा॥ थण जुंज मूल देवावती॥रंगणा॥जा
द लगावत कंठ लाला॥रंगणा॥ कहे देव परनो पीया॥
रंगणा॥परना॥जिन पुरेष ढीलं ढलाला॥रंगणा॥३॥ कू
जमिलित रहे वेली सुं॥रंगणा॥ सागर गंगा रंगला
ला॥रंगणा॥ जन दगाने जजनवे॥रंगणा॥ किंडिनक
रो त्रिया संगलाला॥रंगणा॥४॥ युं विलास हरी
नारी का॥रंगणा॥ देषी घेर मनु मोन लाला॥रंगणा॥ स्वी
शिशु सह हठन तजे॥ रंगणा॥ करे चयन श्रम केनला
ला॥रंगणा॥ टाजन के जने कहा जयो॥रंगणा॥ मन को ज
न्यो भ्रम भान लाला॥रंगणा॥ चतुर न चूके नेमजी॥रंगणा॥
पाजे सुजस कल्यान लाला॥रंगणा॥५॥ इति॥

॥पद अेकतालीशमुं॥

॥जय जय जय जय पास जिणंद॥

देखा अंतरीक प्रभु भुवनतारन, भविक
कमल उल्लास दिणंद ॥ज्य०॥१॥ तेरे चरन
शरन में कीने, तुजिनु कुन तोरे भवफंद ॥ परमपु
रुष परमारथ दरशी, तुं दिये भविकुं परमानं
द ॥ज्य०॥२॥ तुं नायक तुं शिव सुख दायक,
तुं हित चिंतक तुं सुखकंद ॥ तुं जनरंजन तुं भव
भंजन, तुं केवल कमला गोविंद ॥ज्य०॥३॥ को
डि देव मिलिके कर न सके, एक अंगुठ रूप प्रति
छंद ॥ ऐसो अद्भुत रूप तिहारो, बरषत मानुं
अमृतको बुंद ॥ज्य०॥४॥ मेरे मन मधुकर के
मोहन, तुमहो विमल सदल अरविंद ॥ नय
न चकोर विलास करतु हे, देखत तुम मुख पूरन
चंद ॥ज्य०॥५॥ दूर भये प्रभु तुम दरसनते, दु:
ख दोहग दालिद्र अघ दंद ॥ वाचक जस कहे स
हस मुखतें तुमहों, जे बोले तुम गुनके बृंद ॥ज्य०॥

॥पद बेतालीशमुं॥

॥राग धन्याश्री॥वामानंदन जगदानंदन, सेवकजन आसा विसराम॥ नेक निजर करी मोहिपर निरखो, तुमहो करुना रसके धाम॥वामा०॥१॥ टेक॥ छतनी भूमि प्रभु तुमही आन्यो, परिपरि जहुत जमाई माम॥ अब दुष्यार गुन गान जगावत, लागत हे क्या तुमकु दाम॥वामा०॥२॥ अहनिसि ध्यान धरुं हुं तेरो, मुजथी न विसारुं तुमनाम॥ श्री नय विजय विबुध सेवक कहे, तुमहो मेरे आतमराम॥वामा०॥३॥

॥पद तेतालीशमुं॥

॥राग काफी॥ अजित देव मुज वालहा, ज्युं मोरा मेहा॥ टेक॥ ज्युं मधुकर मन मालती, पंथी मन गेहा॥अजित०॥१॥ मेरे मन तुंहि रुच्यो, प्रभु कंचन देहा॥ हरी हर ब्रह्म पुरंदरा, तुज आगें

केहा॥ अजित०॥२॥ तुंही अगोचर को नहीं, सज्जन गुन रेहा॥ चरहता कुं चहियें, धरी धर्म सनेहा॥ अजित०॥३॥ भक्ति वछल जगता रनो, तुं जिनेंद्र वरेहा॥ वीतराग हुऐ वा सहा॥ क्युं कर्म री हो छेहा॥ अजित०॥४॥ जो जिनवर है भरत में, ऐरावत विदेहा॥ जस कहै तुज पद प्रणमतें, सब प्रणमे तेहा॥ अजित०॥५॥

॥ पद चुमालीसमुं॥

॥ राग गोडी॥ संभव जिन जब नयन मिल्यो हो॥ टेक॥ प्रगटे पूरव पुन्य के अंकुर, तब तें दिन मोहि सफल वल्यो हो॥ संभव०॥१॥ अंगन में अमिये मेह वूठे, जन्म ताप को व्याप गल्यो हो॥ संभव०॥२॥ जैसी भक्ति तैसी प्रभु करुना, श्वेत संख में दुध मिल्यो हो॥ संभव०॥३॥ डरत फिरत हे दुर ही दीसतें, मोह मल्ल जि

ए जगचय छल्यो हो॥ समकित रतन से कुहरि
सणतें, अजन नहीं कुगति रल्यो हो॥ सं॰
व॰॥ ३॥ तेह नर नर निरख्यतही मुझ, मनु
सुं हियडो हे जहल्यो हो॥ श्री नयविजय विबु
धसेवक कुं॥ साहिब सुरतरु होय फल्यो हो॥ सं
भव॰॥ ४॥ इति॥

॥पद पुसतालीशमुं॥

॥राग नट॥ प्रभु तें हियडो हे ज हल्यो हो॥
रेखा याही सोला विक्ति तपस्या, कमल कर
तुं हे जलयारी॥ विधु केसर न गयो मुख अरि के,
जनतें गगन हरिण हारी॥ प्रभु॰॥ १॥ सह
जहि अंजन मंजुल निरिषत, खंजन गरव दि
ओ डारी॥ छिन लर्हि चकोर की सोला, अ
गनि लजे सो दुःखकारी॥ प्रभु तें॰॥ २॥ चंचल
ता गुन लियो मीनको, अलि ज्युं तारी है ॥

री॥ कहुं सुलगता केती छन की, मोहि सबहि
अमरनारी॥ प्रभु तें०॥३॥ घूमत हे समता रस
पाने, जैसे गजवर मद जारी॥ तीन भुवन
मां नहीं कोई छन को, अभिनंदन जिन अनु
कारी॥ प्रभु तें०॥४॥ मेरे मन तो तुमहि रुचत
हे, परे कुन परकी लारी॥ तेरे नयन की मेरे
नयनमें, जस कहे दीओ छबि अवतारी॥ प्र
भु तें०॥५॥ इति॥

॥पद छेतालीशमुं॥

॥राग माड॥ सुमतिनाथ सांया हो॥ टे
क॥ पर पर परभत हि लया, जैसा हीरा ल
या हो॥ ओर देव सवि पर हरया, में जाणी
काया हो॥ सुमति०॥१॥ तेसी किरिया हे जसी,
जैसी तुं पाया हो॥ ओर देव सवि मोहें ल
रया, सवि मिथ्या माया हो॥ सुमति०॥२॥

चौरासी लखवेषमां, हुं बहु परनाच्याहो॥ भु
गति दान देई साहिबा, अब करहो बंच्याहो॥
सुमति०॥३॥लागी अग्नि कषायकी, सब दाझ
ही आयाहो॥ रक्षक आपही आदरया, मैं तुम श
रन माया हो॥सुमति०॥४॥ पक्षपात नहिं
कोउसुं, नहिं लालच कांयाहो॥ऋषीन्द्र यविरु
यसु शिष्य के, तोसुं दिल राच्याहो॥सुमति०
॥५॥इति॥

॥पद स्रउतालीसमुं॥

॥राग पूरवी॥घडि घडि सांभरे सांई सलू
ना, घडि घडि०॥टेक॥पक्ष प्रभु छिन दिलसें
न विसरे, मानु कियो कछु गुन को टुना॥ दरस
न देखतही सुख पाउं, तो बिन होत हुं ऊना
टुना॥घडि०॥१॥प्रभु गुन ज्ञान ध्यान विधि
रचना, पान सोपारी काथा चूना॥राग भयो

दिलमें आवोगे, रहे छिपाया छाना छूना॥ घडि०॥
२॥ प्रभुगुन चित्त जो धरो सजसाथे, तुन पेसे
लेई घर सुना॥ राग लग्या प्रभु सुं मोहि परग
ट, कहो नया ओरि कहो जूना॥ घडि०॥ ३॥ लोक
लाजसें जो चित चोरे, सोतो सहज विवेकही सू
ना॥ प्रभु गुन ध्यान विगर भ्रम भूला, करे किरि
या सो अरने रूना॥ घडि०॥ ४॥ मैं तो नेह कियो तो
हिसाथे, अब निवाहतो तो वर्ष कुना॥ जसक
हे तो बिन और न सेवुं, अमिय जाई कुन चाखे
लूना॥ घडि०॥ ५॥ इति॥

॥ पद अडतालीशमुं॥

॥ राग ईमन कल्याण॥ जैसे सामी सुपा
र्श्वसें दिल लगा, दुःख भगा सुख जगा जगता
रणा॥ राज हंसकुं मान सरोवर, रेवा गज ज्युं
वारणा॥ जैसे०॥ १॥ मोर कुं मेह चकोरकुं

चंदा, मधु मनमथ चित्त ठारनां ॥ फूल अमूल जम
रकी अंबकी, कोकिलकुं सुख कारनां ॥ ऐसें० ॥ २ ॥
सीताकुं राम काम ज्युं रतिकुं, पंथीकुं घर बारनां ॥
धनीकुं त्याग याग ब्राह्मनकुं, योगीकुं संयम धारना
॥ ऐसें० ॥ ३ ॥ नंदनवन ज्युं सुरकुं वल्लभ, न्यायीकुं
न्याय निहारनां ॥ त्युं मेरे मन तुंहि सुहायो, और
तो चित्तसें उतारनां ॥ ऐसें० ॥ ४ ॥ श्री सुपार्श्व
दरिशनपर तेरे, कीजे कोडि उवारनां ॥ श्री नय
विजय विबुध सेवककुं, दियो समता रस पारनां ॥
ऐसें० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणपचाशमुं ॥

॥ राग रामश्री ॥ श्री चंद्रप्रभ जिनराज राजे,
वदन पूनम चंदरे ॥ भविक लोक चकोर निरखत,
लहे परमानंदरे ॥ श्री चंद्रप्रभ० ॥ १ ॥ महमहे
महिमाजें जसभर, सरस जस अरविंदरे ॥

रणआणेउचिबनब मर रशिया, जाहि सुजस
कुरंदेरा॥श्रीचंद्र०॥२॥बसनामे होसत अधिक
हिये, रखे होह गदंदेरा॥बसगुन कथा भवव्यथा
भांजे, ध्यान शिवतड कंदेरा॥श्रीचंद्र०॥३॥विपु
ल हृदय विशाल भुजयुग, चसित चाल गयंदेरा॥
अतुल अतिशय महिमा मंदिर, प्रणत सुरनर वृंद
रो॥श्रीचंद्र०॥४॥मैं दास चाकर प्रभु तेरो, शीष्य
तुब करबंदेरा॥बसविजय चाय कर्म विजये दासे
मुबनबडंदेरा॥श्रीचंद्र०॥५॥इति॥

॥पद पचासमुं॥

॥राग केदारो॥मे कीनो नहीं तोजिन और सुं च
गरे॥१॥दिनदिन चाल चढे गुन तेरो, ज्युं कंचन पर
भाग॥ओरनमें हे कषायकी कालिका, सो क्युं सेवा
लाग॥मैं कीनो॥२॥राजहंस तुं मान सरोवर, औ
र अशुचि रुचि काग॥विषय भुजंगम गरुड तुं क

हियें, ओर विषय विषरागामें भीनो गारा॥ओ
रेहयजग छीलर सरिखे, तुंतो समुद्र अथाग॥तुं
सुरतरु जगवंछित पूरन, ओरतो सुके साग॥में
भीनो०॥३॥तुं पुरुषोत्तम तुंहि निरंजन, तुंशंक
र वडभाग॥तुंब्रह्मा तुं बुद्धि महाबल, तुंहि दे
व वीतराग॥में भीनो०॥४॥ सुविधिनाथ तुज
गुन फूलनको, मेरो दिलहे बाग॥जस कहे भमरर
सिक होइ ताम, कीजे भक्ति पराग॥मेंभीनो०॥५॥

॥पद एकावनमुं॥

॥राग फागनी देशी॥ पंचीडा नाय पातालडल

शाविहां, दूषमा पवन प्रचंड॥जहुविकल्प क
ल्लोल चढतुहे, आरति फेन उदंड॥१॥भवसा
यर भीषण तारीयें हो, अहो मेरे ललना॥
पाशजि त्रिभुवननाथ दिलमें, ए विनति धा
रियें हो॥भवसा०॥ जरत उदाम काम वडवा

भव, परत सैल गिरी शृंग ॥ फिरत व्यसन बहु
मगर तिमिंगल, करत है निमग उमंग ॥ अज्ञा ॥
॥ भमरी याके जिय भयंकर, उलटी गुलटी वा
या करत प्रमाद पिशाच सहित जिहां, अविर
ति व्यंतरी नाचा ॥ अज्ञा ॥ गर्जित अरति कुर
ति रति विजुरी, होत अहोत तो ज्ञान ॥ लागति
चोर कुगुरु मलजारी, धरम जिहाज निदान
॥ अज्ञा ॥ सुरंग पारे अे जिण अति भेरी, स
हस अठार शीलंग ॥ धरम जिहाज तिण स
जकरी चलवो, ऋसह कहे शिवपुर चंग ॥ अज्ञा ॥

॥ पद ६ जावन मुं ॥

॥ गुजरलियां मुज दीठो हो मुझ सुज उप
नोरे, भेट्यो भेट्यो वीर जिणंदरो ॥ हवे मुझ म
न मंदिर मां प्रभु आवी वसो रे, पामुं पामुं
परमानंदरो ॥ कु ॥ पापीढ अंध छेहां डीधो

समकित चक्कनोरे, झल्यो झल्यो क्यरो नें
ब्रांतिरे॥ ईहां जति उंच्या सोके धारित्र चं
कुआरे, झूडी झूडी संवर त्रांतिरे॥ ६॥ रा कर्म
विवर गोजे ईहा मोति ब्लुमक्तरे, ब्लुले ब्लुलेधी
गुण आढरे॥ जार त्नावना पंचाली अपेध्य
करेरे, ओरी ओरी ओरणी आढरे॥ ७॥ ईहा
आवी समताराणी सुं प्रत्नु रमोरे, सारि सा
रिथिरता सेजरे॥ किम ज्ञईशक्शो जेहया
रजे आवशोरे, रज्या रज्या क्रियजानी के
ज्जरे॥ ८॥ शांचयज्ञ अरज सुनी प्रत्नु मन
मंदिर आवियारे, आपे तुठा तुठा त्रित्नुवन
त्नाणरे॥ श्री नय विजय विजुध पयसेवक
लागेरे, तेणे पाम्या पाम्या कोडि कल्याणरे॥
९॥ ५॥ ईति॥

॥ पद त्रेपनमुं॥

॥सज्जन राखत रीति भली, जिनु कार
न उपकारी उत्तम, भई सफल मिलि॥ दुर्ज
न की मन परि नति काली, जैसी होय गली॥
स०॥१॥ औरनको देखत गुन जगमे, दुर्ज
न भये भली॥ कुल पावे गुन गुनको ज्ञाता,
सज्जन हेज हली॥ स०॥२॥ उंच छति पद
जेठो दुर्जन, भई नांहि भली॥ उपगृह
उपर जेठी भीनी, होतनहीं उजली॥ स०
॥३॥ विनयविवेक विचारत सज्जन, भर
कलाव भली॥ दोष लेशने देखे कबहु, या
ते चतुर रली॥ स०॥४॥ जगमें औसो स
ज्जन पायो, उनकी रीत भली॥ श्री नय
विजय सुगुरु सेवातें, सुज रस रंग रली
॥स०॥५॥ इति॥

॥पदचोपनमुं॥

॥आज आनंद भयो, प्रभुको दर्शन लह्यो, रोम रोम सीतल भयो, प्रभु चित्त आयो है॥ आवा मन कुं ते धास्या तो है, चलके आयो मन मोहे, चरण कमल तेरो मन में ठहरायो है॥ आ०॥२॥ अकल अरूपी तुंही, अमल अमूरति योही, निरख निरख तेरो, सुमतिशुं मिलायो है॥ आ०॥ सुमति स्वरूप तेरो, रंग भयो ओक अनेरो, वाही रंग आत्म प्रदेशे, सुरस रंगायो है॥आ०॥३॥इति॥

॥पद पंच्यावनमुं॥

॥ज्ञानादिक गुण तेरो, अनंत अपर अनेरो॥ वाही दीरत सुन मेरो, चित्त कुं रस गायो है॥ ज्ञा०॥१॥ तेरो ग्यान तेरो ध्यान, तेरो नाम मेरो मान, करण कारन सिध्यो, ध्याता ध्येय ठहरायो है॥ज्ञा०॥२॥ छूट गयो भ्रम मेरो,

दर्शन पायोमें तेरो॥ चरण कमल तेरो, सुजस
रंगायो है॥३॥५॥३॥ इति॥

॥पद छपनमुं॥

॥ज॥ दजादीसर ताजे, गुरु मेरो गच्छ रा
जे, पंच महाव्रत जहाज, सुधर्मा ज्युं सवायो
है॥ज॥१॥ जिण्याजे वडो प्रताप संग, जल
ज्युं उतंग तुरंग, निरमल जैसो संग, समुद्र कहा
यो है॥ज॥२॥ सत्त समुद्र भरयो, धरमपो
तता मे तरयो, शील सुजन वालम, क्षमालं
गर डारयो है॥ ज॥३॥ सहज संतोष करी,
तपतो तपी क्या भरी, ध्यान रंग घरी, देत
सोल ज्ञान चलायो है॥ज॥४॥ ऐसो
जहाज क्रियाजाज, मुनिराज साज सजे,
दया मया मणि माणिक, ताहिमें भरायो
है॥ज॥५॥ पुण्य पवन आयो, सुजस

ब्याह चलायो, प्राणजीवन ऐसो माल,
घर बैठे पायो हो भाग बडे ते॥

॥पद सत्तावनमुं॥

॥ऐरी आज आनंद भयो मेरे, तेरो
मुख निरख निरख रोम रोम शीतल भ
यो अंगो अंग॥ऐ०॥ सुध्य समभल
समता रस झूलत, आनंद रंग भयो अनं
तरंग॥ऐ०॥१॥ ऐसी आनंद दशा प्रग
टी, चित्त अंतर ताको प्रभाव चलत निर
मल, गंग याही गंगा॥ समता दोउ मिल
रहे, ब्रह्म विलास झूलत ताके संग॥ऐ०॥२॥

॥पद अठावनमुं॥

॥भले भले हेजे वीतरागने, सो सो होशे
वीशारे॥ जिन हेजे होसे नहीं कोई, कोई
होजे अधीशारे॥भ०॥१॥ समय ओकच

नहीं धरसी, जे सुख दुःख की पीडा रे॥ तुं क्युं सोच करे मन मूढा, होवे वज्र ज्युं हीरा रे॥ जे०॥ ३॥ जेम तीर कमान बान ज्युं मारी सके नहीं मीरा रे॥ तुं संभार पुरुष बल अपनो, सुख अनंत तो पीरा रे॥ जे०॥ ४॥ नयन ध्यान धरो वा प्रभु को, जे टारे भव भीरा रे॥ सब सचेतन धरम निज अपनो, जे तारे भवतीरा रे॥ जे०॥ ५॥ इति॥

॥ पद ३७॥ राग सारंग॥

॥ अब जिनुं जीवित ऐसे प्रेत, मलिन मंदमति डोलत घर घर, उदर भरन के हेत॥ अ०॥ १॥ दुर्मुख वचन जपत नित निंदा, सज्जन सकल दुःख देत॥ कबहुं पाप को पावत पैसो, गाढे धुरीमें देत॥ अ०॥ २॥ गुरु ब्रह्मन अच्युत जन सज्जन, जात न कुथ

॥ निचेत॥ सेवा नहीं प्रभु तेरी कबहूं, भुवन नीलको खेत ॥ भ॥ ३॥ कथे नहीं गुन गीत सुजस प्रभु, साधन देव अनेत॥ रसना रस विगारो कहां लों, बुडत कुटुंब समेत ॥ भ०॥ भ॥ इति॥

॥ पद दूसरो ॥

॥ प्रभु तेरो गुन ज्ञान, करत महा मुनि ध्यान, समरत भाजे भ्रम, हृदे में समायो॥ हो प्रभु॥ ध्या मन मंदिर उर लायो, सुध्य समकित ठहरायो, वचन काय स मनवचन्न से प्रभु कुं ध्यायो हो॥ भ॥ ध्यायो सही पायो रस, अनुभव भगयो रस, मिट गयो भ्रमको रस, ध्याता ध्येय समायो हो॥ भ॥ ३॥ भगर भयो महा प्रकास, ज्ञानको महा विलास॥ भैसो मुनिराज ताज

रस प्रभु छायो है॥ प्रनाम॥

॥पद एकसठमुं॥

॥राग कनडो॥ ए परम ब्रह्म परमेश्वर, परमआनंद मयि सोहायो॥ जे परतापकी सुख संपत्ती बरनीन जात मोपें, ता सुख अलख कहायो॥ ए॥१॥ ता सुख ग्रहवेकुं मुनि मन खोजत, मन मंजन कर ध्यायो॥ मन मंजरी भई प्रफुल्लीत दसा लई, तापर भमर लोभायो॥ ए॥२॥ भमर अनुभव भयो, प्रभु गुन बास लह्यो॥ चरन करन तेरो, अंबुज लजायो॥ एसी दसा होत जब, परम पुरुष तब, पकरत पास पठायो॥ ए॥३॥ आतम सुरस भयो, अंतरंग आनंद लह्यो, रोम रोम सीतल भयो, परमात्म पायो॥ अकल स्वरूप भूप, ऊंढीन परमत रूप, सुरस प्रभु चित आयो॥ ए

॥पद बासठमुं॥

॥राग धुपद॥ कैसे देत कर्मनकुं दोस, म
नि वहे वेह आपु भलो॥ अहे राग अरु दोष॥
के०॥ विषय के रस आप भूलो, पाप सों तन ठो
स॥ के०॥१॥ देव धर्म गुरुकी करी निंदा, मिथ्या म
तके भेस॥ के०॥२॥ कुस उदय भये नरक पर
वी, भभेगे केते संग॥ के०॥३॥ किये आपुं
कर्म भुगतें, अब कहा करो सोस॥ के०॥४॥ दुः
खतो जकु काल वीत्यो, लहे न सुख लस सो
स॥ के०॥५॥ क्रोध मान माया लोभ, भ
ख्यो तन घर होस॥ के०॥६॥ चेत चेतन पाय
सुजस, मुगति पंथ सों पोस॥ के०॥७॥ इति॥

॥पद त्रेसठमुं॥

॥राग गोडी सारंग॥ तुह्मारे शिर रावत
अजज जरा, छारये मानुं गयल न छारत॥

सीस सण गार छराा तुहारे ॥ गा ॥ किधुं गंगा अमरीस सुर सेवत, यमुना ठील्य तरा ॥ गिरिवर सिखरें जेह अनोपम, ऊन्नत मे घ घरा ॥ तु ॥ गा ॥ केसे जाल जगे लपि लप ञ्जल, तारत अति विकरा ॥ हरि कहे जस प्रभु ऋषभ रजो ए, हमहिं अति हीमरा ॥ तु ॥ ॥ ३ ॥

॥ पद ग्योसहमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ माया कारमी रे, मायाम करो चतुर सुजाण ॥ माया वाह्यो जगत वलुधो, दुःखियो थाय अजाण ॥ जे नर मायायें मोहि रह्यो, तेने सुपनें नहीं सुख ठाम ॥ माया ॥ १ ॥ न्हाना मोटा नरने माया, नारी ने अधि के री ॥ वली विशेषे अधिकी माया, गरढा ने अनेरी ॥ माया ॥ २ ॥ माया कामण माया मोहन, माया जग धूतारी ॥ मायाथी मन

सहुनुं चलीयुं, खोलीने जहु प्यारी॥ माया०॥
३॥ माया कारन देश देशांतर, अटवी वनमां
जाय॥ जहाज बेसीने द्वीप द्वीपांतरें, जई शा
यर झंपलाय॥ माया०॥ ४॥ माया मेली करी
बहु भेली, लोभे लक्षण जाय॥ भयथी धन
धरती मां गाडे, ऊपर विसहर थाय॥ माया॥
०॥ ५॥ योगी जति तपसी सन्यासी, नग्न थ
ई परवरिया॥ ऊंधे मस्तक अग्नि तापें, मा
याथी न ऊगरिया॥ माया०॥ ६॥ शिवभूति
सरिखो सत्यवादी, सत्यघोष कहेवाया॥ र
त्न देखी तेनुं मन चलियुं, मरीने दुर्गति ज
य॥ माया०॥ ७॥ लोभ घरन मायायें पाडि
यो, पडियो समुद्र मोझार॥ मुठ माजनीयो
थईने मरियो, पोतो नरक मोझार॥ मा
या०॥ ८॥ मन वचन कायायें माया, मूकी

वनमां आया धन धन ते मुनिश्वर राया, दे
व गंधर्व जस गाया ॥ माया० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पांसठमुं ॥

॥ कुंज घर चेतन आवेंगे मेरा कुंज घर चेतन
आवेंगे ॥ ए टेक ॥ सखि री लेवुं बलैया बार बार ॥
मेरे कुंज० ॥ रेन दीना मानुं ध्यान तुं साढा, कब
हुं के दरस देखावेंगे ॥ मेरे कुंज० ॥ १ ॥ विरह दीवानी
फिरुं ढुंढती, पीउ पीउ करके पोकारेंगे ॥ पिउ आ
य मले ममतासें, काल अनंत गमावेंगे ॥ मेरे कुं
ज० ॥ २ ॥ करुं एक उपायमें उद्यम, अनुभव मि
त्र बोलावेंगे ॥ आय उपाय करके अनुभव, ना
थ मेरा समजावेंगे ॥ मेरे कुंज० ॥ ३ ॥ अनुभव मि
त्र कहे सुनो साहेब, अरज एक अवधारेंगे ॥ म
मता त्याग समता घर अपनो, वेगें जाय मना
वेंगे ॥ मेरे कुंज० ॥ ४ ॥ अनुभव चेतन मित्र मिले

होळी, सुमति निशान घुरावेंगे॥ विलसत

सुख जस लीलामें, अनुभव प्रीति जगावेंगे

हमेरे॰॥४॥ पा॰ ॥ इति॥

॥पद छाशठमुं॥

॥राग मोतीडानी देशी॥ सूरत मंडन पा

स जिणंदा, अरज सुणो टाळो दुःख दंदा॥ सा

हेबा रंगीला हमारा, मोहना रंगीला॥ तुंसा

हेब हुं छुं तुज बंदा, प्रीति बनी जैसी कैरव

चंदा॥सा॰॥१॥ तुज सु नेह नहीं मुज काच्यो,

घणहीन लागे हीरो जाच्यो॥सा॰॥ हुं नाहानते

कांई विमासो, जागे मुज मन अहलमासो॥सा॥

॥२॥ डंडलागा ते केड न छोडे, दीधो वंछित

सेवक कोडे॥सा॰॥ अजय जजलो तुज न

वी जूठे, हाथा थकी तो सुं नवी छूटे॥सा॰॥३॥

जे जिन मलमां जामी छाने, तो पण निज

जाणीहित राजो॥सा०॥ जेणे दीधुं छे तेहज
देशे, सेवा करशो ते फल लेशो॥सा०॥४॥ घे
नु रूप आराम स्वभावे, देतां देतां संपत्ती
पावे॥सा०॥ तिम मुजने तमो जे गुण देशो,
तो जगमां जस अधिक थहेशो॥सा०॥५॥
अधिकुं ओछुं किशुं रे कहावो, जिम तिम से
वक चित्त मनावो॥सा०॥ माग्या विण तो
माय न पिरसे, जे ऊजाणो साच्यो किसे
॥सा०॥६॥ ईम जाणीने वीनती कीजे,
मोहनगारा मुजरो लीजे॥सा०॥ वाचक ज
स कहे जमिये आसंगो, दियो शिव सुख
धरी अविहड रंगो॥सा०॥७॥ इति॥

॥पद सडशठमुं॥

॥राग आशावरी॥ चेतन मोहको संग निवारो,
ग्यान सुधारस धारो॥चे०॥१॥ मोह महातम म

अनूरेरे, धरे सुमति परकास॥ मुक्ति पंथ परगट करेरे, दीपक ज्ञान विलास॥ येना॥२॥ ज्ञानी ज्ञान मगन रहेरे, रागादिक मल खोय॥ चित्त उदास करनी करेरे, कर्म बंध नहिं होय॥ येना॥३॥ भीनन यो व्यवहार भेरे, मुक्ति न उपजे कोय॥ दीन भयो प्रभु पद जपेरे, मुगति कहां सु होय॥ येना॥४॥ प्रभु समरो पूजो पढोरे, करो विविध व्यवहार॥ मोक्ष स्वरूपी आतमारे, ध्यान गमन निरधार॥ येना॥५॥ ज्ञान कला घट घट वसेरे, जोग जुगति के पार॥ निज निज कला उद्योत करेरे, मुगति होय संसार॥ येना॥६॥ बहु विध क्रिया कलेसमुंरे, शिवपद नलहे कोय॥ ज्यान कला परगासमों, सहज मोक्ष पद होय॥ येना॥७॥ अनुभव चिंतामणि रतन, जाके हिये परकास॥ सो पुनीत शिव पद लहेरे, दहे चतुर्गति वास॥ येना॥८॥ महि

मा सम्यक् ग्यानकी, जद्यपि राग जल भेय ॥
क्रिया करत फल भुंजते, कर्म बंध नहिं होय॥४
०॥ दोहा॥ भेद ग्यान तबलों भलो, जबलों मुक्ति
न होय॥ परम ज्योति परगट जिहां, तिहां विकल्प
नहिं कोय॥४१॥ दोहा॥ भेद ग्यान साबू भयो, स
मरस निर्मल नीर॥ धोबी अंतर आतमा,
धोवे निज गुण चीर॥४२॥ दोहा॥ राग विरोध
विमोह मलीरे, एही आस्रव मूल॥ एही कर
म बढाय कें, करे धर्मकी भूल॥४३॥ दोहा॥ ग्यान
सरूपी आतमा, करे ग्यान नहिं और॥ द्रव्य कर्म
चेतन करेरे, यह व्यवहार की दौर॥४४॥ दोहा॥ कर
ता परणामी द्रव्यरे, कर्म रूप परिणाम॥ किरि
या परजयकी फिरत, वस्तु एक त्रय नाम॥४५॥
॥ दोहा॥ करता कर्म क्रिया करे, क्रिया करम करता
र॥ नाम भेद बहुविध भयेरे, वस्तु एक निर्धा

साधे॥धपा॥ एक कर्म कर्तव्यता, करेन करता हो
य॥ तेसें जस सत्ता साधि, एक लायको होय॥
येना॥ २ ॥ इति॥

॥ पद ८३ मुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जय जग उपसम न
हिं रति, जय जगे जोग धरे क्युं होवे, नाम धरा
वे जति॥ जय॥१॥ कुपर करेतुं जकु वियलाते.
क्रोध ज्वले छति॥ ताको कलतुं क्या पावेगो,
ध्यान विना नांहिं जती॥ जय॥२॥ लूज
तरस जोर धूप सहतु है, कहेतु ब्रह्म ब्रती॥ क
पट केलवे माया मंडे, मनमें धरे व्यकली॥ जय
॥३॥ भस्म लगावत ठाढो रहेवत, कहत है कु
वसती॥ जय मंत्र जडीबूटी लेजस, सो लव
श मूढ मति॥ जय॥४॥ जडे जडे बहु पूर्व
धारी, जिनमें सक्ति हती॥ सो भी उपसम

छोडी जीयारे, पावे नरक गति॥ जन०॥५॥
कोउ गृहस्थ कोउ होवे वैरागी, जोगी भगत
जति॥ अध्यातम भावें उदासी रहेगो, पावे
गो तबही मुगति॥ जन०॥३॥ श्री नय विज
य विबुध पयराजे, भने जगाधोरति॥ श्रीज
स विजय उवझाय पसायें, हेम प्रभु सुख
संतति॥ जन०॥६॥ इति॥

॥पद अगणोतेरमुं॥

॥राग राम ग्री॥ चंद्र प्रभु जिनराज

राजे, वदन पूनम चंदरे भविक लोक चकोर निर
खत, लहे परमानंद रे॥ चं०॥१॥ मह महे महि
मायें भमर, रस वस अर विंदरा॥ रण झणे
भविजन भ्रमर रसिया, जाहि सुख मकरंद
रे॥ चं०॥२॥ जस नामे दीपत अधिक दीपे,
रसे दोहग दंद रे॥ जस गुण कथा भव व्यथा भं

जे, ध्यानशिवतरु कंदरो॥ चं०॥३॥ विपुल हृदय
विशाल भुजयुग, चलत चाल गयंदरो॥ अतु
ल अतिसय महिमा मंदिर, प्रणत सुरन
र वृंदरो॥ चं०॥४॥ हुं दास चाकर देवतोरो, सि
स तुम हरन जे दरो॥ जस विजय वाचक जेम वि
नवे, टाल भुजभय फंदरो॥ चं०॥५॥ इति॥

॥पद सित्तेरमुं॥

॥राग काफी॥ तो बिन और न जाचुं, जिनं
दराय॥ तो०॥ टेक॥ मैं मेरो मन निश्चय कि
नो, एहमां कछु नांहि काचुं॥ जिनंदराय॥ तो
०॥१॥ तुम चरन कमल पर पंकज मन मेरो,
अनुभव रसभर चाखुं॥ अंतरंग अमृत
रस चाखो, एह वचन मन साचुं॥ प्रभुजी॥
तो०॥२॥ जस प्रभु ध्यायो महारस पायो,
अवर रसें नांहि राचुं॥ अंतरंग फरस्यो दरस

न तेरो, तुझ गुण रस संग मारयुं प्रभु आतो
॥३॥ इति॥

॥पद अडतेरमुं॥

॥राग प्रभाती॥ दृष्टिरागें नवि लागियें,
वली जागियें चित्त॥ मागियें शिव ज्ञानी त
णी, हठ भांगीयें नित्यें॥ दृष्टि॥१॥ नेह छता
दोष देखे नहिं, जिहां जिहां अतिरागी॥ दो
ष अछता पण दाखवे, जिहांथी रुचि भांगी
॥ दृ॥२॥ दृष्टिराग बले चित्तथी, ढरे जेह
विकराले॥ पूर्व उपकार न सांभले, पडे अ
धिक जंजाले॥ दृ॥३॥ वीर जिन जेह हुता
विचरता, तव भगली पुत्तो॥ जिन कही जड
न संभार्यो, इहां मोह अति धूतो॥ दृ॥४॥
अधिक उदार रमणी तणे, भजे आप म
तिरागो॥ दृष्टिरागें जमाली कह्यो, नवि म

वळलतां लागे ॥ दृ० ॥ ५ ॥ वली आचार्य सावद्य
जेहुओ अनंत संसारो ॥ दृष्टिराग स्वमति प
णे थयो, महा निशीथ विचारो ॥ दृ० ॥ ६ ॥ कु
वे जिन धर्म आशातना, अजाण्युं कहे रंगो ॥ म
हु आगले जिनवरे, वंदियो भगवई अंगो ॥ दृ०
॥ ७ ॥ ग्रामना नटने मूर्खनो, मिल्यो जेहवो
जोगो ॥ दृष्टिराग मिल्यो तेहवो, कथक सेवक
जोगो ॥ दृ० ॥ ८ ॥ आपण गोहडी मीठडी, क
हीने मन लागो ॥ ज्ञानी गुरु वचन रुचियां म
णां, कडुक तीरस्यां वागे ॥ दृ० ॥ ९ ॥ दृष्टिरा
गें भ्रम ऊपजे, वधे ज्ञान गुण रागे ॥ जेहमां
एक तुमें आदरो, भलो होय ते आगे ॥ दृ० ॥
१० ॥ दृष्टिरागी कहा मत हुओ, सदा सुगुरु
अनुसरजो ॥ वाचक जस विनय कहे, हित
शिष्य मन धरजो ॥ दृ० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥पद अहोंतेरमुं॥

॥राग गोडी॥ जबलगें समता क्षणुं नहिं आ-
वे, जबलगें क्रोध व्यापक है अंतर, तबलगें
जोग न सोहावे॥ ज०॥१॥ बाह्य क्रिया करे क-
पट केलवे, फिरके महंत कहावे॥ पक्षपात कबहु
नहिं छोडे, उनकुं कुगति बोलावे॥ ज०॥२॥
जिन जोगीने क्रोध किहांतें, उनकुं सुगुरु बता-
वे॥ नामधारक भिन्न भिन्न बतावे॥ उपस-
म विनु दुःख पावे॥ ज०॥३॥ क्रोध करी बं-
धक आचारज, हुओ अग्नि कुमार॥ दंडकी
नृपनो देश प्रजाल्यो, भमियो भव मोझा-
र॥ ज०॥४॥ संब प्रद्युम्न कुमार संताप्यो,
कृष्णद्वीपायन पायो॥ क्रोध करी तपनो फल
हार्यो, कीधो वारकां दायो॥ ज०॥५॥ काउस्स-
ग्गमां पड्यो अति क्रोध, प्रसन्नचंद्र ऋषि

राया॥ सातमी नरक तणां दुख भोगी. कडवां
तेन खमाया॥ ल०॥ ८॥ पार्श्वनाथने उपसर्ग
कीधो, कमठ भवंतर धीठा॥ नरक तिर्यंचनां दु
ख पामी, क्रोध तणां फल दीठा॥ ल०॥ ९॥ जे
म अनेक साधु पूर्वधर, तपिया तप करी जह्म
कारज पडे पण ते नवि रहिया, क्रोध तणुं फ
ल एह॥ ल०॥ १०॥ समता भाव वली जे मुनि
वरिया, तेहनो धन्य अवतार॥ खंधक ऋषिनी
खाल उतारी, उपसर्ग उतार्यो पार॥ ल०॥
११॥ चंडरुद्र आचारज चलतां, मस्तक दीधा
प्रहार॥ समतां करतां केवल पाम्यो, नव दीक्षि
त अणगार॥ ल०॥ १२॥ सागरचंदनुं शीश
प्रजाल्युं, नीसल सेन नरेंद्र॥ सुमता भाव
धरी सुरलोकें, पोतो परम आनंद॥ ल०॥ १३
॥ खेमा करतां खरचन लागे, भांगे कोड कले

सा अरिहंत देव आराधक थावे, वाधे सुज
स प्रवेश॥ ७॥ इति॥

॥पद तहोंतेरमुं॥

॥राग धन्याश्री॥ प्रभु मेरे तुं सब वाते पूरा
परकी आश कहा करे प्रीतम, ए किण वाते अ
धूरा॥ प्रभु०॥१॥ परवश बसत लहत परत
क्ष दुःख, सबही बाते सनूरा॥ निज घर आप
सभार संपदा, मत मन होय सनूरा॥ प्रभु०॥
२॥ परसंग त्याग लाग निज रंगे, आनंद वेली अं
कूरा॥ निज अनुभवरस लागे मीठा, ज्युं घेवर
में घूरा॥ प्रभु०॥३॥ अपने ख्याल पलक में खे
ले, करे शत्रुका चूरा॥ सहजानंद अचल सुख पा
वे, धूरे जगजस नूरा॥ प्रभु०॥४॥ इति॥

॥पद चम्मोतेरमुं॥

॥अथ श्री पूजाविधिनु पार्श्व जिन स्तवन॥

॥ शांतिजिन भलेऽ जोगी रह्यो॥ ए देशी॥

मूल विधि मांहे भाविये जी, अंतरंग ए भाव॥ ते सवि तुज आगल कहुं जी, साहेब सरल स्वभाव॥ सुहंकर अवधारो प्रभु पास॥ ए आंकणी॥ न्हातण करतां भाविये जी, प्रभु गुण जल मुज सुध्य॥ उकल उतारी प्रमत्तता जी, हो मुज निर्मल बुध्य॥ सु०॥२॥ न्हतनाथें स्नान करीजी, काढो मेल मिथ्यात्व॥ अंगुछो अंग शोषवी जी, जाणो हुं अवदात॥ सु०॥३॥ क्षीरोदकनां धोतियां जी, चिंतवो चित्त संतोष॥ अष्ट कर्म संवर भलो जी, आठ पडो मुखकोश॥ सु०॥४॥ ओरशीयो एकाग्रता जी, केसर भक्ति कल्लोल॥ श्रध्या चंदन चिंतवो जी, ध्यान घोल रंग रोल॥ सु०॥५॥ भाल वहुं आण भली जी, तिलक तणो तेह भाव॥

जे आभरण उतारीयें जी, ते उतारो निज
भाव ॥ सु० ॥ ३ ॥ जे निर्मल उतारियें जी,
ते तो चित्त उपाधि ॥ पखाल करंता चिंतवो
जी, निर्मल चित्त समाधि ॥ सु० ॥ ४ ॥ अंग
लूहणां जे धर्मनां जी, आत्म स्वभाव जे अं
ग ॥ जे आभरण पहेरावीयें जी, ते स्वभाव
निज चंग ॥ सु० ॥ ५ ॥ जे नववाडी विशुध्ध
ता जी, ते पूज नव अंग ॥ पंचाचार विशु
ध्धता जी, तेह फूल पंच रंग ॥ सु० ॥ ६ ॥ दी
वो करतां चिंतवो जी, ज्ञान दीपक सुप्रकास
॥ नय चिंता घृत पूरियुं जी, तत्व पात्र सु
विलास ॥ सु० ॥ ७ ॥ धूप रूप अति कार्य
ता जी, कृष्णागरुनो भोग ॥ शुध्ध वासना
मह महे जी, ते तो अनुभव योग ॥ सु० ॥
८ ॥ मद स्थानक अड छांडवा जी, तेह

अष्ट मंगलिकाने नैवेद्य निवेदियें
जी, तेमन निश्चल दीक्षा॥ सु०॥ १२॥
लवण उतारी लावीअें जी, कृत्रिम धर्म
नो त्याग॥ मंगल दीवो अति लालो जी
सुध्य धरम परभाग॥ सु०॥ १३॥ गी
त नृत्य वाजिंत्रनो जी, नाद अनाद अ
सार॥ समरति रमणी जे करी जी, ते सा
चो धर्मकार॥ सु०॥ १४॥ भाव पूजा अे
मसायेवी जी, सत्य वचन ओरे धार॥
त्रिभुवन मांहे ते विस्तरे जी, टाले कर्म
नो फंद॥ सु०॥ १५॥ अेणी परें भा
वना भावतां जी, साहेज जससु प्रस
न्न॥ जनम सफल जग तेहनो जी, ते
ह पुरेष धन धन॥ सु०॥ १६॥ परम पुरे
ष प्रभु सामला जी माना अभुरु सेवा॥

रङ्गरोल अमोल, वाचक जस कहे
देवा सुंणो॥ ७॥ इति॥

॥पद पंचोतेरमुं॥

॥राग गोडी॥ संभव जिन जब
नयन मिल्यो हो, प्रगटे पुण्यके अंकूरा॥ अ आंकु
णी॥ तब थें दिन मोही सफल वल्यो हो॥
अंगणे अमीयें मेह वुठा, जनम ताप
बुझ्याप गल्यो हो॥ सं०॥ १॥ जैसी भक्ति
तैसी प्रभु करुना, स्वेत संखमें दूध मिल्यो हो॥ दर्श
नथें नवनिधि रिधि पाई, दुःख दोहग सब दूर टल्यो हो॥ सं
०॥ २॥ डरत फिरत हे दूरहि दिलथें, मोह मल्ल जिणे
जगत्र छल्यो हो॥ समकित रत्न लहुं दरिसनसें, अब न
वि जाउं कुगति रुल्यो हो॥ सं०॥ ३॥ नेह नजर भर निर
खनहीं मुझ, प्रभुसुं हियडो हेज हल्यो हो॥ श्रीनयविजय
विबुध सेवककुं, साहेब सुरतरु होय फल्यो हो॥ सं०॥ ४॥ इति॥

अथ

॥श्रीविनयविलासप्रारंभः॥

॥पद पहेलुं॥

॥राग जय जयवंती॥ सजन सजनने ला
ल, परन नछोडूं ताज, मेरेतो अजब माल,
तेरो छे लजनको॥रा॥ दोनतन याकुं दाम, कामसुं
न मेरे काम, नाम तेरो आछो जाम, लिउं केरे
जनको॥ तेरोहुं आधीन लीन, जलज्युं मग
नमीन, तीन जगडेरो भलु, कुं जके जंजन
को॥३॥ नालि भई देखानंद, नयन आनंद ये
द, परन विनय तेरो, अमिय के अंजनको॥४॥

॥पद बीजुं॥

॥राग कानडो दरबारी॥ यागति छोरदे
गुन गोरी॥तुगुन गोरी॥टेक॥ अपरिल जे

हुं मिले शशि पंकज, प्रिय कमुनावेह लोरी॥ यागतिनाथ॥ यल गिरनार पिया दिखलावुं, जकुरि ओरि रति होरी॥ मुगति महलमें मिले राजुल नेम, विनय नमेकर ओरी॥ यागतिनार

॥पद्यत्रीशमुं॥

॥राग कल्याण लूपाल॥ मेरी गति मेरी मति मेरी रति मेरि छति, मेरो पिया मेरो लिया यदुपति यतियां॥ मेरी॰॥१॥ मेरो ज्ञान मेरो ध्यान मेरो भान मेरो यान मेरो जश, सुनि ऋत्विधान मोहि ठास साति छतियां॥ मेरी॰॥राग जे गिरनार मोकुं छारि रस अरि तोरी, रहि चित्त दिन रति जेसें धीया जतियां॥ मेरी॰॥३॥ मेरे तुंहि मेरे तुंहि शिया दवी नंद तुंहि, माना पिया राजुलकी विनय विनतियां॥ मेरी॰॥४॥ति॥

॥पद च्योथुं॥

॥राग दरबारी कानडो॥ कुमति कारे हे मे
रे प्रानी॥टेक॥ झूठी सब संसार की माया,
झूठी गरव गुमानी॥ कुमति०॥१॥ आपन
झूझे मोह निंदसुं; कोजे दुनियां दिवानी॥
वीतराग कुल कारण दिलसुं, विनय रूपो
शुध ज्ञानी॥ कुमति०॥२॥ इति॥

॥पद पांचमुं॥

॥राग भूपाल तथा गोडी॥ प्यारे काहे
कुं ललचाया॥टेक॥ या दुनियां का देख तमा
सा, देखत ही सकुचाया॥ प्यारे०॥१॥ मेरी मे
री करत हे आछीरे, कीरे कछु न जकुसाया॥ प
लक एक में जकुरिन देखे, कसजुं दुकीन्याया॥
प्यारे०॥२॥ कोरि विकल्प व्याधि की वेदन,
लही शुध जपराया॥ ज्ञान कुसुम की सेज

नपावे, रहे अघाय अघाय॥ प्यारे॥३॥
डिया दोर चिहुं ओर जेरसें, मृगतृष्णा चि
त्त लाया॥ प्यास बुझावन बुंद न पायो, यौंहि
जनम गुमाया॥ प्यारे॥४॥ सुधा सरोवर है
या घरमें, जिसतें सब दुःख जाया॥ विनय
कहे गुरुदेव दिखावे, जो लाउं दिल गया॥ प्या
रे॥५॥ इति॥

॥पद छठुं॥

॥राग सामेरी॥ पिउजी मोहि दरिसन
दीजे मेरे॥टेर॥ तेरे दरशनकी मैं प्यासी, तुं
झलयो उदासी॥ पिउजी॥१॥ पिउ पि
उ रटतें जर्दे हुइ, नयनों निंदडी जाव रे॥
तब देखा पिउ प्रेमसें फूली, संकुचि रहि मैं ला
जरे॥ पिउजी॥२॥ रसिक न राख्यो हदेसुं
जीरी, सखिमें बहुत हसांसी रे॥ अब पाउं

तो पाछीन छोडूं, राखुं रंग विलासी रे॥ पि
उ हमारा॥ पिउके गुनकी मोतन माला, कं
ठ करौं रूप माली रे॥ चकित भये मेरे जोवन
चिहुं ओर, सुरिजन पंथ निहाली रे॥ पिउ
हमारा॥२॥ कहै मति भारी हमवन प्यारे, मेंकुं
तेरी अंबी रे॥ गोर विछाडी विनय विनोदें, घ
र आयो आनंदी रे॥ पिउ हमारा॥३॥ इति॥

॥पद सातमुं॥

॥राग मिश्रित विहाग॥ प्यारे प्रीत
मन हठ छो रो रे॥ तोरन आये फिरे कुन
करन, दीहें रथ्यों या गोरो॥ प्यारे॥१॥ राज मो
सुं कीनी ऐसी ठगाई, तैसें करत ठगोरो॥
झूठ जगत में काहि दिखायो, ऐसो व्याह
अर घो॥ प्यारे॥२॥ मैं तो नाहक छोडूं
नयन वडो, झूल्यो प्रेमको ओरो॥ अजतो

चरन बिनयमोकि दीजें, राखुल करत
निहोरो॥ प्यारे॥३॥ इति॥

॥पद आठमुं॥

॥राग जयजयवंती॥ सुरत मंडन
पास, देखत अति उल्लास, सुजस सुवास
जस जगत में जेत हे॥ सुरत मोहन रूप,
सुर नर नमे भूप, अकल सरूप स्वामि अधि
कउद्योत हे॥१॥ भमत भमत भव पा
यो प्रभु अति नव, सुरत रे सुभ साज
देयन प्रवीन हे॥ तेरा कई गुन ग्यान, सो
ही दिन सुविहान, तिहारे चरन मेरो, दिल
लय लीन हे॥२॥ मुगट कुंडल माल, रतन
तिलक भाल, सुगुन रसाल लाल, फूल
जनि हे भली॥ केसर कपूर कूल, धूप धरे अगु
भूल, बिनय कुं दिजे दुःख तिन जरजसुं भेमली॥३॥

॥पद५४सुं॥

॥राग मेघ मल्हार॥ लिऊमानमेरे मोहन, कईजिनती होऊ करही मेरा॥ जिन गुन्हा क्यों छोरि सिधाये, मेहर करहुया होसिरके मोरा॥ लिऊ०॥१॥ जिरह विझान लग्यो मेरे जिऊमें, पिउपिउ होजुं सज ही सोरा॥ सूज न परत अकज गतिया कछु, जीयो जिलेग संलेग की होरा॥ लिऊ०॥२॥ पलक अेक कल नपरत मोकुं, पिउ पिउ रट त होतही भोरा॥ चमक लोह ज्यों जेंच हि यो मन, चले प्रेमकी जांह मरोरा॥ लिऊ०॥ ३॥ लियो छीन मन मानिक मेरो, लिनके भूल हुये लाज करोरा॥ तो अज मोहि दिले मन अपनो, करहो नीजाऊ पिउ मकरो मेरा॥ लिऊ०॥४॥ रतन तीन हीले रानुसंउ

भयो रंग रस अंग ही भेरा॥विनय सदा सेव
क सुखदाई, समुद्रावि शिवा देवी किसोरा॥
वि॥८॥पा॥इति॥

॥पद दशमुं॥

॥राग जैजैवंती॥जनकुं उहासों प्यारे
रहोगे हमसुं न्यारे, याहितो पुकारे प्यारे
तुम चित्त भाई हो॥१॥बहुत बिगोई बोई ई
नही सफल गुन, लोगनमें शोभा तुम भलि
युं भई हो॥२॥हमकुं उहेंकुं मानो वाहिसो
ति हारो तानो, भनोगे आपहि वातो जैसी
दुःखदाई हो॥३॥सजनकुं प्यारी नारी, मा
याहे जगत हारी, छंनसें तें यारी लारी आ
जर भुराई हो॥४॥भूठेंहि दिखावे नेह, पाथ
रकी जैसी रेह, छरकी दाखेंगी छेह, अंत तो
पराई हो॥५॥कहे ज्ञान ऊला लिखि भनोसो

उरहो पिउ, जैसी है तैसी तो तुम विनये सु
नाई है॥ ६॥ इति॥

॥पद अगीआरमुं॥

॥राग बिहागडो॥ सांई सलूना केसें

पाउंरी, मन थिर मेरा न होया॥ दिन सारा
बातोमें खोया, रजनी गुमाई सोया॥ सां
ई॰॥१॥ टेक॥ खेर खेर जर व्यापें दिलकुं,
जरव्या न रहे सोया॥ मन और मदमत्त
बाला कुंजर, अरके न रहे होया॥ सांई॰॥२॥
छिन ताता छिन शीतल होवें, छिनुक हसे छि
नुं रोया॥ छिनु हरखे सुख संपत्ति पेखी छिनु
झूरे सब खोया॥ सांई॰॥३॥ वृथा फरत है डो
री कुराफ़ुत, लाचीन मिरे डोया॥ याकीनी
में याहि फडंगी, यौंही नीर बिलोया॥ सां
ई॰॥४॥ मन धागा पिउ गुनको मोती, हा

रजना वुं पोया॥ विनय कहे मेरे लिगीके रज
वन, नेकनिजर मो हे स्मेया॥ सांइनो॥ पाइति

॥पद अ़ारमुं॥

॥राग जरा॥ थिर नांहि रे थिर नांहि, या
वत धन योवन थिर नांहि॥ पलक अेकमें छेह
दिखावत, जैसी बादलकी छांहि॥ थिर॰॥ १॥
टेक॥ मेरे मेरे कर मरत जियारे, दुनियां अप
नीकरी याही॥ कनक स्यी ज्यौं विनश होवे, या
साथ किसिके नायाहि॥ थिर॰॥ २॥ कहे दुनियां
कहा हसे जाउरे, मेरी गति समजैं नांहि॥
केते ही छोरमें प्यासे, केते ओर गहे जांहि॥
थिर॰॥ ३॥ सयन सनेह सकन हे यंचल, किस
के सुत किसकी माइ॥ रितु बसंत शिर ढूंज पा
त ज्यौं, जय परोगे को कांही॥ थिर॰॥ ४॥
जलरामर अकसंक अरूपी, सब लोगनकुं.

सुखदाई॥ विनयकहे अब दुःख बंधनतें, छो
डनहार वे साँई॥ थिर०॥ ५॥

॥पद तेरमुं॥

॥राग बिहागडो॥ मन न काहु के वश मन
कीजे सब वश, मन की सो गति अने थाको
मन वश होय॥ पढो हो बहुत पाठ तप करो कै
पाहार, मन वश कीजे जिनु तप जप वश होय॥१॥
काहेकुं डोरे हे मन कहुन पावेगो चेन, विषयके उ
मंग रंग कछु न कुरस है॥२॥ सोही ज्ञानी सोही
ध्यानी सोही मेरे अयायानी, जिने मन वश कि
यो वाकिके सुजश है॥३॥ विनय कहे सो धनु या
को मनु छिनु छिनु, साँई साँई साँई साँई साँई
संतिरस होय॥४॥ इति॥

॥पद चौदमुं॥

॥राग श्रीराग॥ अब अतमासा छेडला

ख्या॥२३॥ ऐसी बात है दोनु बेरे, पिछला आगि
लासुं कह्या॥ अलजना॥१॥ आय नबू भले ब
न पीछला, तब आगिला दुरि हु दोरे॥ पिछला
बेरस बेख्या या है, आगिला दोरताहि दोरे॥ अ
लजना॥२॥ मोह भाउडा येन जियारे, आगिल
आंखो मुहि मगे॥ पिछला आपरा छिनु छिनु
अरडे, उयरे अंबर बय लगे॥ अलजना॥३॥ तब
प्रभुने ऐक ओर पठाया, ऊने बय आगिला
जांच्या॥ पिछला तबयें रहा उदासी, साहिब ने
बहु सुख साध्या॥ अलजना॥४॥ ऐक नीय अति
ऐकहि मध्यम, ऐक उत्तम प्रभु कुं प्यारा॥ याति
नोंकु बिनय पिछान्यो, रहो अधम सेंती न्यारा
॥अलजना॥५॥ इति॥

॥पद पन्नरमुं॥

॥राग लेखा॥ लगो प्यारें लयो सुजिह॥

न, श्री तीर्थंकर उदयो भान॥ भगो०॥ अरे क॥
पाये भविक मन कमल विकास, उड गये औ
गुन भरम उदास॥ भगो०॥२॥ नयन उघा
री विलोके कंत, मोह तिमिर सब भाग्यो अंत
॥ प्रगटी ज्ञान कला की ज्योत, मुगति पंथ स
ब भयो उद्योत॥ भगो०॥३॥ सुपन में मूंझी
रह्यो मेरे लाल, इन विधि गया अनंता काल॥
अब सुहने का छोडा ख्याल, या सब झूठा मि
थ्या जाल॥ भगो०॥४॥ पाया अपावन माया से
ज, उसपर विकार चेतना हे भ्रा सुकल ध्यान
पखारो अंग, युं प्रगटे तुम निर्मल रंग॥ भगो०
॥५॥ विधि निरखो जिन राज जिनंद, कहे मति
नाशी मिट्यु निद्रा आप संभालो जोती नेत,
विनय करी विनवो विधि चेत॥ भगो०॥५॥

॥ पद १ सोलमुं

॥राग॥ कुसेनी॥ कुहाके जोर जेसी रमत ल्यो ज
गारी॥ ऐसी॥ सुन सुहागिन जे दिलकी बा
त हमारी॥ टेक॥ में सोदागर दूर बिदेशी, सोदाक
रने आया॥ देखत तोकुं भूलि गया सब, तोहि
सुं चित्त लाया॥ सुन०॥१॥ निसी वासर तेरे र
सराता, अपने काम न सूझे॥ तेरे विरह दरदतें
करधूं, ज्युं दुस्मनसें झूझे॥ सुन०॥२॥ सुंदरी तें क
छु काम न कीया, तुझ बिनु पलक न लेवा॥ लोचन
लागी रहे तेरी आसरय, और कछु न सोहावे॥ सु
न०॥३॥ अरथ गरथ सब तुझे बिलाया, हमरा
ओकन कमाया॥ ज्युं कर लीजे मिलुं सांईकुं, त्या
या कछु न लाया॥ सुन०॥४॥ विनय वती तुं मेरी
पियारी, मेरे आज करी कुशीयारी॥ मुंहसी करे
तो मिलुं सांईसुं, अविहड करे भयारी॥ सुन
०॥५॥ इति॥

॥पद सत्तरमुं॥

॥राग ऊपर प्रमाणे॥ काया कामनी जेला
ल, सुनी कहै पिउडा॥ मेंकुं छंडी जे लाल, तुं मेरा
पिउडा॥ पिउडा सुनि जे कहुं विनती, मकरी
ओरसें नेहरे॥ दो दिवस कीया दाम होवत, के
त छिनु में छेहरा॥ १॥ तुं गुमास्ता जे लाल, अप
ने शेठ कामके न्यायगा जे लाल, कुकमी ठठका॥ ठ
ठका आवे हुकम नज तुंही, पलक छेक न रा
के रही॥ तो कहा मूरख करे धंधा, अंते तेरा
कछु नहीं॥ २॥ हां तेकुंआजे लाल, अपने सां
ईका, नाकु चोरीजे जेलाल, नाहक पाछेका॥
पाछेका नाहक चोरी ऊपनका, नज नविदेस
नजा परे॥ तज ताहिकुं दूर होजाज, होषदे
जे आपरे॥ ३॥ सोदा हककहा जेलाल, ऐ
सा कीजीअें, होवे कायदा जेलाल. साहि

जरीझी ओं॥ रीझीओं साहिब युं निवाहे, आ
प दुःखतें छोडे रे॥ विनती एतनी मानी जालि
म, बेपरवाही मत करो॥३॥ तुं परदेशीका बेला
ल, पंथी प्राहुणा, प्रीतमें बांधी बेलाल, क्युं
रहुं तो विना॥ तुं विना, क्युं करी रहुं दुःखल
री, सतीयुं संगे चलुं॥ सांईका करी विनय
सज्जन, युं अलें तुम मिलुं॥५॥ इति॥

॥पद अठारमुं॥

॥राग आशावरी॥ कहा करूं मंदिर कहा
करूं दमरा, नरभवनुं कहुंतु ठीक जो ठगा तमरा॥
नेरी नेरी गरजे छोरी कुमाला, ठीक गरजे
पंखी पड रह्या माला॥ कहा०॥१॥ टेक॥ प
वनकी गंठरी जैसें ठराठी, घरन भसत आ
य जैहे भराठी॥ जगनी जुआनी काहेकी
आगा, दीप ज्योपे तन जैसें डील राग॥ कहा॥

साथि ऐसे तईयर कुंजकुं न मोरे, मारिक घोरा केतेक ढोरायुं जेकी हेरी तूरक थंत्या, कहां भेले हैं सारे जो अर्थं त्याग कहणा॥३॥ फिरि फिरि आवत अंत उसासा, सांपरे तोरका ऐसा विश्वासा॥ या दुनियांकी झूठी है यारी, जैसी बनाई बाजीगर बारी॥ कहणा॥४॥ परमातम अविचल अविनासी, सोहे शुद्ध परम पद वासी॥ विनय कहवे साहिब मेरा, फिर न कई आ दुनिया मेंरा॥ कह० ॥५॥ इति॥

॥ पद ओगणीशमुं॥

॥ राग काफी॥ किसके चेले किसके पूत, आतमराम अकेला अवधूत॥ जिउ जनले॥ अहो मेरे ज्ञानी कघर सुत॥ जिउ जनले, दिल मानलो॥१॥ आप स्वारथ मिलिया अनेक, आये इकेला जावेगा एक॥ जिउ०॥ कि०॥२॥

दीगिरंदकी मूंठ गुमान, आनके माल गिरेंगी
निधना।।बिना।।दिना।।३।। तीसना पावडनी जर
जर, आजु काहेकुं सायो गोरा।।बिना।।दिना।।४।।
आगि जंगि ठी नावेगी साथ, नाथ रमो गे
आली हाथ।। बिना।।दिना।।५।। आशा जोली प
तरलोल, विषय लिप्सा लरी लायो थोल।।
बिना।।दिना।।६।। करम की कंथा डारो दूर, विनय
विरळने सुज लरपूर।।बिना।।दिना।।७।। इति।।

।।पद वीशमुं।।

।।राग आशावरी।। घोरा जूठा केरे तुंम
त लूसे असवारा ।।रेका।। तो कि मुथा अजग
तुके प्यारा, अ अंत होयगा न्यारा।। घोरा।।
शायरे पील अकुडरे केहसुं, ऊंवर पाले अग्र
रा।। जनकरे तज सोया याहे, आनेकुं कुशी
आरा।। घोरा।।२।। जूज जलना जरप

सिखावें, यो सजन्या मत प्यारा॥ अबवारी
डु अवसर होवे, तब गलिया होवेग भारा॥
योबजाजगा छिनु नाता छिनु प्यासा होवे, जि
न भत बहुत डरावन हारा॥ दूर देर जंगल
मेंडारे, भूरे घनी जियारा॥ घोरा॥ आकर
हो पोडडा पातुरयो कुस, यो पाजक दोय प्यारा॥
ईन घोरेकुं विनय सिखाओ, युं पावो भव पा
रा॥ घोरा॥ पा॥ इति॥

॥पद अेकवीशमुं॥

॥राग आशावरी॥ पांच्यो घोरे अेकु रथ
जूता, साहिब उससे तितर सूता॥ अेकु ऊ
सकुं मद मतवारा, घोडेकुं डरावन हारा॥ पां
चो घाटेडा घोरे जूडे ओर ओर पाहे, र
थकुं फिरि फिरि ऊवर वाहे॥ विषम पंथ पिकुं अेप
अधियारा, तो लिन न्लगे साहिब प्यारा॥ पां

चोथा॥३॥ नेडु रथकुं दूर होरावे, नेमजर सा
हिब दुःख पावे॥ रथ खंगालमां जाय असुझे,
साहिब सोचा कुछु मन बूझे॥ पं॥ चोथा॥४॥
चोर छगोरे ढिहां मिलि आवे, दोनुं कुं मरप्या
ला पाओ॥ रथ खंगालमें जरण कीना, माल
धनीका ढिहारी लीना॥ पं॥ चोथा॥५॥ धनी ख
ज्या तब नेडु बांध्या, रासी परांना ले सिर सां
ध्या॥ चोर लगे रथ मारग लाया, अपना या
ख विनय लिखी पाया॥ पं॥ चोथा॥ पा॥ इति॥

॥ पदछावीशमुं ॥

॥राग सोरठा॥ चतुर विचारो चतुर विचारो, ते कुण
कहियें नारी॥ पीछाथी स्रण ओकन रहे अ
लगी, कुलवंती अति सारी॥ चतुर॥१॥
नाचे माचे पियसुं राचे, रमे खमे पीय सा
थें॥ अेक दिने साजापी तरुणी, नवि

चढुं चाये हथें जा॥५०॥ राती चीर चीवर पहेरी
सा सुंदरी, ऊंडे पाणी पेसे जा॥ पण जीज
ये नहीं तस अंछ, अपर जे जग दीसे जा
॥५१॥ आचारज ढले मरे तत काले, आत
पयोगें जुये जा॥ अंधारामां जे निसि
जय, तो देखाडुं दीये जा॥५२॥ अवधि
उडुं छुं मास जे कुनी, आपो अरथ विचा
री जा॥ कीर्त्ति विजय वाचक शिष्य जंपे,
सुध जननी बलिहारी जा॥५३॥ पा॥

॥पद त्रेवीशमुं॥

॥राग आशावरी॥ जोगी ऐसा होय फिरुं,
परम पुरुषसुं प्रीत करुं॥ औरसें प्रीत हरुं॥ जो॥
निरविषयकी मुद्रा पहेरुं, माला फीराउं मेरा
मनकी॥ ग्यान ध्यानकी लाठी पकरुं, भभूत
चढाउं प्रभु गुनकी॥ जो॥ शील संतोषकी कं

था पहेरुं, विषय रसानुं धूणीा पापुं योर पेरें करी पकडुं, तो हिलमें नहोय योरीकुंणीा ३॥ अबर लेहीमें जिनमत तेरी, शाम सीगी अलणीा घर अंतर निरंजन जेठे, यासुं स यलणाीाशा मेरे सुगुरुने उपदेश दियाहे, निरमल जोग बतायोा विनय कहे में उनकुं ध्यावुं, जिने सुध्ध मारग दिखायोा पा इति

॥पदसोलीशमुं॥

॥मगध देश को राज राजेसर॥ए देशीा

बंगालथी एक आयो योपट, नयर वसंतो दीठो ए नवि जोये नवी नासे त्रासे, जेसे थिर अति धीठोा शायतुर नर अर्थ वियारी कहियो यतु राई निव रहीयें, यतुरनरशान्नही तो गरव न व हियो यतुणा एयालाा जय दया पालक रंगीलो, आवियो तुम काम, अंगुल लघु युग

गुरु सरधारे, लिपि अक्षर तस नाम ॥२॥ धनरिपु तसरिपु तसरिपु सेवक, मंदिर नंद न जैहा ॥ तरुणो पण निज दारि जोले, जेलेछे नितनेहा ॥३॥ रोग रहित काया अति निर्मल, पण तस एक विकारा ॥ पीछे पीछेने नारे नाखे, न रहे पेरे आहारा ॥४॥ मात तसहोदर तास नपुंसक, पासे जेहुं सो हा ॥ विनय लाएंगे अर्थ कहेते, पंडित नां मन मोहा ॥५॥ पा छति ॥

॥पंदपचीशमुं॥

॥राग आशावरी॥ साधु लाई सोहे जे न कराणी, जाकी सुरत भूल घुन लागी ॥सा०॥ परेका॥ सो साधु अष्ट करमसुं जगडे, सुन जांधे धर्म शाला ॥ सोहं शब्द का धागा सांधे, जपे अजंपा माला ॥ साधु॥२॥ गंगा यमुना

मध्य सरस्सति, अघर वहे जलधारा॥ करीअ
स्नान मगन हुई बैठे, तोड्या कर्मदल भारा॥
साधु०॥३॥ आप अभ्यंतर ज्योति बिराजे,
बंकनाल ग्रहे मूला॥ पच्छिम दिशाकी खडकी
खोलो, तो बाजे अनहद्दतूरा॥ साधु०॥४॥
पंचभूतका भरम मिटाया, छठे मांहिं समाया
॥ विनयप्रभु सुं ज्योत मिलि जब, फिर संसा
रन आया॥ साधु०॥५॥ इति॥

॥ पद छवीशमुं॥

॥ राग गोडी॥ शांति तेरे लोचन हे अनि
यारे॥ शां०॥ टेक॥ कमल ज्यौं सुंदर मीन ज्यौं चंच
ल, मधुकरथी अति कारे॥ शां०॥१॥ जाकी भलो हरता
जुत जनमें, फिरते हरिन बिचारे॥ चतुर
चकोर पराभव निरखत, जपरे चुनत अंगा
रे॥ शां०॥२॥ उपशम रसके भरूज चकोरे,

मानो जिरंची संभारे॥ कीर्त्ति विनय वाचकको विनयी, मोकों हे अति प्यारे॥४॥५॥ इति॥

॥पद सत्तावीशमुं॥

॥राग गोडी॥ तोलों मेरे जैरे फिर आवें गे, जउ लउ मेरे प्यारे पीयुकी, लेलेसें लन पावेंगे॥ तोलों॥१॥ विरह दियानी फिरुं ढुंढती, सेज नसाल सुहावेंगे॥ रूप रंग मेंजन मेरी सखियां, पीयु जिन केसें देखावें गे॥ तोलों॥२॥ नाथ निरंजनके रंजनकुं, जोतसिंगार बनावेंगे॥ करसें बीना नां दनगीना, मोहनके गुन गावेंगे॥ तोलों॥ ३॥ देखत पीयुकुं मानि मुगताफल, भरी भ री थाल बधावेंगे॥ प्रेमके प्याले, ग्यानकी याले, विरहकी प्यास बुजावेंगे॥ तोलों॥४॥

सदा रही मेरे जीउमें पीउजी, पीयुमें जीउ
मिलावेंगे।। विनय ज्योति सें ज्योत मिलेगी
तज दिहां येह न आवेंगे।।तो।।१।। इति।।

।।पद ३२ दुवीशमुं।।

।।राग धन्याश्री।। मेरी सजनी ऋषभ
चंद्रानन नमुं, वारिषेण जगचंदा।। वर्द्धमा
न जिन प्रणमियें, जहीयें सुख अनंत।।
मेरे आतम सासय जिन मुज वंदय, जिम
सासय सुख होय।। मेरे आतम।।१।। अ
धोगुणी।। भवन पतिनां भवन जे होत्तेर, जा
जने सात क्रोडी। अलहते प्रासाद कह्या, जिनया
रनमुं कर जोडी।। मे।।२।। ज्योतिषी व्यंतर
तणा जे, नगर विमान असंख।। तिहां अ
संख्य प्रासादे कह्या जिन, च्यार नमुं सह
संख।। मे।।३।। तिर्छे लोके गुण सहु जी,

अधिक शत अठ्ठीश॥ जिन भवन तिहां
च्यार जिन जे, नमतां पूगे जगीस॥ मे०॥
३॥ लाख चोरासी सहस सत्ता, णवइ
अधिक वीश॥ ऊर्द्ध लोक सासय जि
न जे, नमियें नामी शीश॥ मे०॥ ४॥
पंच वर्ण ऊदार मणिमय, सात हस्त प्र
माण॥ केई धनुस्य पंच परिमित, अे जि
न मूरति जाण॥ मे०॥ ५॥ ईंद्रादिक सुर
सयल पूजे, करे समकित शुद्ध॥ केसर चंदन
अगर पूजन, सबै भाव विशुद्ध॥ मे०॥ ६॥ घ
णा सुरवर लहियें जिनपद, पूजतां जे जिन
चार॥ ध्यान धरतां अेह प्रभुनुं, लहियें भ
वनो पार॥ मे०॥ ७॥ श्री कीर्त्ति विजय उ
वझायकेरो, लहे अे पुण्य पसाय॥ सास
ता जिन थुणियें अेणीपर, विनय विजय उ

वजाया॥मेरा॥५॥इति॥

॥पद ओगणत्रीशमुं॥

॥राग भूपाल॥ श्री विमलाचल मंडन जि
हि जिना, प्रह ऊठी वंदो जे उमनां, माता मरु
देवा नंदना, भावें दीठो नयन आनंदना॥
वि०॥१॥ रवि ऊदयो जग पंकज वना, वि
सत कूरां आलि जंघनां॥ होवे निंदित ने नि
न लोचनां, आतम हित मन आलोचना
॥वि०॥२॥ चंचल जे तन चल जोबनां, जी
ने सरण नहो जिन जुवनां॥ भाजे सहु
जकरोर जुवनां, कहि विनय भने जगजी
वनां॥वि०॥३॥इति॥

॥पद त्रीशमुं॥

॥सुज पूरण सोभागणी, प्रभु पा
स जिणंद॥ राग रणरोग रण भयहरे, जि

मधन अरविंद॥ सु०॥ २॥ अश्व सेन वामा
तणो, सुतनमे सुरिंद॥ नाम जपतां तेहनुं छू
रे नव फंद॥ सु०॥३॥ पणि भावठे सानिध करे,
धनद धरणिंद॥ नवे स्वामी जेह चित्त
युं, मधुकर अरविंद॥ सु०॥ ३॥ मनुदेजीम
न उलसे, जेम कुमुदिनी चंद॥ सार वखत
वंछित तदीयो, जेम विनय नणिंद॥ सु०॥ ५॥

॥पद अेकत्रीशमुं॥

॥रागरामकली॥ अजब जोत हे तेरीहो
आतम, अजब जोत हे तेरी॥ तुं परमातम
तुं परमागम, लबधि रिद्धि सब तेरी॥ हो०॥
१॥ सिद्ध बुद्ध हे तुं सिद्धि साधक, तुं गुनकुं
सम चंगेरी॥ तेरो गुन गोरस गुनवेकुं, मु
दित भई मति मेरी॥ हो०॥ २॥ चिदानंद चे
तन तुं चातुर, सुरति सुध्य तुंहे चेरी॥

भूलो कहा भमे या भवमें, भई अनंती फे
री॥ हो०॥३॥ दूर नहिं आ घटमें तो है सज,
ब्रह्म ग्यान की सेरी॥ माया मोह तिमि
र हल, ग्यान कला गति घेरी॥ हो०॥४॥
विनय स्वरूप संभारो अपनो, दुर्मति दू
र उवेरी॥ आपही आपसों आप विचा
रो, मुगति भई अब मेरी॥ हो०॥५॥ इति

॥पद छत्रीशमुं॥

पराग रामकली॥ अब क्युं न होत उदा
सी, हो आतमा॥ अब क्युं न०॥ ए आंक-
णी॥ ऊजर पजर घर घेरी रही है, क्युं तु
म आशा दासी॥ हो०॥१॥ निसि जास
र ठीन सुं तुम जैसो, होत जलक मां हांसी
पछोरो विषम विषय की आसा, क्युं नि
कसें भव फांसी॥ हो०॥२॥ पूरण भई न

उनहीं जिसकी, दुरमति देत विसासी॥ जे छोरी नहीं खोजत धनकी, तो उहा भये संन्यासी॥ होना॥३॥ इहि सुमति पर राणी, देखो हृदय विमासी॥ मुझ रहे होज्या मायामें, जे ते छोरी तुम त्रासी॥ होना॥४॥ आशा करो जेह विनय विचारी, अविचल पर अविनासी॥ आशा पूरण जेह परमेसर, सेवो शिवपुर वासी॥ होना॥५॥ इति

॥पद तेत्रीशमुं॥

॥सरसति पाये लागुं, मागुं वचन विलास॥ विजयाणंद सूरिंदनी, लावें लाण थुं न्यास॥ सहगुरुना गुण गातां, माता होई सुज पास॥ नर हरि नारी सारी, होय घर अंगण दास॥१॥ सकल कला अन्यासी, वासी रहे सुगम॥ श्रीमंत सा

हनो नंदन, वंदन अति अभिरामा महिमां
हे महिमा निधि, जस तणुं वर नाम गान
पथी पाप टले सब, लहियें दोलत दामा
रा जस तणा गुण गावे, छावे देश विदे
शा चरण कमल आणंदे, वंदे सयल नरेस
ा तास तणा गुण जोडुं, जोडुं मुगति नि
वेशा मानव भव मुज ब्हां, दीहा स
फल फरेसा ॥३॥ सिणगार देवनो भयो,
गायो भक्तियें भावा पुण्य अनंतां ली
धां, सीधां वंछित काज सौभागी वैरा
गी, सुंदर मुनि सिरताजा भव सायर ते
तारे, तारे जिम वड वहाणा ॥४॥ कीर्त्ति-
विजय उवझाय, पसाय लहि भले भा
वा गच्छपति गायो पायो, जिनवर सरसे
भावा जिहां लगें चंद दिवाकर, मानस

न मन लावा॥ नि हसगें कर्पूरता गुई, होले पुण्य फल लावा॥४॥

॥पद छवीशमुं॥

॥राग॥ प्रभु जिन वेथा कर लागे, प्रभु जिन वेथा कर

ला॥गो॥ आंकणी॥ ऐसा मन में चिंता रहित होंहि दुःख ल्पर

न मोला॥ गोत्र॥ आंकणी॥ गुरु कृपा शब्द नीर तरकसमें,

उरे उमान जिवारी॥ साथे सो रन समसेर

कुमार, तोग्याल थोडे असवारी॥ प्रभु॥ णा॥ गो॥ रय

ढाल पखीला डीया, ये हेरे नाम लिखाया॥ सत्य ढाल

संतोष कमामी, तेज आ पालक लाया॥ प्रभु॥ २॥ प्रेम

प्रीत जिय अमत दीना, तुरत प्रराता लेजा॥ धा॥ नामप

अना लगत अकुशा॥ तो पुंज पाकरी पाघा॥ प्रभु॥ ३॥

हासाल दाम षरच कछु नांही, ता उपर करेन होंघा॥

विनयकुं दरसन डेमहो जिन मत, लाग्य वि

नान हाघा॥ प्रभु॥ णा॥ ४॥

॥पद सत्तावीशमुं॥

॥अजित आदि जिन ध्यायो, चरणा
रविंद शीश धायो॥ चल ठाह्यो भलु भुज सूर॥
आं०॥१॥ सोम सुक्तित लयो, चिहुं जो
ड आनंद लह्यो॥ भलु भुजहेमतपेंद शी
तल नरपूर॥ आं०॥२॥ घर घर मंगल
छायो, बुद्धि विवेक आयो॥ गुरुके चरण धायो,
सुन्दर समकित पायो॥ आं०॥ शनी केतु राहु
खसायो, विनयपद तिहां पायो॥ नव निधा
न सुख शिववधू परणायो॥ आं०॥४॥ इति

॥पद छत्तीसमुं॥

॥परम पुरुष तुंहि अकल अमूरति यु
ही, अजल अगोचर रूप, नर ज्यों न जात
है॥ परम०॥१॥ तिन जगत रूप, परम
वल्लभ रूप, एक अनेक तुंही गिन्यो न गि
नात है॥ परम०॥२॥ अंग अनंग नांहिं,

त्रिभुवनको तुं सांई, सब भुवनको सुखदा
ई, तुझमें सोहात है॥ परम०॥३॥ तुम अनं
त तेरा, ब्रह्मा हुन पावे घेरो, ईंद्र ईंद्रादि
केहेरा, ताकुं नहिं पात है॥ परम०॥४॥ तुंही अ
विनाशी कहायो, जीसे में न कबही ध्यायो
विनय करी भले पायो, ताकुं प्रभु पायो है॥ प
रम०॥ ५॥ इति॥

॥पद साडत्रीशमुं॥

॥राग आशावरी॥ माया मोहा ठग
णी में जनी॥ माया०॥टेक॥ त्रिगुन फांस
ले ईकर डोरत, बोलत अमृत बानी॥
माया०॥१॥ केसव घर कमला होई बेठी, संभु
घर भवानी॥ ब्रह्मा घर सावित्री होई बे
ठी, ईंद्र घर ईंद्राणी॥ माया०॥२॥ पंडित
कुं पोथी होई बेठी, तीरथीया कुं पानी॥यो

गी घर अभूत होई जेही, रावके घर रा
नी माया ॥०॥३॥ जिनें माया हीरो उर
लीनो, जिने यही औरी अनीत कहत वि
नय सुनो अब लोको, तिनके हाथ जिउ
नी माया ॥०॥४॥ इति ॥

॥ इति श्री जशविलास तथा
श्री विनयविलास संपूर्ण ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्रीजिनसिद्धा ऊसाय नमः॥

अथ

॥ श्रीज्ञानविलासप्रारंभः॥

॥ पद पहेलुं॥

॥ राग भैरव॥ यारिस पति श्री यारिस
पार्श्वं, नव निधि श्रीगृह ध्येयं॥ याणाटे
उाल्भक्ति भरनिर्झर गण नमित, नि
त्यं कृमभर्यैयं॥ याणा॥शा॥ रितु शार घ
न वैडूर्य मणि छछवि, रवि कर द्युति सु
शरीरं॥ उल्प मकरंद तकर सम वदनं, द
सन कुंदल हीरं॥ याणा॥रा॥ नमित यनु
पूरण शशि नयनं, शांति सुधारस रू
पं॥ अनुपम उत्कर गुण गण जलधिं,
परमानंद सरूपं॥ याणा॥उ॥ गंभीरो

ल्कर शशरुचि सद्गुण, युक्त वचा मृत पेयं॥ त्रिभुव
नगतत्व विघ्नभूप शमनं, शिवतरु बीज गृहेयं
॥ ध्यान॥ ज्ञा॥ पुण्य क्षला न्वित सुरतरु लभ्यं, वंछि
त पूरण श्रेयं॥ चारित्र नंदि श्री संतति दायक,
पार्श्व चारित्र जिन ज्ञेयं॥ च॥ ७॥ पा॥ इति॥

॥ पद जी खु ॥

॥ राग लैरवा॥ लो रत्नत्रयो छोड लगो म
नुवा, साहिब नाम संभारो॥ लो॥ रे॥ सुता सुता
रयन विहानी, अब तुम नींद निवारो॥ मंगलकारि
अमृत वेला, थिर चित्त ध्यान सुधारो॥ लो॥ १॥
घ जिनवर भेतुं याद करेगो, सुज नीपजेगो सा
रो॥ वेला चीलूं के पछतायो, ज्युं कर ध्यान सुधा
रो॥ लो॥ २॥ घर व्यापारे दिवस वितायो, राते
निंद गमायो॥ इन वेला निधि चारित्र आदर,
ज्ञाना नंद रमायो॥ लो॥ ३॥ इति॥

॥पद ३१वां॥

॥राग भैरवी॥ मेरे तो मुनि वीतराग, चित्त मांहे भोई॥ मेरे०॥ टेक॥ और देव नाम रूप, हूस रो न कोई॥ मेरे०॥१॥ साधन के संघ भेस भेस, भति पांत खोई॥ भजतो बात भूल गए, भनेस जकोई॥ मेरे०॥२॥ घाति कर्म भसम थाए, देह में लखाई॥ परम योग सुध्ध भाव, जायके चित्त जोई॥ मेरे०॥३॥ तंजूतो ग गन भाव, भूमि शयन भाई॥ चारित नव निधि सरूप, ज्ञानानंद भाई॥ मेरे०॥४॥ इति॥

॥पद ३२वां॥

॥राग भैरवी॥ ब्रह्म रूप ज्योति रूप, चित्त मांसं भारूं॥ ब्रह्म०॥ टेक॥ निर्मल भओ रूप निराले, सर्व भाग वीतराग सर्व गुन-भोग परम योग ज्ञान दरश अंउ रूप भगत

न्यास करको॥अक्षमापा॥अक्षय अविचल
गुणगणधामी, परम रूप आतम रूप सिध्ध
सरूप विश्वरूप ज्ञान तरणि शेषि रूप दरश
न्याव न्यासको॥अक्षमाशा॥परमानंद येत
नमय मूरति, रिपु निकंद जोधकंद सुज अ
मंद स्वच्छंद तत्वरंग धारितनंद ज्ञानानंद
न्यासको॥अक्षमा॥७॥ इति॥

॥पद पांचमुं॥

॥राग लैरवा॥अक्ष ज्ञान ज्योति देख, आ
नंद अंग पर्छयां॥अक्षमा॥टेका॥भव्य जन
संसरास, तिन लोक प्रति पाला॥करम वर
ग रहित होय, सासत गुण लहियां॥अक्षमा
॥१॥सहज निरूपद पहियान, शुद्ध अशु
द्ध भाव जना॥सकल परजन विभाव, दू
रथी तजैयां॥अक्षमाशा॥फटिक सम स्वच्छ

मान, विमल गुण गण निधान ॥ परम निधि

चारित रूप, ज्ञानानंद जडियां॥अ०॥३॥

॥पद छठुं॥

॥राग वेलावल॥ साहिब वास पहिचानि

ये, जनो तेहनो लखवा यह जन्या जिन जेत

नु. पाहन सम हावा॥ साहिब०॥१॥ ज्ञाने ज्ञेय

की जेकता, ध्याने ध्येय समाया॥ निज अनुल

व घर लेखियें, कहावे स्यो रमाया॥ साहिब०॥२॥

वेद पुरान में कछु नहीं, नहिं कछु वाके साहिना

ना॥ छंग निधि चारित रूप मय, ज्ञानानंद सुख

ना॥ साहिब०॥३॥ इति॥

॥पद सातमुं॥

॥राग वेलावल॥ या नगरी में क्युं कर रहना,

रान सूर करे सो सहना॥ या०॥टेक॥ नहिं व्या

पार इहां कोइ आसे, नहि कोइ घर मांहे गहना

॥ध्याऊं॥धा॥ तसु कर पण निज दाव विचारे, नेह
निहाले फिर फिर रहना॥ नारी पंचवीसी पर छे सा
थें, रमण करे नित गुणसें कहना॥ध्याऊं॥धा॥ अं
तरित जब जिम अरची पूरे, आखर छेग दिन
हेगा मरना॥ यातें नव निधि चारित संयुत, छे
ग ज्ञानानंद हेगा सरना॥ध्याऊं॥३॥ इति॥

॥पद ४६ मुं॥

॥राग वेलावल॥ साधो भाई ऐसो नायक माया

॥सा॥टेक॥ पांच अनंतक वेस पहिराया, जहु
विध नारक जेल मचाया॥सा॥१॥ लाख चौ
रासी योनि मांहे, नाना रूपें नाच नचाया॥
चवदह राजलोक गत कुल में, विविध भांति कर
भाव दिखाया॥सा॥२॥ अलख नायक था यो
नाहिं, हार गयो कुछ कुनसें नाया॥ यातें निधि च
रित्र सहायें, अनुपम ज्ञानानंद पद पाया॥सा॥३॥

॥पद ८९ मुं॥

॥राग वेलावल॥ अजहीं प्यारे चेतले, घर पूंछ संभारो॥ अ०॥ टेक॥ सहु परमाद तुं छांडदे, निरजो इग संसारो॥ अ०॥ १॥ भगडूरी तुम मत करो, नहिं परगल तुम मायापूंछ तो चोखो घणी, व्यापार वधायो॥ अ०॥ २॥ भिन होय कर मत रहे, पग देज भिलावो, घरमें नि धि चारित गही, ज्ञानानंद रमावो॥ अ०॥ ३॥

॥पद ९० मुं॥

॥राग वेलावल॥ प्यारे चित्त विचारले, तुं कहां सें आया॥ मेरा मेरी कुं करत है, किसकी यह माया॥ प्यारे०॥ १॥ आवनो जावनो एकलो, कुग संग रहाया॥ पंथक होय कर जालमें, कैसें लप टायो॥ प्यारे०॥ २॥ नीसर जवो इस संकेग छिनमें त्याया॥ जे निधि चारित आदर, ज्ञाना

नंदरमाया ॥ प्यारे ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अगीआरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अवधू सुता क्युं ईस
मठमें ॥ अ० ॥ टेक ॥ ईस मठका है कवन भरोंसा,
पड जावे चट परमें ॥ अ० ॥ छिनमें ताता, छिनमें
शीतल, रोग शोग बहु मठमें ॥ अ० ॥ १ ॥ पा
नी किनारे मठका वासा, कवन विश्वास ए तट
में ॥ अ० ॥ सूता सूता काल गमायो, अजहुं न
जाग्यो तुं घटमें ॥ अ० ॥ २ ॥ घरटी फेरी आटो
खायो, खरची न बांधी वटमें ॥ अ० ॥ ईतनी सु
नी निधि चारित्र मिलकर, ज्ञाना नंद आ-
ये घटमें ॥ अ० ॥ ३ ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ जिन जरा तें जेप
जरी जारी ॥ जि० ॥ टेक ॥ प्यार हसावर जेप

डरीतम,जाल लाझोजकु लारी॥जि०॥फिरतां फिरतां लयो तुं नायक, लोभी नाम संलारी॥जि०॥१॥ सहस लाख क्रोडां ऊपर, नाम कुलायो सारी॥जि०॥ जेरा पोतरा जकु घर कीना, जगमें संपत्त सारी॥जि०॥२॥ भूरि जरव्यो लह गयो डेरो, पडगयो टांडो लारी॥जि०॥ विन जरषीतें कवन संलारे, टांडेकी लई जयारी॥जि०॥३॥ पहेले देखी पग लरराखे, निषि यारित तुं यारी॥जि०॥ ज्ञाना नद पद आदरतो, जरव्यो होती सारी॥जि०॥४॥ ईति॥

॥पद तेरमुं॥

॥राग आशावरी॥ योगी तेरा सूना मंदिरक्युं॥योगी॥टेक॥ अकु महनत कर मंदिर चुनियो, अब नहीं वसता क्युं॥योगी॥ पातीसथ रूपल कर अहने पोया, लोग सुर-

लि हरष क्युं॥योगी॥ असम लूत ओ मंदिर ऊपर, घास लगाया क्युं॥योगी॥३॥ राम नाम जेह ध्यानमें योगी, धूनी क्युं की त्युं॥योगी॥ एह विचार करी आई सायो, नवनिधि चारित त्युं॥योगी॥४॥ इति॥

॥पद ५९ मुं॥

॥राग आशावरी॥ अजधू वह जोगी हम माने, जे हमकुं सबजगत जानें॥अ०॥ ब्रह्मा विष्णु महेसर हम ही, हमकुं ईसर मानें॥अ०॥ १॥ चक्री जलवासुदेव हमही, सबजग हमकुं जानें॥अ०॥ हमसें न्यारा नहिं कोई जगमें, जगपरमित हम मानें॥अ०॥२॥ अजरामर अकलंकता हमही, शिववासीने मानें॥ अ०॥ निधि चारित ज्ञाना नंद जोगी, चिद्धन नामके मानें॥अ०॥३॥ इति॥

॥पद पंदरमुं॥

॥राग आशावरी॥ साधो त्याछे नहिं मि-
लियो हम मीत॥ सा०॥टेक॥ मीत जातर
घर घर जरकी, पायो नहिं परतीत॥ सा०॥
जहां जाऊं ताहां अपनी अपनी, मत प-
ख्यांके रीत॥ सा०॥१॥ संसय कउं तो कहे
छिनाला, वलसल कूसे जीत॥ सा०॥ इत उ-
तसें अंध विषयमें जूजी, कैसे करछिन वीत
॥सा०॥२॥ आगम देखत जगनवि देखुं, कि-
मलल लेप पगं रीत॥ सा०॥ तिनथी हव अ-
म निधि चारित युत, इगज्ञाना नंद मीत
॥सा०॥३॥ इति॥

॥पद शोलमुं॥

॥राग रामकली॥ नाना रंग गहत ज्ञा-
न निज, यार दिलारा देखत मास्ता॥ना०॥

ऐसो रंग सुरंग फूली वनराई, नित नित देखं
त रहत उल्लास॥१॥ धरा छोटे मोटे जंतु
विचलइवर, उरम हेतु महमाता॥ पंथ सखी
सुख पवने हिलमिल, अंगो अंग झूले रंगरा
ता॥२॥ केतेई पात झूल झूल झड गये,
केतेई पाके पाता॥ रह गई सांझ पुण वसंत
समय गत, केतेई नय गये झूल झूल पाता॥
॥३॥ झिरमिर धूत पवन योगेश्वर, झल जुद
जुद आवासा॥ छेऊ दिन पर पर सबही चलग
ये, जिम झल जिये अतारसां॥४॥ राउ
लर पालट तई देख्यो वनमें तुरतही भयो हास
सा॥ याते नवनिधि चारिच नंद, ज्ञाना-
नंद सुख भासा॥५॥ इति॥

॥पद सत्तरमुं॥

॥राग रामकली॥ बिल आसा कि जडा भ

ऐसा, पर आसा है गल की फांसा॥नि०॥टेक॥आपहि पर की आस करत है, जैसे पूर करे ते आसा॥नि०॥१॥पर आसा जिन जिन रउ पडियो, रह कर देख्यो खूब तमासा॥नि०॥आसा छांडि के बस कूकर, जरके गलि गलि घर घर वासा॥नि०॥२॥निज आसी की आस करंता, जर पर पूरण होवे आसा॥नि०॥ये है विचार करी जाणे साधो, प्रभो नवनिधि च्यारित जासा॥नि०॥३॥

॥पद अठारमुं॥

॥राग रामकली॥कुण जाणे साहेब का वासा, जिहां रहता है साहिब साचा॥कु०॥रे का साधु होय के ई जल में खूडे, जिम मछली कहे जलवासा॥कु०॥१॥ब्रामण होय कूं गाल बजावे, फेर काठ की माल तमासा॥गो

मुखि हाथें होठ हलावे, तिणका साहिब ले
वे तमासा॥ कुंडारया मुखलां होयकर आंग
पुकारे, क्या कोई जाणे साहिब जेहरा॥ की
डीके पग नेपुर बाजे, सोजी साहिब सुन
ता जेहरा॥ कुंडारया कठ काठ कोई मुहडो बांधे,
काला चीवर पहरे तमासा॥ छोत अछोतका
पानी पीवे, लक्ष अलक्ष लोकनकी आसा
॥ कुंडारया साधु लखे असवारी जेसे, नृ
प घर नीति करे सुख वासा॥ पंचाग्नि कोई
तापतपत है, देह आकरा सहत परवासा॥
कुंडारया जोड द्रव्य आगल कोई राखे, देव
नाम परसाद लगासा॥ घंट जनजडी आप
हीं जावे, जित जित साहिबकुं दिखलाता॥
कुंडारया सरवंगीले सबकुं माने, अपनी
अपनी मतिमें अटकारा साहेब सबन

ख्याल देखे, जग जनकार जब बस भया अनुराग॥ कुंडलिया॥ अब मंतर नहिं कोई साहेब मिलता, जगमें पाखंड सबही दीठा॥ परिच ज्ञानानंद बिना नाहिं, समझे जग में तत कोई प्रीतम॥ कुंडलिया॥ इति॥

॥पद॥ जोगणीरासमुं॥

॥राग रामकली॥ वालो माहरो क्यों न टले परवासा, तुम मत निरखो साहेब पासा॥ वा०॥ टेक॥ जिनु अनुभव ताकुं नहिं भले, देखे कैसें॥ उलसा॥ चाल॥ नहिं मानस नहिं नारी साहिब, नांहि नपुंसक आराम भासा॥ पांचों रंग भले नाहिं दिसे, तामें नहिं गंध रसका वासा॥ वा०॥ नहिं-भारी नहिं हलका साहेब, नहिं रूप नांहि चिन्हासा॥ शीत ताता भले न पा

वे, असमति जंघ आगति गति असा॥वा॥ ३॥ कोई संघयण जाके नहिं पावे, नहिं को ई संठाण निवासा॥ जे देखे तो ओउही सा हिब, अगर जल परमित है सुवासा॥वा॥ ४॥ सो साहब तु अपना मठमें, निर जो थिर चित्त ध्यान सुवासा॥ चारित ज्ञा नानंद निधि आधर, ज्योति रूप निज आ व विलासा॥वा॥ ५॥ इति॥

॥ पद छवीशमुं॥

॥ राग रामकली॥ जिन जिन मन काउ

साधो, साहबकी गति हैगी न्यारी॥ अं॰ ॥ एक॥ उतपाद व्यय स्व परयाये, एक अ नेक ईश है पुन सारी॥सा॥ १॥ थिरता ए क समय गत जाके, उतपाद व्यय पण ध्रुव सारी॥ अस्ति नास्ति नास्ति जास्ति है

आगम मांहे द्रव्य विचारी॥सा०॥२॥ जैसी
जात हम कुंदकुंद भनी, तिनही मुख सुन
नांहिं संसारी॥ परम नयन कर नहिं ह
म निरखी, अनुपम साद वाद गुण धारी
॥सा०॥३॥ षट निक्षेपें सात नये कर, सा
तें भंग समाधि संसारी॥ निधि चारित्र
ज्ञानानंद अनुभव, निहचे साहेब भणे सा
री॥सा०॥४॥ इति॥

॥पद एकवीशमुं॥

॥रागगोडी॥ सुनो चिदातम तुमसें वि
चरो री, जं हनवनकी सचल करोरी॥सु
०॥टेक॥ मेरजापको जाप मनोहर, ज
हु विध तरतल चिर धरोरी॥सु०॥१॥
नारी समी युत तरतल जेस्यो, दुःख
सुखकी सहु वात करोरी॥ दुग मंतरी

परिकर युत शालो, आयो अंगो अंगभिरेरी॥ सुणारा॥सासु आठ सखीयुत आई, मनकी भोरूं भिन्न बिकस्यो री॥ परमरालको परिकर सघलो, आय मिल्यो मन शुध्ध विकस्यो॥सुण॥ आह्व चेतन सहु निज परिवारें, वसतां अनु भव वात करेरी॥ निधि चारित्र ज्ञाना नंद सार्थे, ज्ञान लहर पामे ललीय परेरी॥ सुणा शाधृति

॥पद इक्कावीशमुं॥

॥राग टोडी॥ दूर रहो तम दूर रहो तम दूर रहो री, मोसुं तो तम दूर रहोरी॥ दूणा टेक॥ तैं तो दिल अमने दुःख दीयुं, थारे संग कर सुख न लह्योरी॥ दूणा॥ तीन लोककी ठगनी तूंही, तुझ सम न हीं कोई अह्यो कुवेरी॥ मीठो बोली फिरि दय पैसे, लाड करे अहु लांत परेरी॥ दूणा रा साग रभेतुं थापहल ताजे, पाछे गोतो देय टरेरी॥ तुझ

कुरिजा का कुवन भरोसा, जोसतही तुं घात
करेरी॥तूं॥३॥ छेहां सेती लुं दूर परीम, छेहां था
री मति नांहि लहेरी॥ष्यारित ज्ञानानंद रंग
वालो, अम प्यारी मोरे पास रहेरी॥तूं॥४॥

॥पदत्रेवीसमुं॥

॥रागटोडी॥ तूंही पिया मन भमतो मि-
ल्योरी, ओर ठोर मन नांहि मिल्योरी॥तूं॥
टेक॥ हुं तोसुं कछु नहिं याकुं, केवल संगें रमन
करोरी॥तूं॥१॥ केवल तन मथ जेमल लायो,
मोसुं प्रेमें प्रीति करोरी॥आठ दृष्टि साजि आ
तम साथे, यात करो तम सुज वयरोरी॥तूं॥
२॥ मनुवो सुलकर घरनी जानी, पास वसा
रे प्रीत करेरी॥ष्यारित ज्ञानानंद सम्हाये, वाको
चीरक चित्त धरेरी॥तूं॥३॥ इति॥

॥पदच्योवीसमुं॥

॥२॥जरोडी॥ प्यारे तुम चेतन ग्यान करोरी, शांति खडग तुम तेग करोरी॥ प्या०॥टेक॥ धरम राज लसकर तुम साथें, मोटो मंतरी संग करोरी॥ प्या०॥१॥ मोहराज मकरध्वज गज पर, आयो तन जिन कोप करेरी॥ चेतन सुत मंतरि युत जकु लसकर, रण कारण सावधान करेरी॥ प्या०॥२॥ याको संयम बखतर धारी, धरम रोप धर खडग गहेरी॥ आगम साथें रण में झूके, दुर्धर रिपुदल हनन गहेरी॥ प्या०॥३॥ सातनो जय कर तीन पछाड्या, आठ शोलनो घात करेरी॥ एक एक पर छगते माडूं, चोथो क्रोधनो घात करेरी॥ प्या०॥४॥ दशमे सुजस ढोल पिछाडी, हूयो आरम हनन करेरी॥ मोहराजने गजसें पाड्यो, एकहि हाथें घात करेरी॥ प्या०॥५॥ रूपत नगारो

तेह चलयो, तेरमी भूमें सुख विचरोरी॥३॥ चो थी होय घडी रण लंती, थारित ज्ञानानंद वरोरी॥प्या०॥ ॥इति॥

॥पद पच्चीशमुं॥

॥राग तोडी॥ मेरो पियाहे परम सन्यासी, क्यन करे हे पियाकी हांसी॥मे०॥टेक॥ चरलित ईडा पिंगलामारग, सुषमना घर अलिलाषी॥मे०॥१॥ यम नियम आसन अनुरंगी, भत्या हार ध्यान धारण वासी॥ प्राणायाम समाधि सुरंगी, मूलोत्तर सुविलासी॥ मे०॥२॥ रेच्य कपूरक कुंभक लोरे, जाहर मनध शकारी॥ परम रंध्र मध्यगोहे पूरी, अनहद नाद विचारी॥मे०॥३॥ जाहर योग युगति सकु थिरता, आतम ध्यान विलासी॥ पांचचरण पण तत्व सुदर्शी, परमातम गत लासी॥मे०॥ज्ञा

परमातम अनुसारे करता, निज सहु भाव वि
लासी॥ चारित्रज्ञाना नंद संन्यासी, अने
तिण निजवासी॥ ८॥ पार्श्व॥

॥पद छवीशमुं॥

॥राग आशावरी॥ कैसें विचार क
रो भाई साधु, दिव्य विचारें मन आराधो
॥ कै०॥ टेक॥ अ परथम सिध्ध गति अनुभ
वियें, संसृति विण कहो सिध्ध होय साधो॥
कै०॥१॥ संसृति चउगति भेद कहावे, तीन भे
द तीगवेद सु अने॥ नारक तिरिजें परथम क
हियो, निर भर नर जिन तें कैसें भाखे॥ कै०
॥२॥ चउगति परथम भेद जाणुं, नर नारी
कुण पहिले भयो॥ जीव अड पहिले कुण
कहियें, इंग विना इंग किहांसें आयो॥ कै०
॥३॥ छेलडी आदि किहां कुण आगे, आगम

छिव्य विचार प्रमाणो॥ चारित ज्ञानानंद अ
नुभव, असहु भाव अनादि जजानो॥ कै०॥४॥

॥पद सत्तावीसमुं॥

॥राग आशावरी॥ अद्भूत अक अचं
भो है जो, अजतक अनु नहिं ठोर्छ लेभो॥ अ०॥
टेक॥ जंगल मांहे मोटो चरणो, कुघन जनायो
चाले ते पेखो॥ अ०॥१॥ छोटीसी कीडी तेहने
डातें, आठ पहर अहनिसि मन लायो॥
चालत चालत थाकत नांहि, इतिनो जल या
में किहांसे आयो॥ अ०॥२॥ कूअडी तेहनी
नहि कहिं दीसे, शल्मने कहां राणी लायो॥
सघला ठ्ठे बनने चरणो दीसें, आगल पा
छल कून दिजायो॥ अ०॥३॥ कीडी थाकतां
चरणो न चाले, कैसो भयो हरामी देखो॥
तिनतें चारित ज्ञानानंद को, आप मते रहे

तम ते पेजो॥ ज्ञा०॥ ४॥ इति॥

॥ पद अठावीशमुं॥

॥ राग आशावरी॥ अद्भुत ओक अ
चंभो भारी, निरख समज आपो आपवि
चारी॥ ज्ञा०॥ टेक॥ पारावार रहित सागर
बिच, नाव ओक जिहां निरखो भारी॥ डांडी
पांच चलावे भमुं, पतवारी ग्रहे सुखकारी
॥ ज्ञा०॥ १॥ चउ दिसि चिंतित पार परंपर,-
भीतर साहेब सुता सारी॥ चउ दिसि तेल तरं
ड फिरत हे, चासो साहेब गोकुल भारी॥ ज्ञा०
॥ २॥ शील सुनत ओर जोरे साहेब, भाल गजे जि
हां तस उर सारी॥ चारित ज्ञाना नंद संभारी,
आनंद हरख लहे कुशि आरी॥ ज्ञा०॥ ३॥ इति॥

॥ पद ओगणत्रीशमुं॥

॥ राग आशावरी॥ राम राम सज ज्ञा

किमाने, राम राम को रूप न जनो॥राग॥देश॥
कवण राम कुण नगरी वासो, कहांसें आ
यो किहां जयो वासो॥राग॥धा॥राम राम
सहु जगमें व्यापी, राम विना है कैसे आ
लापी॥राम विना के जंगल वासो, पाछे को
ई जकी नकरे आसा॥राग॥२॥राम किरा
जन राम कि राणी, राम राम कि हैरो तानिय
रटन करत है कवन राम को, कैसो रूप जता
वो वाको॥राग॥३॥ले केई वाको रूप जता
वे, तेहिज सांचो मुज मन भावे॥सो निधि
चरित ज्ञानानंदें, जने आपनो राम आ
नंदे॥राग॥४॥इति॥

॥पदछत्रीशमुं॥

॥राग आशावरी॥योग समाधि यो
ग आधारो, आगम मांहें तत्त्व विचा

रो॥यो०॥टेक॥ ज्ञानन परले जार डीलारे, अ
नुपम अेक नगर सुज ज्ञारो॥यो०॥१॥ अ
में जीव अनंत रहाहे, गुण समरथ ते गिण
तां भालो॥ साहि अनंता आयु लेहलो, अ
हु विध परिगल रिध्दि जानो॥यो०॥२॥
ऊंच नीच किहां नेह नांहीहे, सब जन लूप
ति भाव निहालो॥ चारित ज्ञाना नंद संभा
लो, जिम पामो पुरिवास विशालो॥यो०॥३

॥ पद अेकचौशमुं ॥

॥राग कुमरी॥ मंदिर अेक बनायाहम
ने॥ मंदिर०॥ टेक॥ जिस मंदिरके दश दरवा
जे, अेक गुंडी मायारे॥ नाने पंजी अनेक अं
तर, गज्ज कोरे चित्त लाया॥ मं०॥१॥ हाड मां
स जेके नहिं दीसे, रूप रंग नहिं न्यारे॥ पंज
न दीसे उहसे पिछलुं, षट रस भोगे भायारे

॥मं०॥२॥ जातो आतो नहिं कोइ देखे, न
हिं कोई रूप बतावे॥ साजन जग आयो तो
पण भूखो, तृप्ति कबहिं न पावे॥मं०॥३॥
आतम पंखी आतम मंदिर, पाछें अनभव ता
वे॥ वह पंखीको जे कोई जाने, सो ज्ञाना
नंद निधि पावे॥मं०॥४॥ इति॥

॥पद बत्रीशमुं॥

॥राग धमरी॥ ईतना काम करेंगे जो
गी, सोई योग न जानें रे॥ई०॥टेक॥ मूंड
मूंडाया भस्म लगाया, जोगी नाहम जानें
रे॥ अंतर पहेरी रणकुं जूतें, सो योगी ह
म जानें रे॥ई०॥१॥ राज वस कर पांचों
जूते, दुर्धर देयल मारे रे॥ प्यार करके सो
लपि छाडे, सोई योग सुधारे रे॥ई०॥२॥
॥ जगत भावें सरव समय रहे, परम या

रिष कहावे रे॥ ज्ञानानंद लहेर मत वाला,
सो योगी मन लावे रे॥ इत०॥३॥ इति॥

॥पद तेवीशमुं॥

॥राग कूमरी॥ या दिलकुं नहि नना लजत
है, कैसा ध्यान लगायो रे॥ या०॥ टेक॥ जटा वधा
री भस्म लगाइ, गंगा तीर रहायो रे॥१॥ ऊरध
बाहु आतापना लेइ, योगी नाम धरायो रे॥
या०॥२॥ चार वेद ध्वनि सूत धारकर, ब्राम्ह
ण नाम कहायो रे॥ शास्तर पढके जगडे लंते,
पंडित नाम रहायो रे॥ या०॥३॥ सुन्नत करके
अल्ला जांद, सीया सुन्नी कहायो रे॥ याको रूप
न जाने कोइ, नवि कोइ जतलायो रे॥ या०॥४॥
जो कोइ याको रूप पीछाने, ते फिर साथ जना
यो रे॥ ज्ञानानंद निधि अनुभव योगे, ज्ञानी
नाम सुहायो रे॥ या०॥५॥ इति॥

॥ पद छत्रीशमुं ॥

॥ राग कुमरी ॥ ऐसो योग रमावो सा योग ॥ ऐसो योग रमावोरे ॥ ऐ० ॥ टेक ॥ परम विभूति अंग रमावो, धया तीर मन लावोरे ॥ ज्ञानशीघता अंतर घरमें, आतम ध्यान ज गावोरे ॥ ऐ० ॥ १ ॥ घरम शुकल दोय मुंद्रा धारो उन्नदारो समसारोरे ॥ सुत्र संयम उपीन जियारो, लोभ नाति रकशा धारोरे ॥ ऐ० ॥ २ ॥ अतुल्य प्याला प्रेम मसाला, पीज रहे मतवालोरे ॥ ज्ञानानंद लहेर में झूले, सो योगी महवालारे ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ राग कुमरी ॥ कुं सहसानी झनुंधुं तुम अहे कुं भरकावे रे ॥ कु० ॥ टेक ॥ अभरकत भरकत भई कुं कुरानी, तूं मत रीस चढावेरे ॥ कु० ॥ १ ॥

अेतला ज्ञान नपुंसक जनी, मंदिर मांहु रहा
वे रे ॥ सघलाई मानसने तूं ठले, अेहि अर्थ
लो आवे रे ॥ हुं०॥२॥ आस पासना अमने
देखी, कुटिला लाव जनावे रे ॥ वल्लभ सांभ
ल मो कुं छांडे, मोरी हु रमत जवे रे ॥ हुं०॥३॥
तूं तो निरलज्ज लयो मतवालो, थारी कवन
चलावे रे ॥ अम वल्लभ ज्ञानानंद साथें, अं
गो अंग मिलावे रे ॥ हुं०॥४॥ इति॥

॥पद छत्रीशमुं॥

॥राग वसंत॥ योगी यासें चित्त रमायो,
याकी लगति कुरत कुआयो॥ रे३॥ मेरो तो यो
गी जालो लोलो, जरम यारी मन लायो॥
या०॥ जे यह देखे सोई लोभावे, मतवालो
लग लायो॥ या०॥१॥ योगी जातर घर घर
लरकी, यह योगी जग पायो रायो॥ या०॥ अम

नें वत्सल याकुं मान्यो, मेरो चित्त लोभायो॥ यश॥ राचा निरलोभी निकलंकी योगी, योगी योग रमायो॥ ज्ञाननिधि चारित्र ज्ञाना नंद मूरति प्राण पियारो पायो॥यश॥३॥ इति॥

॥पद सताणुंमुं॥

॥राग वसंत॥ हेजी छेल नारी, सति यशि रोमणि आछी॥ हेजी देशी॥ रूपवंतने नागी लटे, सजिके मन आछी॥ हे॥ घणा सचलाई मनस तेह रमावे, मुनि मन शोभा धारी॥ हे॥ भोगी मन तिन नांहि जतावे, योगी चित्त रमाणी॥ हे॥ रा॥ पंडित याकुं लाड करत है, अह निसि चित्त रमाई॥ हे॥ योगी सब अंगो अंग रमावे, हाथो हाथ झुलायो॥ हे॥ आई तनने लिरंजी मुनि मन भाले, ध्यान धरे चित्त लायो॥ हे॥ निधि चारित ज्ञाना नंद पायो, या नारी चित्त लायो॥ हे॥ ना

॥पद २३८ छत्तीसमुं॥

॥राग वसंत॥ सुण तीजे पिताजे, योगी यासें चित्त रमायो॥ सुं०॥ टेक॥ अह निसि योगीके संग जेसी, रंग रंग लाग रमायो॥ सुं०॥१॥ अपने मन इथि काम जे कीयो, यतीहि रिसियात कलायो॥ सुं०॥ मेरे तो घरसें काम नही हे, योगी पास रहायो॥ सुं०॥२॥ एतनी कहुर घरसे निकसी, योगी वल्लभ लायो॥ सुं०॥ निधि चारित ज्ञाना नंद योगी, मिलकर अंग मिलायो॥ सुं०॥३॥ इति॥

॥पद २३९ ओगणचालीशमुं॥

॥राग वसंत॥ मे कैसे रहुं सखी, पियाग यो परदेशो॥ मे०॥ टेक॥ रितु वसंत फूली वनराई, रंग सुरंगीत देशो॥ मे०॥ दूर देश गये पालवी चालम, कागल जेकोन आयो॥ मे०॥

निर्मोही निस्नेही पिया मुझ, कुण नारी लप

टायो॥ मे०॥३॥ वसंत मासनी रात अंधारी,

कैसें विरह जुलयो॥ मे०॥ ४॥ तिने निधि याधि

त्र पुत वसन्त, ज्ञानानंद घर आयो॥ मे०॥५॥

॥पद चालीशमुं॥

॥राग वसंत॥ मेरे पियाकी निशानी मोरे

हाथ न आवे॥ मे०॥ ऐसा रूपी कहुं तो रूप न दीसे,

कैसें करी जतलावे॥ मे०॥१॥ ज्योति सरूपी तेह

पियाकूं, करम बंध कैसें लावे॥ मे०॥ सिद्ध स

नातन अपरंपर जिन सन, कैसें पिया रसु ह

वे॥ मे०॥२॥ वेद पुरानमें नाहिं कहिं दीसे, जिण

पर भाव रमावे॥ मे०॥ याते प्यारि ज्ञानानं

दी, अेकहि रूप कहावे॥ मे०॥३॥ इति॥

॥पद अेकतालीशमुं॥

॥राग सारंग॥ क्यों कर महिल जनावे

पियारे॥ क्यों॥ टेक॥ पांच भूमिका महल ब
नाया, चित्रित रंग रंगावे॥ क्यों॥१॥ गो
खें बेठो नाटिक निरखे, तरुणी रस बरसा
वे, एक दिन जंगल होगा डेरा, नहिं तुझ संग कु
छु आवे॥ क्यों॥२॥ तीर्थंकर गणधर बल
चक्रि, जंगल वास रहावे॥ तेहना पण मंदिर
नहिं दीसे, थारी कवन चलावे॥ क्यों॥३॥ ह
रिहर नारद परमुख चल गये, तूं क्यों काल
बितावे॥ तिनतें नव निधि चारित आदर, ज्ञा
नानंद रमावे॥ क्यों॥४॥ इति॥

॥पद बेंतालीशमुं॥

॥राग सारंग॥ क्या मगरूरी बतावे पि
यारे॥ क्या॥ टेक॥ अपनी कहा चलावे॥ पि०
॥टेक॥ कवन देश कुण नगरीसें आया, कहां
तुझ वास रहावे॥ पि०॥१॥ कहा किनस तुम

झगडू, ठिकस जिय कालजितावे॥ कहा भले
डा मकसद हुगा, कैसो विचार रहावे॥ पि०॥२॥
चार दिनांकी चांदनी हुगी, पाछे अंधार जतावे
॥ घर घर फिरतां थारा हि मानस, अंगुलीयां
दिखलावे॥ पि०॥३॥ तिनतें तूं झगडूरी छांडी,
जग सम समता लावे॥ तो नव निध चारित्र
सहायें, ज्ञानानंद पद पावे॥ पि०॥४॥ इति॥

॥पद तेंतालीशमुं॥

॥राग सारंग॥ जिन थासम कहो कुण गति
माहरी, थारेमें ही गति न्यारी॥ जि०॥टेक॥ सु
नो सजी तुम वेग मनावो, सखियां लावो नि
हारी॥ जिन०॥१॥ चांदनी राते मकर ध्वज शर
जाय लग्यो दुःखकारी॥ विरह व्यथायें अम
ने जिनवर, सुध नहिं पामे सारी॥ जिन०॥२॥
जल बिन मछली सम रह चलती, विरह अनल

भई भारी॥ चेतन ज्ञाना नंद वालम आओ,
ध्यारित संग सुजकरी॥जिन०॥३॥ इति॥

॥पद चुमालीशमुं॥

॥राग सारंग॥ सेठ बेठे सारंग महलमें
॥सेना॥टेक॥ सेठानी मोह नरपति बेठी, जेरा
चार अनोपमें॥ सेना॥ मिथ्या मकरध्वज लघु
भाई, व्यापारें गणि कोपमें॥ सेना॥१॥ दीयो
हार बिछात बिछाई, सुखे करे नवरंगमें॥
सेना॥ कनक रतनलां भूषन पहिरयां, वोके बे
से रंगमें॥ सेना॥२॥ भोजन कर्गसे स्याही राजी,
सेठ कहलाओ नगरमें॥ सेना॥ वातें लोक कमा स
कु राजी, परजी भली कुठार में॥ सेना॥३॥ तह
ने कागल करको दीधो, भया निचिंता पलकमें,
सेना॥ सहसलाख कोर डानां कागल, लेवे देवे
जलकमें॥ सेना॥४॥ च्यार दिशा वर हार करी लि

न, त्यारी सराइ परदेशमें।। सेठ॰ सेठ कहे हम करोड पतिहे, हम सम नहिं कोई देशमें।। सेठ॰ पाछल लेन सहु लिख मांगन आया, दीयो दिवालो मगनमें।। सेठ॰ जलतो शेठ योगी भये त्यागी, माल दीधो सहु सुतनमें।। सेठ॰ ३।। जैसे तैसे अकल चल गये, कबही नहिं उगारमें।। सेठ॰ हार सुतन कोई नहिं साथे, त्यांई जरा जी वारमें।। सेठ॰ ४।। अेह विचार करी त्यागी प्यारे, पुण्य पाप लीयो हाथमें।। सेठ॰ तिनते नर्य तिरि चारित अविचल, ज्ञानानंद त्यायो साथमें।। सेठ॰ ५।। इति।।

।।पद पीस्तालीशमुं।।

।।राग सारंग।। साहिब हे तेरे संगमें, सांग॰ टेक।। जेनुं दरव अपरिमित होगा, कुछहि न पूटे लंगमें।। जेनां देनां कछु नहिं ज

के, त्योंगो अहनिसि रंगमें॥सानाणा॥ जिम जिम त्योंगे तिम तिम चाखे, ज्युं नरके मति यें गमें॥मृग मद गंधें मृग सम लटके, घट अनुभव नहिं रंगमें॥सानारा॥ निर्मल गंगा नीर न लायो, झारी ज्ञान पीवे वारमें॥ तिनतें निज घर चारित संयुत, ज्ञानानंद लेवो ठाठमें॥सानाडा॥इति॥

॥पद छेंतालीशमुं॥

॥राग केरबा॥ सईयां मुज गेंदा मंगायरे, गेंदा की आछी जहांरा जैंखालाा यार मोह नारी मिलायरे, यारोंका याही है मिलपा॥या॥टेक॥ रूप वंत मोह नारी मिलायरे, उत्तम कुल गुण धाया॥या॥ऐसी नारी मुज लटकायो, पर घर रमवा छालाया॥ तेमुज दूता पण कहलायो, जग जन कहे तें छि

॥सा॥थि०॥२॥ सुकुलीनी मोहे नारी मिले
बे, तो जम थिल सुज भाय॥थि०॥ छेत
नी सुनकर जायक मंतरी सुमतिनो मेल
कराय॥थि०॥३॥ घरनी संगे हरख धरीने,
अंग रंगे लपटाय॥थि०॥ चारित्र आदर ज्ञा
ना नंदें, नव निधि सहज लहाय॥थि०॥४॥

॥पद सुडतालीशमुं॥

॥राग केहरबा॥ किस मिस बनी पाणि
हार हूवे, पर आसन योगी॥१॥ जे चालत
कुण मिस पियाकुं मनाय, मिलियो पिउ पर
देशी॥१॥कु०॥२॥ देश नगर नांहि बनुं ब
डे, बत पातन बनाय॥मि०॥३॥ नाम गो
त बडो कछु नांहि, कैसें निरखुं भाय॥मि०
॥ निर्मोही निःसनेही पिया मुज, कुण री
तें समजाय॥मि०॥४॥ मोसें पहेलें जाए क

रथो, मुझ जिन जिन न रहाया ॥ मि० ॥ ज-
जतो मोसें दूसरु पाल्यो, बात न पूछे त्या-
या ॥ मि० ॥ ३ ॥ विरह व्यथायें तन मुझ सू-
रे, किए सुं कहियें धाया ॥ मि० ॥ पिउ संय
म सुख समता साथें, ज्ञानानंद रमाया ॥
मि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद अडतालीसमुं ॥

॥ राग केरबा ॥ मेरे लोगे नवाज, कलह
लेकी सयरकुं ले चलो ॥ क० ॥ ए चालो ॥ मेरी
प्यारी सुनोहे, अजतो तम भेमें संग चालो
॥ क० ॥ १ ॥ हाथ घोडे पर अम कियो-
जन, तम पण चालो प्यारी संग अदीन
॥ क० ॥ २ ॥ ल्गन पण नांहि अज हम हाथ,
दीन नकरो प्यारी चलो हम साथ ॥ क० ॥ त
म जालर अ म दुःख जहु कीन, प्यारी-

मत छांडे जमने दीजा॥ मेणा॥२॥ नारी कहे प
रो नरे निगोद, थारे मारे कुण करे वातनि
णोद॥ मेणा॥ जम जज प्यालुं जिहां थारे सं
ग धूत, तुं मूरख शिर मोस कु भूत॥ मेणा॥३॥
ईतनी सुनकर नयोते शिहास, कुटिजा जज
ज्ञानी कुण करे ज्यास॥ मेणा॥ तिन अवसर
नही निधि चारित्त, ज्ञाना नंद मूरति लले
सुज चित्त॥ मेणा॥४॥ईति॥

॥पद ओगणपचाशमुं॥

॥राग केहरवा॥ अेक अचंलो मुल मन
वशियो॥ अेणा॥ टेक॥ चालतो हलतो डुंगर
दीठो, तिचमें अेक सिखर ठीयो वशियो॥
अेणा॥१॥ छोटा पांच शिखर लसुं पणदि
शी, नाना तड विण मंडित रहियो॥ अेणा॥
सरव ताल सागर विच रहितो, पवन च

लावे ते अम कहियो॥ अे॰॥ २॥ भानस नहिं
कोई तेह मांही से, ध्रुव अध्रुव पणो तेहमें र-
हियो॥ अे॰॥ डुंगर जिय नव निधि चारित्र
युत, ज्ञानानंद मूरति गुण गहियो॥ अे॰॥ ३॥

॥पद ५९॥ राग मुं॥

॥राग कहेरवा॥ छोरी जामनकी छोरी
जामनकी, अंगियाकुं अंतर न आयेकु अ
नी॥ हाथमें पिंजरा गुलाब की छडी, नेर ज
नर में घुरती जडी॥ अे प्याला मेरे लोलेपि
या, मोरे लोले पिया, मो पर नदुंडा डाल के
चले॥ मे॰॥ टेक॥ मेरेहि रहय जिय राजती,
कछु नहिं मागुं तोसुं रति॥ मे॰॥ मोसें पिया
तम काह उदास, हुं थारे छग चरणारी दास॥
मे॰॥ १॥ न्ने थारा मनमें रहि अेसी हुंस, पे
हलेहि जनति करति हूंस॥ मे॰॥ विन जाल

म मेरो चित्तमें शाल, ज्यों शर वींधे ढाल ति
ढाल॥मे०॥२॥ अजराई पति गति मति
भल, अनुपम शील भूषण गुण आना॥
मेरे०॥ ईतने नवनिधि चारित्र रंग, मिल
गये ज्ञानानंद सुरंग॥मे०॥३॥

॥पद ४३ वा संपूं॥

॥राग सोरठा॥ प्रीतके कोई फंदें पडो ना॥
जे चाला॥ चालम नारिके फंदे पडो ना॥चा०॥
टेक॥ उत्तम नारीके फंदमें पडि हो, शेरि नत
न मन राखो रहे ना॥चा०॥१॥ नारी काली
नागन सरीजी, देखत चित्त डगमाडोल करे
रे॥चा०॥ नारी संयोगें अरम दत्त परमुज,
नरकें दुरधर दुःख परे रे॥चा०॥२॥ आद्र
कुमर मुनि नारि संयोगें, वरस चऊवीस
गिरिवास कियो रे॥चा०॥ नारीकी प्रीतें ए

नलव परलव, सुज न कहे पग जंघ लयो गे॥ वाण॥३॥ उत्तम नर छैल नाहिं जतावे, ध्यान घरे वन मांह रहे रे॥वाण॥निरमल निरगुन आतम ध्याने, सुख समाधि लाव लहेरे॥ वाण॥४॥ तिन तें वालम तम पण समले, कुटिलानी प्रीतडी परिहरो रे॥ वाण॥ मोसुं तो निधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद सुज रमण करो रे॥ वाण॥५॥

॥पद जावन्न मुं॥

॥राग सोरठ॥ देस माहरो पियाकुं जताय दीजे रे, मैं तो जोगी जगनियाकी वसा॥ देश अ आसना॥ कोई सजी पियाकु जतावे री, मैं तो जोगी वालम पासा॥ कोणा टका साती ज्या पूछीयो, वालमजी को देश कोई साचे नहिं जाण्यो, जे जागत पकुंते देश॥ कोण॥२॥ ज्ञानी ज्ञानी सज कहे, मोकुं न दीसें ज्ञाना॥ मैं तो आयो ज

जउहुं, पिया रूप कहे माता॥क०॥२॥ सज्जन
जैसो जे मिले, पियाकुं कागल मेला॥ कागल वां
ची मुख लोपे, पाछो उत्तर जेला॥क०॥३॥ जब
लग कागल तेहनो, नहिं आवे जम पासा॥ तब
लग जूठी जात सहु, नहि पद मोकुं आसा॥क०
॥४॥ इतने जेह विचारमें, निधि चारित के सं
ग॥ आजे ज्ञानानंद पिउ, रमण करे सुखरं
ग॥क०॥५॥ इति॥

॥पदत्रेपनमुं॥

॥राग सोरठा॥ मेंतो कैसे पियाकुं सेवोरी,
पिया मेरो योगियांको वेसा॥मे०॥ टेक॥ मेंतो
कन्या भूपकी, जने सकल निहाला॥ घरसें निक
सुं कुणपरें, कहो सखी चतुर सुजान॥मे०॥१॥ धा
सतिय पियो भणी. अम जिउंद, जरम धारी शि
र मोला॥ दीसुं नहिं लग लोकमें, माहरो मोलम

मोला॥ मेंना॥२॥ जिन परण्या उत्तम पुरुष, ध्या
न धरे दीन रात॥ तेपण दरशन मोहरा, दरश
न लहे तिस मात्त॥ मेंना॥३॥ मेंतो मन गमतो
कियो, छांडी जग जन चाहा॥ दूरमत रहे चालम पि
ले, पसरे जग जस चाहा॥ मेंना॥४॥ उन्या जेह वि
चारतां, आप मिले तत खासा॥ ज्ञानानंद योगी
पिया, चारित युत जगपासा॥ मेंना॥५॥ इति॥

॥पद चोपनमुं॥

॥राग सोरठ॥ कोई योगी हमकुं जानेरी,
मेरो कोई नामकुं जाना॥ कोण॥ टेक॥ मानस न
हि हम नारी नाहि, नाहि नपुंसक जाना॥ कोई॰
॥१॥ दादा आजा नहि हम काका, ना हम कुण
कु जायरा॥ को०॥ नाना मामा हम नहि मोसा,
कोइसे नाहि आलाया॥ को०॥२॥ बेटा पोतरा
गोलक नाहि, नाती दुहितन न जाना॥ दादीया

यी बेटी पोती, त्यांहम नारी माना॥३॥३॥
गुरु चेला नहि हम काहूके, योगी भोगी नांहि॥
३॥ पांच जातमें नहि हम कोई, नहि कोई कुलछां
ह॥३॥४॥ दरशन ज्ञानी चिद्‌घन नामी, शि
व वासी हम जना॥३॥ चारित्र नवनिध अनु
पम मूरति, ज्ञाना नंद सुजना॥३॥५॥इति॥

॥पद पंचावन्नमुं॥

॥राग सोरठा॥ जडि छगा जाओ रे तूं जडि छ
गा जाओ प्यारी तूं जडि छगा जाओ॥टेक॥ तेरे
आतर डूंगर हरि जिय, रही कुंज सखी में अ
पारा॥ हांसी खूसी बहु नातरा कीयां, तूं कांई
भूलि गवारा॥ तूं जडि॥१॥ कबडी खोटे तेरे आ
तर, माहरो कीयो भोलाा॥ घूंट ऊ योगी यति
सन्यासी॥ मुंडित कियो ते शेला॥ तूं जडि॥२॥
खा मुहगे आंवी कानन झाडी, बहुविध वेश

डराया कपट करी सहु पाखंड कीया, ज्ञान न सूझ्यो
मन न्याय रे॥तूं०॥३॥ आधर घर लटक्यो तेरे
साथें, पोतें पाप न्हराया॥ जब तूं आहु न जोसे मोसुं
तुं कपटी नी दिखलाया॥तूं०॥४॥ ज्यों जैसो है-
जो ज्यों हूं उदासी, निरखि चारित्र लहाया॥
ज्ञानानंद चेतन मय मूरति, ध्यान समाधि
लहाया॥तूं०॥५॥ इति॥

॥पद छपन्नमुं॥

॥राग मल्हार॥ प्यारे साहेब शुं चित्त
लावो रे, साहेब दूर कहावो रे॥प्या०॥टेक॥ साहेब जेक
हीहै जगव्यापी, नहि कछु भेद कहावे रे॥प्या०॥१॥ जेके
ई साहेब भेद जतावे, तब कुछ जग पावे, पारसनाथ
कहे कोई ब्रह्मा, विष्णु शिव कहावे रे॥प्या०
॥२॥ ध्यान ध्येय एक पारस, रूप ज्योति रूप
ब्रह्म लावो॥ केवल ज्यों ज्ञानी ते विष्णु, शि

यथासी शिव भावेरा।ध्याना।३।ज्योति रूप स्वा
हज ते धंगही, तिनसुं ध्यान लगावे।। निधि
चारित्र ज्ञाना नंद मूरति, ध्यान समाधि स
मावोरे।।ध्याना।४।।इति।।

।।पदसत्तावन्नमुं।।

।।राग मल्हार।। हमो पिया आगम लहवेरी
आयो, नाना भूषन लायो।।हमो।।टेक।।विनय
कनकको घाट बनायो, संयम रतन लगायो।।
निरमल ज्ञानकी हीरक जिन्यमें, दरशन मानक
लायो।।हमो।।१।।ज्ञायक वैडूर्यकी पगति, मौक्तिक
ध्यान लगायो।। सुमिति गुपति नीलम विद्रुम
लिहां, शेष तत्व कहलायो।।हमो।।२।।ए सहु भू
षण मोल अमोला, निरजत चित्त सो लायो।
।।हरषे निधि चारित निहालो, ज्ञाना नंदर
मायो।।हमो।।३।।इति।।

॥पद अठ्ठावन्नमुं॥

॥राग मल्हार॥ ज्ञानकी दृष्टि निहालो वा-
लम तुम अंतर दृष्टि निहालो॥वा०॥टेक॥ आ
प दृष्टि देखे सो मूढा, अर्थ नाहि निहालो॥धर
म धरम कर घर घर भटके, नाहि धरम दिखा
लो॥वा०॥१॥ बाहिर दृष्टि योग वियोगें, होत
महा मत वालो॥ कायर नर जिम मद मत वालो,
सूज पिलाय निहालो॥वा०॥२॥ बाहिर दृष्टि
योगें अविचल, संसृति वास रहानो॥ तिनतें
नवनिधि पारिन आदर, ज्ञानानंद प्रमानो॥
वा०॥३॥ इति॥

॥पद ओगणसाठमुं॥

॥राग मल्हार॥ ज्ञानकी दृष्टि विचारो, सा
धो नाहि आतम दृष्टि संभारो॥ सा०॥टेक॥
अनुभवमें शुध्ध ज्ञाने अनुभव, ज्ञेय सकल सु

विचारो॥ज्ञानने ज्ञेयकी एकता आकर. अहंकार
तम सुं निवारो॥सा०॥३॥ ज्ञान दृष्टिको अंतर
भावे, सुद्ध रूचि रूप पहिचाना, अंतरातम
ज्ञानातम भावे॥ होय परमातम अनो॥सा०॥
४॥ परमातम ते निःगुन भोगी, भासित ज्ञा
न अबाधोपज्ञाना नंद चेतन मय मूर्त्ति, आ
नंदभाव सुभनो॥सा०॥५॥ इति॥

॥पद साठमुं॥

॥राग मल्हार॥ अनुभव ज्ञान संभारो,
साधो भाई मत ओछंत हठ धारो॥सा०॥टेक॥
ज्ञान विना ते किरिया भाखे, अंध नर सम च
न डोलो॥ आगम माते देश आराधक, सर्व वि
राधक बोलो॥सा०॥१॥ किरिया छोडी ज्ञान ल
माने, पंगुल नर सम भनो॥ सरव आरा
धक, ज्ञिय विचारें, देश विराधक मानो॥सा०

गति नतें ज्ञान सहित के किरिया, करतां का
रज सारो॥ जिम अंध पंगुल दोनु मिलकर, व
नसें निसरे सारो॥ सा०॥ ३॥ गति नते एकंतम
त पख छांडी, अंतर भाव विचारो॥ अनुप
म नव निधि चारित संयुत, ज्ञाना नंद सं
भारो॥ सा०॥ ४॥ ६॥

॥ पद एकसठमुं॥

॥ राग बिहाग॥ सूनो सखी मोकुं कूर
भयायो॥ सुं०॥ टेक॥ बहु वासरसें विनय ब
थायें, अंगें दुःख रहायो॥ एक दिन मज्जन स
नान करी अब, भूषन अंग रहायो॥ सुं०॥ १॥
रंग कसूंबा चूनडी पहिरी, पांयमी चरत रहा
यो॥ ठग योगी मतवालो आयो, लोलें लग
ति लहायो॥ सुं०॥ २॥ दिन भर मोसें गीत ग
गायो, सांझे नाच नचायो॥ रंग महल बिच

सेजें पोढी मोनें रंग लालच्यायो॥ सु॰ ॥३॥ त
न भय खेकुंत अंगें लपट्यो, रयणें नींद जिका
यो॥ नाणही पाग हसी छोडी खाछें, मोकुं तो म
चकायो॥ सु॰ ॥४॥ भोर भयो उठ लाग्यो जो
गी, ना भनुं विस मायो॥ सखि कहुं स्वामिनि
कुमलानी, मौन करी सर मायो॥ सु॰ ॥५॥ तिन अ
वसर निणही तिहां आली, हसकर करवत लाल-
यो॥६॥ तें निधि चारित नित्य साथें, ज्ञानानंद
खेलायो॥ सु॰ ॥७॥ इति॥

॥ पद ॥ २८ मुं ॥

॥ राग जिल्हा ॥ मेरो पिया सखि देख
मनायो॥ मे॰ ॥ टेक ॥ पिया जिना रंग महेल जि
य, सूनी सेहेज रहायो॥ खान पान कुछ भाय
क मोकुं, ज्युं कर विष सम लायो॥ मे॰ ॥१॥ शो
ल श्रृंगार जे विरह व्यथायें, कैसें रयण वि

जायो॥ अंग अंग छिन भंगुर म्हारो, तैसें उ
हुं चिन्त जायो॥ मे॰॥२॥ लतें याचित मित्तके
संगें, ज्ञाना नंद पिया पायो॥ गरीषम तापें
जिम जल बरसें घन, सेव धरी मय उ आयो॥ मे॰॥३॥

॥पद ७७ राग मुं॥

॥राग बिहाग॥ तुं जाडूराने क्युं मारे मूढ॥
तुं॰॥ टेक॥ जानो भोलो हम जाडूगे, नहिं क्यु
ई अन गूढा॥ जाग॥ मोहे भेले अहनिश, यात
बिचारो मूढा॥ तुं॰॥१॥ जेसन मिस छोरो धारा
पासें, रमण करे चित्त भोला॥ तुं कुसला॥२॥ बि
त्य भरतार्थ, धन युत करे कम डोला॥ तुं॰॥ रा
जेंद्रिय निर्धन नहिं तुज सरीखो, नाहि क्युं ई मा
ने निठारा॥३॥ तलें याचित ज्ञाना नंद, छोरी
लियो चित्त ठार॥ तुं॰॥४॥ इति॥

॥पद ७८ राग मुं॥

॥२॥ राग जिल्हा॥ जग गुरु निरपेख होन दिखाया॥ ज॰॥ टेक॥ अपना अपनो हठ सकु ताने, कैसें भेद मिलाया॥ वेद पुराना सबहीं थाके, तेरी कथन चलाया॥ ज॰॥१॥ सब जग बिन गुरु ताके कारन, मदगल ऊपर ठाया॥ ग्यान ध्यान कछु जाने नाहिं, पोतें धर्म जताया॥ ज॰॥२॥ चोर चोर मिल मुलकनें लूंट्यो, नहिं कोई नृप दिखलाया॥ जिनके आगल जाय पूकारे, अंधो अंध पलाया॥ ज॰॥३॥ जग मैं देखत जग नविति रखुं, मन गमता पेख चलाया॥ तिनतें मूरख धर्म धर्म कर, मत जूठे मन लाय॥ ज॰॥४॥ छेद कारण जग मत पेख छांडी, निधि चारित्र जगाया॥ ज्ञानानंद निज लावें निरंजन, जग पाखंड लखाया॥ ज॰॥५॥ इति॥

॥पद पांसठ मुं॥

॥राग जिल्हा॥ जग गुरे मूरख जगत जना
या॥ जग०॥टेक॥ मूरख मूरख जहु वो जग जन, गूढ
पंडित केई जया॥ पंडित मूरख मूरख जहु जन दी
से, जग मतलाज लहे त्याय॥ जग०॥१॥ पंडित
पडित नाहिं कोई जगमें, कजहीं कोई जनाया॥
शिव्य विचारी तेहुनें लाभे, संसृति आलप गिना
या॥ जग०॥२॥ तेहुं दर्शन जगमें दुर्लभ, ते तारक
जग मांहि॥ तिनतें नवनिधि पारित लावे, ज्ञाना
नंद अथाहि॥ जग०॥३॥

॥पद छासठ मुं॥

॥राग रामग्री॥ निरपेखता मोकुं लागे
पिया तम॥ निग॥टेक॥ पक्ष पातमें घर घर लट
डी, नहिं निरपख किजलागे॥ पि०॥ संयोगी सं
योग नकीनी, योगी योगन लागे॥ पि०॥१॥

संन्यासी संन्यासन कीनी, ब्राम्हण ब्राम्हणी
साधो॥पि॥राम सनेही रामकी प्यारी, यतिग
ण यतिनी भाखे॥पि॥२॥ अपने अपने मत
पंथ गहेला, सहु दुनिया जडु साधे॥पि॥पण ना
न्याणं कोण कहे सांचो, अवनी तो नरभाखे॥पि॥
॥३॥ हिय विचारें निज अनुभवतां, नग पाउं
ही साधो॥पि॥निधि चारित अरु ज्ञाना नंदनो.
विमल वचन सत साधो॥पि॥४॥ इति॥

॥पद ८३॥ राग भुं॥

॥राग रामग्री॥ आतम वचन सुधा साधो॥पि
या जम याना पक्षपात नहिं हिय विचारें. नि
ज अनुभव हिय साधो॥पि॥ इंद्रिय सुख विर
म्ण यति कहियें, छायति धर्म धरा साधो॥पि॥१॥
नव और विगन संवेगी कहियें, योग धरण जे यो
गी॥पि॥ चारित्र नाव संन्यासी जनी, बरा

मन वचन गुण भोगी॥पि०॥६॥सहिज रमण ते

रामक्ष प्यारा, अरूप सहु भाख्या॥पि०॥निधि

चारित्र ज्ञानानंद अनुभव, ध्यान समाधि सु

हायो॥पि०॥७॥इति॥

॥पद अडशठमुं॥

॥राग रामश्री॥ नारी प्रेम निवारो साधो

भाई॥ कुटिला नारि निवारो॥सा०॥टेक॥ कुटि

ला नारी योगें साधो, तुम गति थई किसी रे

रो॥सा०॥ ते तुम मोह मद पान कराई, चंनशील

कलह विसेरो॥सा०॥२॥ निर्जर पण जेहनी

थाह न पामे, सूपर पंडित ज्ञानी॥ छहराणीके

पगतल लोटे, इंद्रादिक परमाणो॥सा०॥३॥

नारी प्रेम विसूधें ढोलो, नहिं ज्युं इ समझे चे

जो रा॥सा०॥ तिनतें नवनिधि चारित संगें, ज्ञा

नानंद में मेलो॥सा०॥५॥ इति॥

॥पद ओगणोतेर मुं॥

॥राग रामग्री॥ नारी प्रेम लगायके साधो

साधे, नानी नारी रमायो॥ सा०॥ टेक॥ प्रेम सं

योगें योग लगायो. सकल धर्मक्त शुल लायो॥

सा०॥ निज परमातम ने देखे योगी, क्षण तर

अंग लपटायो॥ सा०॥ १॥ अविनाशी अकलंक

ता तुम गुन नेहिज शुल आचारो॥ सा०॥ जड

पुद्गल धन जावरें न्यारा, अहनी ममता वा

रो॥ सा०॥ २॥ महोटा सहु योगी पण वंछे. अह

नो संग सुखकारो॥ सा०॥ निधि चारित ज्ञाना

नंद प्रेमें, अेल नारी प्यारो॥ सा०॥ ३॥ इति॥

॥पदसीतेर मुं॥

॥राग रामग्री॥ अनुलव योग रमावो

साधो साधे निज घर अंतर लावो॥ सा०॥ टे

क॥ मेरा तेरा कहा करत हे, नहिं कछु तेरा ला

चो॥सा०॥भगभन किरिया कहा दिखलावे,
कहा भगभन समझ चो॥सा०॥५॥ निभति
भ मत पंज हठतावारो, अंतर भाव विचारो
॥सा०॥ हाला हल अज्ञान निवारो, ज्ञान
सुधारस धारो॥सा०॥६॥ तत्व विचारें प्रेम
लगावो, निभ गुण विमल निपा चो॥सा०॥न
व निधि चारित प्रेमें आदर, ज्ञानानंद रमा
चो॥सा०॥७॥ इति॥

॥पद अठोत्तरमुं॥

॥राग भंगलो॥ तुम सांजि निरजोर
आर्छ, सोतडी लेगई अम वालम यात्तु०॥रे
का आगें आगें पिया चलत है, पाछें सोत
डी चार्छा दासी पण छे तेहने साथें, कुरिला
चित्त लोभार्छा तु०॥१॥ अमने लक्षण एह
चो दीसे, वालम गये भरमाछा मोह भूप

तिडे भलें अरज्यो, अब नहिं निडले आणी तु०
॥२॥ क्रोधादिक तेहने रथधाजा, छोट विषय
दुःख दाणी। तेहने चोथी दिसि सात निसलहे,
अहो निश लंपट साणी। कुमता दासी युत दु
रिता तिन पासें, रमण करे चित्त आणी। महिरा
पानेते मतवासो, विकथा चेष्टा अत आणी। तु०॥
॥३॥ ग्राहक व्यापक लोगें लंपट, सुख विलाय सु
हाणी। संसृति संग सकु अपनो नले, विगमे
डाल सदा णी। तु०॥४॥ छेन अवसर निधि चा
रित्र निरखे, ज्ञानानंद सहाणी। लोसें पंजीश
दिखत मासा, गुण संवेग रमाणी। तु०॥५॥ इति॥

॥पद होतेर मुं॥

॥राग लंगतो॥ धीरल धारोरे आणे,
सांभल स्वामिनी वाणी सोखी कहुं धी०॥
टेका समता सोजी पियु निरंजन चासी, आ

गम मंत्री लीणें कुंवर च्यार सुभट संग लेई,
ठाम ठाम निरखंता ॥धी०॥४॥ निरखत नि
रखत मोहके थाणे, आणे गुपत रहाणा । आठ स
चिवे च्यार सुभट युत, तेहने पासें ठाणा ॥धी०
॥५॥ आगम मंत्री गुपत रहीनें, अवसर लायक
जाणा । अरजो अपनो शिवविचार, ततपर कारज लाणा॥
धी०॥६॥ मोहना परिकर आगम निरखी, सघ
ला चित्त चमकाणा । धर्म रायको परिकर निरखी,
नाठ सहु उकताणा ॥धी०॥७॥ सुमति आगम
मंत्री साथें, चालूंडो निकसाणा । हरखें आव्यां नि
ज घर मांहें, राणी मेल कराणा ॥धी०॥८॥ तिन
अवसर निधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद रमा
णा । अनुभव प्याला प्रेम मसाला, रंगें पान करा
णा ॥धी०॥९॥ इति ॥

॥पद होंतेरमुं॥

॥राग बंगालो॥ तुम किहां चाल्यो रे सांई, तुम
सांथें हुं चोगन आई अजा॥ तुं॥ टेक॥ तेरे कारन
हम घर छांडी, थांरे संग चित्त लाई॥ जिन पर
हमने छांडिके चाले, कैसें प्रीत लगाई॥ तुं॥ १॥
जिन कारन हमने दुख दीनो, काहुं घर भूकाई॥
घात विश्वास करे कहा मोसुं, कागने पुकारु आई
॥ तुं॥ २॥ सांई के हम घरकी चाही, रीत पुरा
नी आई॥ जबलग तेल दीपक मां बाती,
तबलग जग तम भाई॥ तुं॥ ३॥ चेतन की कहकर सां
ई चाल्यो, अपने धाम सुहाई॥ अनुपम नवनिधि
चारित्र आदर, ज्ञानानंद रमाई॥ तुं॥ ४॥ इति॥

॥ पद ९९ मो तेरमुं ॥

॥राग बंगालो॥ मुनि तम निरखो रे भाई,
अति भाव नत आई॥ टेक॥ जैसे गंगा निर पेखा
ले, कासी ढिंढरण आई॥ विविध भांत कर मह

नत डीनी, तो पण स्थित नहिं भणीमुनामा क
र्तीनी तिहां शुध्धि नहिं यावे, नहिं औषधगु
णलाणी भति रंग तहनो नहिं पलट्यो, कहा करे
चतुराणीमुनारप तेहनी किरिया सघली झोकट,
ज्ञान झोकरता लाणीतिन कारण निधि संयम
अनुलव, ज्ञानानंद रमाणीमुना३॥ इति॥

॥पद पच्योत्तरमुं॥

॥राग कंगलो॥ अनुलव लावोरे योगी, नि
जघर मांहिं रमावो॥ अ०॥१॥ अनुलव ज्ञान
जगतमें दुर्लल, अलप संसृतिनें लणी दुर्ल
ल्य अलल्य लखले, अनुलव नांही लहाणी॥
अ०॥२॥ कडवी तुंबडी उंसो लरडी, अडशठ ती
रथ न्हाणी तोपण तुंबडी कडुता न छांडी, कहा
तीरथ करसाणी॥अ०॥३॥ तिनतें निजघट अंतर
निरखो, अनुलव रीति सुहाणी तनमय नव

तिथि थांतिथयोगें, ज्ञानानंदलहाई भजनौ ॥३॥

इति श्रीज्ञानविलास
संपूर्णः ॥

अथ

॥श्रीसंयमतरंगःप्रारभ्यते॥
॥पद पहेलुं॥

॥राग भैरव॥ योग नंद आदर कर संतो, आइण दुति लय लावो॥ यो॰ ॥टेक॥ अंतर घट थेर सोधन करके, थंड वाल कर लावो॥ यो॰ ॥१॥ थंद सूरज मारग कुं तज कर, सुषमन पर धार जलो॥ कुंभक रेचक पूरक लावें, प्रत्याहार प्रमाणो॥ यो॰ ॥ धारणा धारण ध्यान समाधि

सपतम, श्वास रोधन करतानो॥ अनुपम अ
नहद धनी अनुयोगें, सोहं सोहं गानो॥ यो०
॥३॥ सोहं सोहं रटना रटतां, नव निधि संयम
भायो॥ ज्ञानानंद परमातम रोपि, हेमतरु
रज सहायो॥ यो०॥४॥ इति॥

॥पद जी भु॥

॥राग भैरवी॥ भग भन निंदडी तज कर सं
तो, योग निंद संभारो॥ भ०॥ टेक॥ ज्ञानानल
जधि नियानानुं ध्यानक, सकल संपद आयो
रो॥ भ०॥१॥ विविध विषमय हरि नवि छरके
निर्लेपी वीतरागो॥ शत्रु मित्र समभाव रहे
नित्य, हरद्धासन ध्यान भगो॥ भ०॥२॥ योग
निंदलय भावें, जिनने छेदन करे अपगारो॥ मीत
समान सेवे भसु रिपुगण, वंदन करे भग
सारो॥ भ०॥३॥ तस कर श्वापदनो भसु नवि

त्मय, पंच विषय तजे सारो ॥निधि चारित ज्ञाना नंद प्यारा, परमानंद निहारो॥५॥४॥९८॥

॥पद ९९ मुं॥

॥राग भैरवी॥ प्राण पिया तम ऐसी सज रु पीयो रे॥ प्राण॥ टेर॥ निज गुण परिण ति अनुपम सजरु, तिण भरी विवेक लेयो रे॥ प्राण॥ तत्व विचार विविध सुमसाला, उ पसम शंकर छूटी मेयो रे॥ प्राण॥१॥ कुटिल नि वृत्ति समता प्रेमें, संयम रंग ठाणो रे॥ प्रा ॥ धरम शुक्ल पथ सुरली सर केरा, संवर साज गुलालो रे॥ प्राण॥२॥ अनुभव ज्ञान उ रतन पियाला, भर भर समता पिलावे रे॥ प्राण॥ निधि चारित्र ज्ञाना नंद योगी, पीकर ध्यान लगावे रे॥ प्राण॥ ३॥ ९९॥

॥पद १०० मुं॥

॥राग भैरवी॥ गगन मंडलगत परम अडे
ए ईषि आयो रे॥ ग॥ टेक॥ चंद अछुतो चंद
न निरखुं, तरणि पिण न लखायो रे॥ ग॥
तेल सिखा बिन दीपन निरखुं, लग मगइ
षि सुभ दायो रे॥ ग॥ १॥ घन समीर परसु
भ उपाधि, रहित ऋषिर दरसायो रे॥ ग॥
सज लग व्यापी पांयेहि अते, पण नहिं आ
च रमायो रे॥ ग॥ २॥ पंडित योगी सय
ले थाके, निलहठ पज लपटायो रे॥ ग॥ आ
पहिं निरखे आपहिं अते, सहल समाधि ल
गायो रे॥ ग॥ ३॥ तव घर घरकी अरम ना मे
टी, सहल रूप परखायो रे॥ ग॥ निधि संय
म ज्ञानानंद योगी, ल्योति निरख हरखायो
रे॥ ग॥ ४॥ इति॥

॥पद पांचमुं॥

॥राग वेलावल॥ निज परिणति चित्त चारिये, परपरणति तज सार ॥ निज०॥ टेक॥ जब लग रहे पर परिणति, तब लग भव भ्रम धार ॥ निज० ॥१॥ अपनी पूंजी खोज नहिं, कुमता संग चित्त जोड ॥ राजपूत होय पर मतें, कायर सम डोल ॥ निज० ॥२॥ किंपाक फल सम रूप रेह, भव संग सुख जेह ॥ अंतर हाला हल लही, दुर्धर दुःखद लगे ह ॥ निज० ॥३॥ काच खंड तुं छांडदे, चिंतामणि ओलखान ॥ चिदानंद घन निधि संयम आदरी, ज्ञाना नंद हीरान ॥ निज० ॥४॥ इति ॥

॥ पद ६ छहुं ॥

॥राग वेलावल॥ पर परिणति कुं तज करी, निज परिणति लहे सार ॥ पद ॥ टेक ॥ निज परिणति करज्स लहे, आतम खोज सुज्ञा

रूपणाथाल्भृंगी होय जिम ईलिका, भृंगी स्वर अनुराग॥ अरली अगली परगटे, पय गत स्वर पिष अगा॥पण॥२॥ जिम शशिथी अमृत लहे, पारस कुनक चिंत्यां शक्ति मनिज परिणति आपेरखां, सहजे पर संग वारण॥३॥ समता संग रमण करे, प्यार सांभि युत तेह॥ नवनिधि संयम तन मय, ज्ञानानंद सुभ गेह॥पण॥४॥

॥पद सातमुं॥

॥राग काफी॥ चेतन तुं क्यों फरे भूला. हिंडोला करमका भोला॥ अं०॥ वालाखायो तम निज घर हेजो, मत पंच हठता नाहिं पे जो॥ बासला॥ चेतन विलख हे सजही, अपनो न छांड हे कबही॥ खाण॥ भा॥ कोई प्रकारे नाहिं हेजो, उभर जीवको लेजो॥ सा॥

भगंगा जल धोयो, तो पण लोटे ऊकडा
थो॥साखी॥ सूकर पायसकुं छंडी, अ
शुचि भोगें जे मंडी॥ मधु घृत कर सींचो
तजही, लींब न मीठो होय कबही॥साखी
॥३॥ ज्ञानी ध्यानीकुं दूषी, निज मत पक्ष
पातें पोषी॥ तिनतें अनुभव ज्ञाना नंदे,
सुलभ चारित्र आनंदे॥साखी॥४॥इति

॥पद आठमुं॥

॥राग काफी॥ देखो प्यारे सब जग
कबही, नाहिं कोई शांति मूरत पेखी॥दे०॥
मुनिजन उपसम गुण धारी, कबही को
प करण सारी॥दे०॥१॥ सेठकुं तसकर
सकु गावे, तसकर सेठ करी जाचे॥ सतवा
दीकुं कहे कूडा, मिरजाकुं सत कहे मूंडा॥दे०॥
॥२॥ कमल भव सूरी भनो, श्रुति देशं

त कहे मानो॥ तिनतें निधि चारित धारी, ज
ने ज्ञानानंद अधिकारी॥ टेक॥ ३॥ ७१॥

॥ पद नवमुं॥

॥ राग काफी॥ सब जग जन अपनी ताने,
जिहां कोईन परमानो॥ सा०॥ टेक॥ जे कोई परमा
नंद पूछे, ताना तानी करहु छे॥ सा०॥ १॥ गी
तारथनी नहिं माने, कहीये तो पाखंड सहु
जानो॥ श्रुति गत साची नहि जावे, जग जन
कूड सहु जायो॥ सा०॥ २॥ मत वाला अम जहु
मलिया, नहिं कोई परमारथी फलिया॥ तिनतें निधि
संयम चित्ते, जे ज्ञानानंद सुख नित्ये॥ सा०॥ ३॥

॥ पद दशमुं॥

॥ राग काफी॥ मतलबियो जग जन देखो,
कोई उपगारी नहिं ऐसो॥ म०॥ टेक॥ दुनियां
पहुतर स्वारथ की, पाछन पूछे परमारथ की॥

मणा॥२॥ गत यौवन निस्सनेही, तरुणी पण वि
षयी नरेही॥ लोलन पाछे नहि लावे, अमृत
पण उंजड कुण आवे॥ मणा॥३॥ जेह विचारे मु
नि समले, पर उपगार करुन जुले॥ अनुपम
निधि चारित पावो, तिम निर्मल ज्ञानी नेह
लावो॥ मणा॥४॥ इति॥

॥पद अजी आरंभ॥

॥राग झग॥ हमरी सुनजी जिन जोरीरा
लोगों॥ ओ च्याल॥ अजवानी ए बात सुनो पि
या, ऐसी न खेलो होरीरे॥ अणा॥१॥ तुम नहा
नी वहू सजि संयोगें, आए मतवाली छोरीरे॥
अणा कुटिला साथें तुमें पण पहोता, मदनणा
गां खेली होरीरे॥ अणा॥२॥ अविरतनां पकवा
न खिहां तुम, हरखे लोलन जोरीरे॥ अणा मि
थ्या लाव गुलाल उडाए, योगतें कुम कुम झो

रीरे॥ अ॥२॥ इंद्रिय विषय जिहां रंग पियरा
री, मोहराजकी जोरीरे॥ अ॥ च्यार कषायें तुं
मतवालो, रंग मचायो होरीरे॥ अ॥३॥ ऐसी
होरी खेली तोयण, तृपत न भई ते गोरीरे॥ अ
॥४॥ मीजूमसें तुमने नाखी, जे गई खेलन हो
रीरे॥ अ॥५॥ अजहुं तो पिया मन मांहे समजो,
नारी चेतन चित्त जोरीरे॥ अ॥ जिम चारित्र
युत ज्ञाना नंदें, नव निधि पामे होरीरे॥ अ॥६॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग होरी॥ होरी खेले ज्ञानहियां॥ मेरो

अब केसें निकसन होय दइयां॥ अंचली॥ होरी
खेले चाल मिया, मेरो अब केसें जयतो होय द
इयां॥ होला॥१॥ पंच महाव्रत वाघा पहेरी, शी
ल विभूषन ले सइयां॥ ज्ञान गुलाल अबीर
उडाई, कुमकुम शांति भरे सइयां॥ होला॥२॥

संयमरंग सुरंग भरीने, पिचकारी आगमकी

सखीयां॥ समता साथें सुमति गुप्ति सखी,

होरी खेले ताथैईयां॥ होरी॥२॥ शुक्ल समकित

पकवान नुं भोजन, चेतन करत घरे सखीयां॥

निधि चारित्र युत ज्ञानानंदें, निजगुन होरी

घरे सखीयां॥ होरी॥३॥ इति॥

॥पद तेरमुं॥

॥राग कुमरी॥ परविकथा तुं कहा करत है,

अपनी न कहत जियारत हैरा॥पर॥टेक॥ जगमें

पर विकथा कर संतो, ज्ञान ध्यान बिन भावत

हैरा॥पर॥१॥ अपनी विकथा कहन चारे, पोतें

दुरित भरावत हैरा॥ गहीं संयम दिव्य विचारे,

अंतरभावबिचारत हैरा॥पर॥२॥ जब लग अप

नी कथनी न जाने, कहा उपदेश सुनावत हैरा॥नि

धि चारित्र ज्ञानानंद निजपद, कहन चित्त र

भावत है॥ पना॥३॥ छति॥

॥पदछ्योदमुं॥

॥राग कुमरी॥ गगन मेरा रसाल आडंग, नल परमित वसु छाया॥ गना॥ देशांतिन पर अरुण प्रल गल मैथुन, करत कुलोल सुलाया॥ गना॥१॥ ताहु आडंभ पाल पुगत है, अनादि अनंत लसु संग॥ ताता नीयें अरुहत भरमावा, पायो गल निल रंग॥ गना॥२॥ गरहन भित वसु जाहर दीसे, कैसें लवन वंछे॥ गलांतर तेहथी गल भयो, मृगहन नरपति लंछे॥ गना॥३॥ लिन दिन लगल नरपति जने, अपनो पोल गमावे॥ तपनिधि चारित्र ज्ञानानंद, मातंग आसन पावे॥ गना॥४॥ छति॥

॥पदपन्नरमुं॥

॥राग सोरठ॥ दीपक होत उजियारो॥ए॥ टेक॥ जिन दीपक मंदिर अंधियारो, कैसें करे उ
जियारो॥दी०॥१॥घोर घटायें रयण अंधारी, भ्रम न पदारथ सारो॥दी०॥२॥ भ्रम योगें
अशुद्ध परिणति, बिन गुण दीपकी सारो॥दी०॥
३॥ बिन दिपक चेतन भयो पशु पर, स्वभाव
विभाव सधारो॥दी०॥४॥ सब जग तप ज
प किरिया विरथा, आतम अनुभव धारो ग
दी०॥५॥ बिन अनुभव अंधक नर ढूंढत, अ
नुभव दीप उजारो॥ दी०॥६॥ तातें अवधूत
त ठकुराणी, ज्ञेय ज्ञान सुविचारो॥दी०॥७
॥तेहथी निधि चारित रिधि पामी, ज्ञाना
नंद निहारो॥दी०॥८॥ इति॥

॥पद शोळमुं॥

॥राग सोरठ॥ प्यारी नेह लगारो॥

प्या०॥टेर॥ जिन प्यारी घर घरमें लटकत,
अपर लाय देमारो॥ प्या०॥१॥ कुमति योगें
च्यार नगरमें, विविध रूप विसतारो॥ प्या०॥
२॥ पांच जतन वेस पहरायो, जिन प्यारी
जिन हारो॥ प्या०॥३॥ तेवीस विषयके हदमे
नाखी, पाप थान विसरारो॥ प्या०॥४॥ हा
स्यादिक चल शेरे घेरयो, जिन सुध बुध
बिसरारो॥ प्या०॥५॥ तिनतें प्यारी युत लि
धि चारित, ज्ञानानंद लहे सारो॥ प्या०॥६॥

॥पद सत्तरमुं॥

॥राग॥ चइवा॥ अेक समीरज सहर जनाहु
अदभूत पंथे जाबर तजाहु॥ अे॥टेर॥ दस
मारग दसही दरवाजे, चारी आसा चांउं नगर
बिराजै॥ अे॥१॥ नेवीस वसंत जिहां नित
प्रति दीपे, सेत सेत सज नगकुं जीपे॥ अे॥

आना आना ओकही भाखें, अेक विना रहे अगारवि
चालें॥अे०॥३॥अेक द्रव्य गत नित्य अनित्यें, घट
पट भाव वसे सब चित्तें॥अे०॥ निन दिन सघलो
बोल गमावे, तो निधि चारित्र ज्ञान निपावे॥अे
०॥४॥ ईति॥

॥पद अढारमुं॥

॥राग वईया॥ गुरु गम अतुल शोधी धारो,
ईस पदको निर्वाह विचारो॥गु०॥टेक॥ सरव सम
चरवि ढेचि उर लीना, चिविय स्वापद युत गहन
विलिना॥गु०॥१॥ला मिरगा निरभय वन राजन,
नित प्रति रहे अखंड समाजन॥गु०॥ निर्दय निरवै
री गण मारे, मास विना नहीं जे जिन आरे॥गु०
॥२॥ पखी हरिजन परमुख लेया, पिण मिरगा न
वि वस किया सोया॥गु०॥ तेहने पिन मिरग जिन
राज कीया, इन समरथ वस करने सीया॥गु०॥३॥

अमर जिह्ण हरखें लग धारे, मरन ज्ञवन नहि जे
हुं साखे॥गुणार्ठग हीन हरिथी नपुंसक भयो, अ
नंत वली पिण नहिं तो लायो॥गुंणा॥भा अैसहि घा
नें भिरूगने मारखो; ऊठी रवनो रान सुथा रयो॥गु०
॥तय निधि चारित्र कमला संगें, लहै निर्मल ज्ञा
ना नंद रंगें॥गुणा॥पा॥छनि॥

॥पद जोगणी राग्नुं॥

॥राग जंगला॥ ज्ञान विचारोरे ल्याधे गुरु
गम शैली अंतर संतो॥ ज्ञाना॥ रेआ॥ गगन मंडल
गत विविघतुर घुली, घोर स्वरें करवा लेगा पाथो रण
जिन घना घन बरसे, गिरीषम ताप समा लेगा ज्ञाना
॥शा याभें रहत अतासा डोरा, वलर गले छगता
नो॥ वासर बिन अरुण प्रल भासै, तेजे अल हल
भाने॥ ज्ञाना॥शा मानस नाहिं लिम मानस मे
ला, निरंजन लहे आनंदें॥ निधि चारित ज्ञानानं

ध्येमें, रमण करे सुख केहा॥ज्ञा०॥५॥ इति॥

॥पचवीशमुं॥

॥राग कंगलो॥ ध्यान विचारो सांई. अरूप
र अनुभव प्रीत लगासी॥ध्या०॥टेक॥ क्षपक श्रेणी
ये थेंपाथेगल, झलक या सचहसी॥ घन घन घ
रसत तरनी पूरे, आपो आप वहासी॥ध्या०॥१॥
तातें अचयू चारने चरव, निवसास् जतलावो॥
चार पांचे सपि वरगे फिलमिल, मोकु फिरहय ला
वो॥ध्या०॥२॥ अष्ट दस विध लोकन निमो, तिरि
येणी क्लक्लांगो॥ पच्छिम पाव ऽ साला मारग, आ
रणिधाडो सांगो॥ध्या०॥३॥ विविध चारित्र धनि सां
भल निरखे, मुगताफल तडुसांगो॥ तवनिधि चारित्र
ज्ञानानंद, नाचे हरखे लरांगो॥ध्या०॥४॥ इति॥

॥पचछवीशमुं॥

॥राग तिलानो॥ लगी यासें चारी दीनी

हो, ज्ञान दिनंद्या ॥ जेता॥ रेखा॥ ज्ञान दिनंद त्रिभुवन वन्द्यंदा, तटनी तर नियसंदा, जरम लायक छोर घरंदा, घाती नसम दिपंदा ॥ जेता॥ साहिर सांत दृढ आसन धारी, सुंनिज परिणति नायी पद्मे य मस्ताला प्रेम ॥ प्याला, योगनीद लय साधीण जे ॥ तात्त्व विचार नरावधारी, अनहद धुनि चित्त आ ॥ निधि धारित सुख सेजे प्यारी, ज्ञानानंद भरपूर ॥ जेता॥ आरती॥

॥पद अठावीशमुं॥

॥राग तिलक नाला॥ गगने घन निरजानी

हो, हरंग अहानी॥ अगता॥ रेशा॥ निहां शुचि छंग अभिनर निरखानी, परमानंद निसानी॥ नट मुग ता झल नई सोत्मानी, मृग झूल सो ॥ न ॥ नी हो॥ ॥ अगता॥ हे योगी जे स्थां ध्यानी, गतागति ॥ छेन ॥ नी॥ गरजास्थ चपला दुति मानी, झिर

मिरचरसे पानी हो॥ कि॥३॥ सुगुरुं आया मोती पानी, अजरामर हरम्पानी॥ निगुरें मूंज तिरिया परि मलानी, नहिं पावे गुण जानी हो॥ हे॥४॥ आपहिं तिरवे आपहिं जानी, आगल डुहाजेमानी॥ निधि संयम ज्ञान नंदयोगी, अभियसरहे सफलानी हो॥ कि॥५॥ इति

॥पद छवीशमुं॥

॥राग मल्हार॥ पिउ मेरा निज घर आवे रे॥ पि॥ टेक॥ वालम तुम लागी कुटिला निसिदिन, परघर घर लटकावे॥ मान परें निर्लज्ज गुण जाहर, रंकभाव दिखलावे रे॥ पि॥१॥ उपन जोर निज घरमें वालम, चन ओठार घरावे॥ सो लेंहु तुम मुझ साथें लोगो, जिम मन चंकित पावे रे॥ पि॥२॥ राज सांभल मोह नृप हुनसें, थाशे बहुत असाजा॥ पिउ तातें कुटिला

संगचरणे, घरमें बैसो स्थिताजिा पिं०।।३।।
ऐसती सांभल या मुज घरनी, निहचै तेहने
भनी।।निधि संयम ते वाली धारी, ज्ञानानंद
विलसानी।।पिं०।।४।।इति।।

।।पद ४९ मुं।।

।।राग मल्हार।। मेरीतुं मेरी ज्ञान डेरा।।मे०
।।टेक।। मेरी प्यारी गुण गण भूषित, हिरदय हा
रपरे।।तुज विन नांहि रहुं छिण ठामें, जिम शि
व सगति पेरे रे।।मे०।।१।। ऐम पियु वाणी सांभ
ल महिषी, परम परमोद वहै।। दंपति मिल जरसें
जे जैसें, अंतर तत्त्व गहे रे।।मे०।।२।। अंगो अंग
इरसन उर प्रेमें, घन मुगति कुं वर सावै।। तत्वनि
धि संयम ज्ञानानंद, शीतलभाव निपावे रे।।मे०।।३।।

।।पद ५० मुं।।

।।राग गोडी।।निरुघन ज्ञान गमावे संतो।।

निळणा टेक॥ जो जे आड जंबूलडे तैनें, आंब
रुहांसें जायो॥ वेसू पीलत तेल नजीडलें, भूरज
लग रुहा जावो॥ सं०॥२॥ जो पी रुणिधर रिभुता
नपामे, तिम लडयंस निहालो॥ खेलडी गांठेर
सलवि पामे, पेंलन सेतल लालो॥ सं०॥३॥ अ
नुपम दूधें साप पिलावें. हालाहल होय लवो॥
घनथी पिन मगसिल नवि लीजे, निंबड म
धुता न पावे॥ सं०॥४॥ अेह विचार करी लाघसं
तो, लिधि चारित्र रमावो॥ तव ज्ञानानंद पदक
नुलवतां, डमला सफलनीपावो॥ सं०॥४॥ इति

॥पदछवीशमुं॥

॥राग गोडी॥ तन मय सदागम सेवो॥

आजयूतिकणा टेक॥ लग सदागम सेवन
नांहि, पम पतें जपरेवो॥ रतन पुंज पाहन
सुत लने, चंदन छंधन सम देवो॥ अं०॥१॥

मोटे मोटे पाकुन तईयार, रतन थेछन दिखला
वे।।रास्तल कूतर हय गज मोसें, लेवे ते मूढ क
हावै।।अ०।।२।। रतन उजल चल उल पीवर सम,
थेवेण घृत पूरमाने।। सकल वसतु ऐंश मोलपे
जावै, थोर सारे नवि छने।।अ०।।३।। अन्य
थपूर ळनपटमें रहकर, क्युंकर लाल गमावे।।
ते हथी निळघर संयम आदर, ज्ञानानंद र
मावे।।अ०।।४।। इति।।

।।पद सत्तावीशमुं।।

।।राग जिहला।। हठ कसान संगवारो।।

संतो।। ह०।। टेक।। पवन वेग निळ हय पर चे
ढकर, कुंत कृपाण धारयारो।। कूतरा कूतरी दस्सी
हनकर, वज्रें नूपर पाळो।।सं०।।१।। विषहर
अमृत पान संयोगें, निर्विष भाव वधारो।।
सहाजाम संयम घरनृप आता, निजिल

पुरें वरतारेोासंगारा। कलगतीनो ह३कमारे,
दरशन नाण न पावेो।।ते ह विना संयम पिण नांहिं,
साध्य सिद्धि किम लावेो।।सं०।।७।। साधक सुलसा
धन नवि पामे, तेहथी ह३ निवारोो।।लिधि संयंम
ज्ञानानंद अनुलव; परमानंद सुज धारेो।।सं०।।८।।

।।पद अठ्ठावीशमुं।।

।।राग जिहागा।। ह३ श्रान संग नावो।।अथू
।। ह०।।टेक।।जिम बिम बिर्मल घनाघन वरसे, भांहिं
नव पल्लवरखेो।।जिम तिम ह३ जिय वायु विकारें, अ
हनिस ह३ सरावेो।।ह०।।१।। काली कुतरी पणछे
तेहवी, सरिखेो संग मिलायेो।।निज मति संगोंकि
रियर पेढियो, काति संगति ठलायेो।।ह०।।२।।नृप
जिन नृप बिलि ते पसावे, कग कन मान न मावे।।
तेहने गुरु कन हित बतलावे, तोपिन ध्यान न क
नेो।।ह०।।३।। ह३ ह३ जकु डसे कग कन से, न

गहें अमलरस गायो सन्मुख विहायें पाहन ना
जे, पोतें अशुचि तरायो॥ अ०॥३॥ पंज पातीसु
ति निति विलोपी, यामना रामना पठावो॥ तेहथी
निधिसंयम ज्ञानानंद, सुधारस अनुभव पायो॥
अ०॥५॥ इति॥

॥पद ओगणचीशमुं॥

॥राग कल्याण॥ ऐसी तुं कली उडाइ, संतो॥
ऐ०॥टेक॥ ममता सूतरडो लेकर, तृष्णा मांज लगा
इ॥ सं०॥१॥ कुतूहल रंग विरंगी तुकली, मूर्छा तीली
सुहाइ॥ विविध माया धनुष लगाके, लटकन मिथ्या
लहाइ॥ सं०॥२॥ कुटिल प्रवृत्ति पवन वस्तें, गगनें शो
षवधाइ॥ मोह लेकर डोर लीनी, नयन विषय पर धाइ॥
सं०॥३॥ झपत झपत आपवश गजे, परभावें हरेजाइ॥
तिनतें ज्ञानानंद नव लिखि, ऐसी संयम लाइ॥ सं०॥४॥

॥पद चालीशमुं॥

॥राग कल्याण॥ जैसा पतंग पढाई, संतो ॥ जैसा ॥टेक॥ ध्यान पतंग वर ज्ञान चिमिन, संयम डोरी लगाई॥ संतो॥ मेरु दंड पदमासन घर उर, भेचरी मुद्रा धारी॥ सूक्षम पवन गगन मंडल गत, दृष्टि पतंग पर सारी॥ संतो॥ गुणश्रेणी गत ओष्ट दालो, अप्रमत्त भाव वधारी॥ सकल प रथकत थिति थय, लग लख सूर विचारी॥ संतो॥ सकल पर शिथि आप संतो, वीर प्रमोद लखाया॥ ज्ञानानंद नय निधि संयम, नाचै निरभय रंग छाया॥ संतो॥ जैसा॥ इति॥

॥पद अकत्रीशमुं॥

॥राग झींझोटी लावणी॥ अनुभव रस गत माती रंग राती॥ अ॥टेक॥ गगन मंडल गत छग अमिसरवर, निरंजन भ्रमर ल्याली पर तानट छग मुगता फूल तडेवर, निकलंक फूल झूल

त्यातीा रंगा॥२॥ मुगतकु अभिलख गावत पीव
त, रंग खुमार घुमातीा रंगा अहनिशि शशि
रवि करत विकाश, दुर्धर तिमिर हरतीा रंगा॥२
॥ अनहद धुनि संग शंकर नाचे, निस्पृह भा
व रमातीा रंगा निधि चारित्र ज्ञानानंद रंगें,
गावत नाटक रातीा रंगा॥३॥ पूर्णता॥

॥पद छत्रीशमुं॥

॥राग झिंझोटी लगाता॥ विरथा जनम गं
माया, योग न लाया॥ विंगा टेका॥ जगमें पहेले
हम ही जनमे, मात जनक पछे आया॥ विंगा
मामा मामी नाना नानी, पछे गुरु लार्ड रमा
या॥ विंगा॥१॥ जग समझन या कुम समझाई,
मा मन नांही रमाया॥ विंगा चेलेने निज गुरु
जनमाया, गुरुने शीस भनाया॥ विंगा॥२॥ पहेले
योगी पाछे भोगी, अनादि अनंत भोगाया॥

आपहिं मात जनक गुरु पेला, जगमांही जरम
या ॥ पि०॥३॥ पाहन वाहन जैसी थूरे, अंधो
अंध मिलायो ॥ पि०॥ तिनतें संतो बिधि संय
मयुत, ज्ञानानंद सुहायो ॥ पि०॥ ४॥ इति ॥

॥ पद तेत्रीशमुं ॥

॥ राग पोजकां ॥ वालमियारे विरथा जनम गमायो
॥ टेक ॥ पर संगतकर दसदिसि भटको, परसें प्रेम लगा
यो ॥ परसें जयो पररंग लायो, परकुं लोग लगायो ॥
॥ विगा०॥ माटी खाना माटी पीना माटी में रम जना
॥ माटी पीवर माटी भूजन, माटी रंगसो लीना ॥ वपवि
॥ २॥ परदेशीसें नातरा कीना, मायामें लपटाना ॥ बिधि
संयम ज्ञानानंद अनुभव, गुरुबिन नांहि पहानां ॥ वपवि०
॥ ३॥ इति ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ राग पोजकां ॥ योगियारे गुरु बिन ज्ञा

न नलाया ॥ टेक ॥ दुर्धर केसरी बकरी लाई,
बकरी बाघ बंधाया ॥ बकरी चहुटे बाघ न
पावे, देखे लन हरषाया ॥ रो० ॥ गु० ॥ १ ॥ चातुरि
य वेग हय चाबुक योगें, नाग कुटुंब डसाया
॥ समय अनादि ऐतबीत लरके, मम ज्ञायें
लरमाया ॥ रो० ॥ गु० ॥ २ ॥ जिन लर ज्ञानकी या
तन लनी, अनुभव वासन लाया ॥ गुरु
किरिया संयम ज्ञानानंद, चरण कमल त
परायो ॥ रो० ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ अपरव एक नगर गत
आयो, ज्ञानी गुरु बतलायो ॥ टेक ॥ त्रिभुव
नमें एक बाल कुमारी, जिसह सति कहला
यो ॥ अ० ॥ १ ॥ जिन घरमां ऐग पलमें
निपजे, नंदन तिन सुत दायी ॥ अ० ॥ रूप

अनूप प्यार दीक्षी, ते पिन योगल अर्थ जो॥अ०॥२॥ अहो जनक ते वल्लभ तेहना, मात पिता अ गनया जो॥ ते ज्या चिदानंद परनी, योगी भाव रमाया जो॥अ०॥३॥ सेजे दोउ अनुभव रंगें, अहनिसि प्रेम जगाया जो॥ निधि संयम ज्ञानानंद योगी, सुद्ध किरिया दरसाया जो॥ अ०॥४॥ इति॥

॥पद छत्तीसमुं॥

॥राग वसंत॥ विविध तूर धुनि नभ मंडल गत, ज्ञानी मुनि हिंजलाया जो॥टेक॥ प्रथम विह घन सुषिर तत वितत, घोर सरें संभलाया जो॥वि०॥१॥ चंद सूरज परकास सुभावें, योगी साधन साधना जो॥ अनुभव तत्त्वस्तु ज्ञान कुमारी, उजहुन ठीत रे आराधना जो॥वि०॥२॥ तूर जहिं पन तूर धनि सुन, नव निधि सहज निपाया जो॥ संयम ज्ञा-नानंद सहे तव, नाचै हसे हरखाया जो॥ वि०॥३॥

॥पद छब्बीशमुं॥

॥राग झिंझोटी॥रहो जंगले में वालम अजे तो हे रा॥टेक॥निज परिणति अ अनु पम जंगला, संयम और सुगा॥रहो०॥चरण करण संपत्ति अंगुरा, अनंत विरज थंभ सा॥रहो०॥शीतल भूमि पर निर्भय सोवो, निरवेद परम पद ला॥रहो०॥विविध तत्त्व विचार सुजरो, ज्ञान दरस सुगति ला॥रहो०॥ अहनिस रवि शशि करत विकासा, सलील अमीरस पा॥रहो०॥विविध तूर धुनि सांभल वालम, स्वाद अवगा॥रहो०॥३॥ ध्येय ध्यान लय यहीहै कुमारी, उतरे कजहु न रामी॥रहो०॥सुन जिधि संयम धरनी वाचा, ज्ञानानंद सुज धामी॥रहो०॥४॥इति॥

॥इतिश्री संयम तरंग संपूर्ण॥

अथ

॥श्रीजशोविजयजी कृत आनंदघन जीनी स्तुतिरूप अष्टपदी॥

प्रारंभः॥

॥पद पहेलुं॥

॥राग कानडो॥ मारग चलत चलत गात, आ नंदघन प्यारो॥ रहत आनंदभरपूर॥मा०॥ ताको स्वरूप भूप, त्रिहुं लोकथें न्यारो॥ बरखत मु ख पर नूर॥मा०॥१॥ सुमति सखीके संग, नित नित दोरत॥ कबहु न होत ही दूर॥ जशविजय क हे सुनोहो आनंदघन, हम तुम मिले हजूर॥मा०॥ ॥२॥ इति॥

॥पद बीजुं॥

॥ आनंदघनको आनंद, सुजशही गावत

ता॥ रहत आनंद सुमता संगा॥ आनं०॥ सुम
ति सखी और नवल आनंदघन, मिल रहे गं
ग तरंगा॥ आनं०॥१॥ मन मंजन करके निर्मल की
यो हे चित्त, तापर लगायोहे अविहड रंगा॥ जस
विजय कहे सुनत ही देखो, सुख पायो जोत अ
भंगा॥ आनं०॥२॥ इति॥

॥पद त्रीजुं॥

॥राग नायकी ताल चपक॥ आनंद कोउ
नहीं पावे, जोई पावे सोई आनंदघन ध्यावे॥
आ०॥ आनंद कोन रूप कोन आनंदघन, आनंद
गुण कोन लखावे॥ आ०॥१॥ सहज संतोष आ
नंद गुण प्रगटत, सब दुविधा मिट जावे॥ जस
कहे सोही आनंदघन पावत, अंतर ज्योत
जगावे॥ आ०॥२॥ इति॥

॥पद चोथुं॥

॥राग ताल रूपक॥ आनंद ठोर ठोर नहिं पा
या, आनंद आनंद में समाया॥ आ॰॥ रति अ
रति दोउ संग लीय वरजित, अरथ ने हाथ तप
या॥ आ॰॥१॥ कोउ आनंदघन छिद्रही पेखत,
जसराय संग चडी आया॥ आनंदघन आनंद
रस झीलत, देखतही जस गुण गाया॥ आ॰॥२

॥पद पांचमुं॥

॥राग नायकी॥ आनंद कोउ हम देखलावो,
आ॰॥ कहां ढूंढत तुं मूरख पंछी ॥ आनंद
हाट न वेचावो॥ आ॰॥१॥ ऐसी दशा आनंद
सम प्रगटत, ता सुख अलख लखावो॥ जोइ पा
वे सोइ कछु न कहावत, सुजस गावत ताको वधा
वो॥ अ॰॥२॥ इति॥

॥पद छठुं॥

॥राग कानडो ताल रूपक॥ आनंदकी गत

आनंदघन भगो॥आ०॥वा० मुज सफल ज
यल अलोज पद, वा मुज सुभरस जोजानो॥आ०
॥१॥ सुभरस विलास भज प्रगटे आनंदरस, आ
नंद अक्षय भरनो॥आ०॥२॥ ऐसी दशा भ
ज प्रगटे चित्त अंतर, सोहि आनंदघन पिछानो॥
आ०॥३॥ इति॥

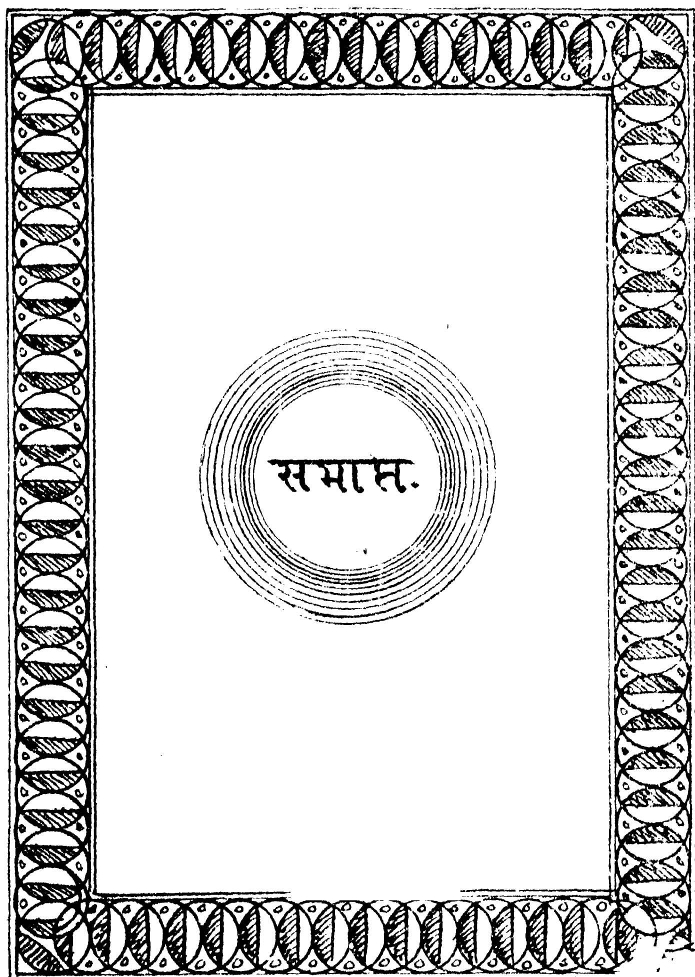
॥पद सातमुं॥

॥ऐरी आज आनंद भयो मेरो तेरो-
मुज निरज निरंज रोम रोम शीतल भयो अं
गो अंग॥ऐरी०॥१॥ शुध्य समकल समता
रस झलत, आनंदघन भयो अनंत रंग॥ऐ
री०॥२॥ ऐसी आनंद दशा प्रगटी चित्त अं
तर, ताको प्रभाव चलत निरमल गंगा वाही
गंग समता दोउ मिल रहे, भस विलय झल
त ताके संग॥ ऐरी०॥३॥ इति॥

॥पद आठमुं॥

॥राग जलगेलाजा॥ आनंदघनके संग सुजससहीमिले जब, तब आनंदसम भयो सुजस, पारस संग लोहा जो फरसत, कंचन होतहीताके कसा॥आ०॥१॥ खीर नीर जो मिलरहे आनंद, जस सुमति सखीके संग॥भ योहे एकरस, भव खपाई सुजस विलासा॥ भये सिद्धस्वरूप लीये धस भसा॥आ०॥२॥ इतिश्रीजसोविजयजी कृत आनंदघनजी नी स्तुति रूप अष्टपदी संपूर्णं॥

।इति श्री रसविलासत
था विनयविलास अनेक्षा
न विलासाख्य राग माला
समाप्तः।।


समाप्त.